सद्बोधशतकम्

[वैरागी राजानो वारसो]

संग्राहक

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर



नवजीवन कार्यालय

अमदावाद

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथावलि पु० २०

सद्बोधशतकम्

[वैरागी राजानो वारसो]

संग्राहक

दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम्?

[लोकहृदयने जीते एवी कविता रचवानी शक्ति होय तो पछी राजसत्ता भोगववानी शी जरूर?]



नवजीवन कार्यालय

अमदावाद

मुद्रक अने प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अमदावाद

प्रथम आवृत्ति, प्रत २,०००

बार आना

डिसेम्बर, १९४१

भर्तृहरिनी विभूति

१

मध्यकालीन वैरागी राजा भर्तृहरि आपणी भारतीय संस्कृतिनो एक खास प्रतिनिधि छे. एनो इतिहास क्यांय मळतो नथी, पण दंतकथामां अने लोकगीतोमां एणे सारुं सरखुं नाम मेळव्युं छे. जो तमे हिंदुस्ताननी मुसाफरी तीर्थयात्रानी, एटले के संस्कृतिनी, दृष्टिए करो तो अनेक ठेकाणे तमने भर्तृहरिनी गुफाओ बताववामां आवशे. आ ठेकाणे भर्तृहरिए तप कर्युं, आ ठेकाणे एमणे फलाणो चमत्कार करी बताव्यो, वगेरे परंपरागत अथवा जोडी काढेली हकीकत कहेनारा लोको तमने अनेक ठेकाणे मळशे.

भर्तृहरिने नामे चढेला अनेक ग्रंथो छे. पण भर्तृहरिनुं नाम लेतांवेंत एनां नीति, शृंगार अने वैराग्य ए त्रण शतको ज खास ध्यानमां आवे छे.

भर्तृहरिना व्यक्तिगत जीवन विषे पण आपणी पासे झाझी हकीकत नथी. भर्तृहरि राजा हतो अथवा उज्जयिनीना राजा विक्रमनो नानो अथवा मोटो भाई हतो. ए मोटो भाई होय तो एने राज्यनो लोभ न हतो. एणे पोताना भाईने राज्य सोंपी दई पोते वैराग्यनो मार्ग लीधो. नाथ-संप्रदायमां भळी जई हठयोग, रसविद्या, मंत्रविद्या आदि

अद्‌भुत सिद्धिओ प्राप्त करी आपनारी विद्याओनो एणे अभ्यास कर्यो; महादेवनी अने वेदान्तविद्यानी उपासना करवाथी हिमालयमां गंगाने किनारे एने परम शान्ति मळी; अने अन्ते ते परब्रह्ममां लीन थयो; आटली ज बीना आपणी पासे छे.

भर्तृहरि ज्यारे राजविलास भोगवता हता त्यारे पोतानी राणी पिंगला उपर अनहद आशक हता. पण राणीनुं मन राजा उपर न हतुं, पण बीजे हतुं. ए माणसनुं मन राणी उपर न हतुं पण कोई दासी उपर हतुं; अने ए दासी मनथी राजा पर आशक हती. एवी स्थितिमां एक संन्यासीए राजाने अमृतफळ आप्युं. राजाए पोते खाईने अमर थवाने बदले ए फळ वहाली राणीने आप्युं. उपर बतावेला कारणे ए फळ फरतुं फरतुं फरी राजा पासे आव्युं. एटले राजानो भ्रम भांग्यो. एनी स्त्रैण आसक्ति नष्ट थई अने एणे वैराग्य सेवन कर्युं अने पेला फळनो नाश कर्यो. एवी एक वार्ता हिंदुस्ताननां बधा प्रांतोमां प्रचलित छे. पेलुं अमृतफळ कोईए खाधुं होत तो साचो बनाव आपणने कहेवा ए व्यक्ति जीवती होत. पण तेम न थवाथी केवळ उपरनी दंतकथा अथवा किंवदन्ती ज अमर थई शकी. भर्तृहरि जे नाथसंप्रदायनी परंपराना हता ए संप्रदायना साहित्यमां उपरनी वार्ता क्यांय जडती नथी. अमने लागे छे के भर्तृहरिना वैराग्यबोधक एवा एक श्लोक उपरथी लोकोए ए वात पाछळथी योजी काढी हशे.

अने एम थवानुं कारण पण समजाय एवुं छे. भर्तृहरिने एक एक श्लोकमां एकाद सुंदर वार्ता अथवा प्रसंग गोठवी देवानी टेव छे अने ए कळामां एणे असाधारण सफळता पण मेळवी छे. 'जेना माथामां टाल पडी हती एवो एक अभागियो आरामने अर्थे ताडना झाड तळे पहोंच्यो, त्यां एना दुर्दैवे उपरथी एक ताडनुं फळ अचूक एना माथा पर पड्युं अने ए मरण पाम्यो.' 'पाणीमां दूध भळ्युं, तेने दूर करवा देवताए घणो प्रयास कर्यो पण ए बे वच्चेनी मित्राचारी तूटी नहि.' 'एक सर्प पेटीमां घणा दिवसथी पुरायो हतो, त्यां एक उंदरने दुर्बुद्धि सूझी के चालो आपणे आ पेटीने काणुं पाडीने अंदर जई जोईए. एणे तेम कर्युं. पछी शुं ? भूख्या सर्पने उजाणी मळी अने बहार जवानो रस्तो पण मळ्यो.' एवी एवी रसिक वार्ताओ ओछामां ओछा शब्दोमां व्यक्त करवानो भर्तृहरिने होंश होय छे. उपर कहेली वात आमांनी ज एक होई शके. ते प्रथम-पुरुषी छे एटला उपरथी ज तेने भर्तृहरिनी जीवनकथा मानवामां आवी हशे. लोकहृदयने आवी वातो सांभळवानो अने कहेवानो शोख होय छे, एटले एना उपर कोई विश्वास राखे के न राखे, पण ए जगबत्रीशीए तो चडवानी ज.

एक ठेकाणे एम पण कह्युं छे के राजा भर्तृहरिए अनेक वार संन्यास लीधो हतो. ए वात जो साची मानीए तो एनो अर्थ ए थाय छे के संन्यास लीधा पछी भर्तृहरि पाछा गृहस्थाश्रममां आव्या हता. बौद्ध लोकोमां आम

करवानी छूट होय छे. हिंदुधर्ममां आवी पाछी पानी करवी महापाप गणायुं छे.

भर्तृहरिनी कविता वांचतां एवो ख्याल नथी आवतो के आ कोई राजा लखे छे. राजा लखे ते राजानी भूमिका उपर रहीने लखे, अथवा जो बीजी कोई भूमिका धारण करीने लखे, तोय तेमां राजत्व तो झळकी ऊठे ज. अहीं राजाना वैभवनी अदेखाई करनार अने त्यां खंडित थवाथी राजवैभवनो तिरस्कार करनार कोई पंडित बोलतो होय एम ज लागे छे. एनी उपमाओ अने एनां रूपको, एनी आशाओ अने एनी आकांक्षाओ, बधी सामान्य जनतानी कोटिनी छे.

जूना वखतमां केटलाक लोको सरस कविताओ लखी ते राजाने नामे चडावी देता -- आजे पण देता हशे -- अने राजा पासेथी घणुं धन मेळवी एनां गुणगान गाता रहेता. अहीं एवो ज कोई राजदरबारमां निराश थयेलो खंडित पंडित 'शाकाय वा स्यात्, लवणाय वा स्यात्' कहीने पाछो फरतो होय एवो ज आभास थाय छे.

पण आम राजत्वने उतारी पाडनार कविता कीर्तिनो लोभी कोई राजा पोताने नामे चडवा नहि दे अने साचा राजाने वारेघडीए अचूक दरबारी पंडितनी ज भूमिका उपर जवानुं न गमे. त्यारे साची बीना शी हशे?

केटलाक लोको एम पण माने छे के आ बधा श्लोको भर्तृहरिए अथवा कोई एक माणसे लखेला नथी;

पण संस्कृत साहित्यमांथी भर्तृहरिए वीणी काढेलां सुभाषितो ज छे. त्रणे शतकमां आवेला श्लोको छूटा-छवाया छे ए विषे शंका नथी. एमां कोई सळंगसूत्र विवेचन अथवा भूमिकानो विकास गोठवेलो नथी ए वात साची छे. पण तेटला परथी एक या बीजुं कोई चोक्कस अनुमान काढी शकाय नहि. एम तो जगन्नाथ पंडितना 'भामिनीविलास'ना श्लोको पण छूटाछवाया ज छे. कोई टीकाकार एमां सळंगसूत्रनी योजना ठोकी बेसाडवानो प्रयत्न करे छे, त्यारे ते प्रयत्न ज छे एम सहेजे देखाई आवे छे.

आ त्रणे शतकोनी शैली अने विचारधारा जोतां ते एक ज व्यक्तिनुं लखाण छे एम मानवामां वांधो नथी आवतो. आमां विचारोनुं असामंजस्य क्यांय नथी देखातुं. शैलीमां पण शाल साथे कांबळो सीवी काढ्या जेवुं क्यांय नथी लागतुं. आन्तरिक एकताने कारणे होय अथवा लांबा वखतनी परंपराने कारणे होय, आ शतकोनो कर्ता एक ज छे अने ते पण एक कसायेलो संस्कारधन कवि छे, ए विषे शंका नथी रहेती.

बीजी बाजुए, आमांना एक बे श्लोको कालिदासनां नाटकोमां पण मळे छे. 'भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः' जेवो श्लोक कालिदासनी शैलीमां पण एटलो ज भळी शके छे. 'अनाघ्रातं पुष्पं' ए श्लोक पण बन्ने कविओनी शैलीमां शोभे एवो छे. अने कालिदास, भास आदि कविओए बीजा

कोईना श्लोको पोतानी कृतिमां वापर्यानो पुरावो नथी. भर्तृहरिनां शतकोमां पाछळथी केटलाक लोकोए होंशे होंशे प्रक्षेप उमेर्या होय तो आश्चर्य नथी. पण काश्मीरना महाकवि क्षेमेन्द्रे पोताना 'औचित्यविचारचर्चा' नामना ग्रंथमां जे अन्य कविओना संख्याबंध श्लोको टांक्या छे, तेमांना केटलाक भर्तृहरिनां शतकोमां मळे छे. ए बधा ज अहीं के त्यां प्रक्षिप्त छे एम सिद्ध करतां कंईक अगवड पडे एम छे. दशरूपक, पंचतंत्र, शार्ङ्गधरपद्धति वगेरे ग्रंथोमां भर्तृहरिना श्लोको जई शके छे. पण मृच्छकटिक अने मुद्राराक्षस जेवां नाटकोमां भर्तृहरिना श्लोको ते ते कविओ वापरे ए शक्य नथी लागतुं. आ बधा कविओना काळनो निर्णय करीने पछी प्रक्षेपोनुं महामंथन कर्युं होय तो ज कंईक निवेडो आवे.

भर्तृहरिना काळ विषे न्यायमूर्ति तलंगे तेम ज बीजा विद्वानोए घणुं लख्युं छे. विज्ञानशतक आदि अन्य कृतिओ भर्तृहरिनी केम न गणाय तेनी चर्चा पण थई छे. पण भर्तृहरि खरेखर राजा हतो के केम, अथवा राजवंशी पण हतो के नहि, ए विषे हजु कोईए शंका उठावी नथी.

भर्तृहरि विषे अत्यार सुधी जे चर्चा थई छे ते घणी उपयोगी छे ए विषे शंका नथी. पण भर्तृहरिनां शतकोमां जे धार्मिक तत्त्वज्ञान अथवा दर्शन देखाई आवे छे तेनो, अने समाजव्यवस्थानुं जे प्रतिबिंब पडेलुं छे तेनो, विचार करी तेना काळनो चितार चीतरवानुं हजी बाकी ज छे.

एटलुं तो स्पष्ट छे के भर्तृहरिनो काळ कोई महा-साम्राज्यनो काळ नथी. नाना नाना राजाओ नानां नानां राज्यो हांकता हशे, अने अरसपरस अदेखाई करी पोतानुं अलूणुं जीवन खाटुंमीठुं के तीखुं तमतमतुं करता हशे. अशोकना शिलालेखोमां जे जातनी राज्यव्यवस्था जणाई आवे छे अथवा चाणक्यना अर्थशास्त्रमां जे राजत्वनो आदर्श विकसेलो देखाय छे, तेनो पडघो आ शतकोमां देखातो नथी.

टीकाकारो सामान्यपणे नीति, शृंगार अने वैराग्य ए त्रणेनो क्रम भारतीय जीवनना आदर्शने क्रमे गोठवे छे. कुमारअवस्थामां ब्रह्मचर्यनुं पालन करी विद्याभ्यास करवानो होय छे तथा लोकजीवन साथे परिचय केळववानो होय छे. ए ज वखत एवो छे के ज्यारे नीतिनो पायो दृढ करी शकाय. पछी ज्यारे यौवन पूर जोसमां खीले छे त्यारे ए चार दिवसना चांदरणानो पूरो उपयोग करी शृंगाररसमां राची लीधा पछी भोगमय जीवननी व्यर्थता मन उपर ठसाववा माटे वैराग्य केळववानुं होय छे, जेथी 'अतुल परिताप'मांथी बची जई 'अनन्त शमसुख' मेळवी शकाय.

भर्तृहरिनी ए आखी शिखामण एटली तो आर्य-मान्य थई छे के ए शिखामणना काजी थवुं ए गीता के धम्मपदना काजी थवा समान छे. छतां आजनो जमानो आपणने कहे छे के, भर्तृहरिए सदाचार तरीके जे वस्तुओ शीखवी छे ते समाजहितनी दृष्टिए केटले अंशे पथ्यकर

छे एनी स्वतंत्र चर्चा थवी जोईए. ख्रिस्ती अंग्रेजोए लांबा वखत सुधी 'पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस'नो भक्तिनो आदर्श प्रमाण मान्यो, पण आजे हवे तेओ ए आदर्श केटलो अलूणो छे एनी चर्चा छडेचोक करे छे.

भर्तृहरि भिक्षानां वखाण करे छे, जंगलमां रही कंदमूळफळ उपर जीववानुं सूचवे छे. दैव अथवा नसीबनी मीमांसा पण एने वळगी ज छे. भर्तृहरिए दाम्पत्यजीवनने भावनाप्रधान चीतरवाने बदले भोगप्रधान बताव्युं छे; अने पतिपत्नीए मळीने कुटुंबसेवामां अने समाजसेवामां भळी जवामां मळता रसना घूंटडा लेवानो जे आदर्श स्मृतिओए मानवो आगळ मूक्यो हतो तेनो तो उल्लेख सरखो भर्तृहरिना शृंगारमां जणातो नथी. आ बधी वस्तुओनी आपणे फरी वार चिकित्सा करवी घटे छे.

एटलुं खरुं के शृंगार शतकनी भोगवृत्ति विलासी होवा छतां अनार्य नथी; ते यौवनोचित छे छतां उच्छृंखल नथी. नीतिना आदर्शने अवगणीने सामाजिक जीवननो पायो तोडी नाखनार उत्पथगामी विलास ए नथी. आपणे भूलवुं न जोईए के भर्तृहरिए जे उत्कटताथी शृंगार चीतर्यो छे तेटली ज सचोट समर्थ वाणीमां भोगमय जीवननुं वैय्यर्थ्य पण समजाव्युं छे. अने तेम करतां, एकाद दाखलो बाद करतां, कोई पण ठेकाणे जुगुप्सा उत्पन्न नथी करी; अने ज्यां एक बे ठेकाणे ए रस कविए जमाव्यो छे त्यां ए श्लोको ए रसना सारा नमूना तरीके जरूर टांकी शकाय तेवा थया छे.

हिंदु धर्मना अने हिन्दु सामाजिक जीवनना क्रमविकासनो इतिहास जगतना इतिहासनुं नानुंसूनुं प्रकरण नथी. जे दिवसे ए इतिहासनुं कार्यकारणभाव साथे संशोधन, संगठन अने रहस्योद्घाटन थशे ते दिवसे हिन्दुस्ताननो इतिहास अने आर्यसंस्कृतिनुं हार्द आपणी नजर आगळ सूर्यप्रकाश जेवां स्पष्ट थशे. क्रमविकासना ए इतिहासमां भर्तृहरिनां शतकोने पण अवश्य स्थान मळशे; कमके आ शतकोनी असर, गीतानी असर जेटली ज सार्वभौम थई छे.

जो चारित्र्यसंगठनने राष्ट्रीय केळवणीनुं एक अंग गणीए तो आ शतकोने राष्ट्रीय केळवणीना इतिहासमां पण मानभर्युं स्थान मळवानुं ज छे.

२

ध्यानपूर्वक जोतां स्पष्ट थशे के त्रणे शतको लखवामां भर्तृहरिने एक विशाळ अने प्रसन्न एवी जीवनदृष्टि केळववी छे, जीवनना आदर्श निश्चित अने लोकसुलभ बनाववो छे. आपणे जाणीए छीए के समाजमां नीतिना त्रण जुदा जुदा आदर्शो प्रवर्ते छे. गृहसंसारनो त्याग करी विरक्त रहेनारा अने आजीविकानी खटपटमांथी पण पोताने मुक्त राखनारा संतमहात्माओनो अने संन्यासी-यतिओनो एक आदर्श छे. ते ज प्रमाणे दुनियामां रही दुनियानी सामान्य सेवा करी दुनियादारीना गणाता जीवनमां सामान्य शील अने सदाचार खीलववानो जुदो आदर्श छे.

आ उपरांत आदर्शनो एक त्रीजो प्रकार छे, जेने वर्ण परत्वे बदलातो आबरूनो, सतनो अथवा सत्त्वना आदर्शनो स्वधर्म कही शकाय. ब्राह्मण युद्धमांथी नासी आवे तो एनुं सत जतुं नथी, पण जो ए तपोभ्रष्ट थाय तो एनुं सत गयुं. क्षत्रिय देवादार थाय तो ए शरमभरेलुं नथी मनातुं. पण ए लडाईमांथी नासी न आवी शके. दुनियाने ठगनार लूटनार चोरोमां पण अंदर अंदर प्रमाणिकपणुं जाळववानो एक आदर्श होय छे, जेना वगर चोरो पोतानुं संगठन करी ज न शके. विश्वइतिहासना लेखक श्री० एच. जी. वेल्से एवा व्यक्तिगत, वर्गगत अथवा वर्णपरत्वे नक्की थता आदर्शने माटे शब्द वापर्यो छे – persona. ए आदर्श सार्वभौम नथी गणातो. जाति परत्वे, स्थान परत्वे अने धंधा परत्वे ए अलग अलग होवाथी अमुक अंशे ए एकांगी होय छे. पण ए ज कारणे ए आदर्श स्वीकारनार लोकोमां एना पालन विषे असाधारण चीवट होय छे. संत-यतिनो आदर्श लोकोत्तर होवाथी सामान्य लोको एने लोकबाह्य गणे छे. समाज एवा आदर्शने पूजे छे पण एने अपनावतो नथी. सर्वसामान्य नीतिनो आदर्श बधे लगभग सरखो होय छे अने ए ज आदर्श मनुष्यजातिना विकासनो द्योतक गणाय. ज्यारे वर्णनो आदर्श ते ते जमातने ज वळगे छे.

भारतीय संस्कृतिमां आ त्रणे प्रकारना आदर्श सुंदर रीते खील्या छे. एक रीते एम कही शकाय के भारतीय

संस्कृतिनो ए एक विशेष छे. अने ए ज कारणे भारतीय नीतिमत्ता आ देशमां सर्वभौम थई छे अने ते एटला तो जमानाओ सुधी अखंडपणे चाली छे के एने आपणे सनातन धर्मने नामे ओळखता थया छीए.

भर्तृहरिनां जमानो धर्मप्रयोगोमां ताजो होवाथी भिक्षा उपर नभवाना दोषो लोकोना ध्यानमां आव्या न हता. आजे धर्मपरायण लोकोनुं घेर घेर भिक्षा मागीने जीववुं आपणे बिलकुल पसंद करता नथी, केम के ए जीवननो आपणा लोकोमां भयानक अतिरेक थयो छे. निवृत्त थईने वनवास सेववो ए अमुक परिस्थितिमां साधनारूपे आपणे भले पसंद करीए, अथवा जीवनना संध्याकाळमां वानप्रस्थने माटे भले ए आपणे राखी मूकीए, पण सार्वभौम नीतिमां अकर्मण्य निवृत्तिने तेम ज भिक्षाचर्याने आपणे तरछोडी काढवानुं ज नक्की कर्युं छे. दैववादमांथी त्याग, निश्चितता. अने क्षात्रवीर्य पेदा थवाने बदले अकर्मण्यता अने जडता ज पेदा थयां छे. एटले आपणे ए वादने पण तिलांजलि आप्ये ज छूटको.

भर्तृहरिनां शतकोमां जे वस्तु बहु देखाती नथी पण पाछळथी आपणा साहित्यमां जे घूसी छे एवी एक वस्तु ते नीतिशून्य चतुराई, जेने घणी वार आपणे वाणियाशाहीने नामे ओळखीए छीए. जेम तेम करीने बची जवाने माटे अने पोतानो टूंको के मेलो स्वार्थ साधवा माटे माणसे शुं शुं करवुं घटे छे एनुं डहापण शीखवनार

वचनो आपणे त्यां ढगलाबंध छे. एवां वचनोए ज आपणा समाजने पुरुषार्थहीन अने टूंकी दृष्टिवाळो बनाव्यो छे.

३

भर्तृहरिनी शैली रामायण-महाभारतनी शैली जेवी अथवा पुराणकारोनी शैली जेटली सादी सरळ नथी, तेम ज उत्तरकालीन कविओनी शैली जेवी कृत्रिम, जटिल अने वासी पण नथी. भर्तृहरिनी शैलीमां प्रसाद छे, ओप छे अने व्यापक अर्थमां ओज पण छे. अने शैलीनी सर्वश्रेष्ठ कसोटी जे एनुं वळगणापणुं ते पण छे. जे शब्दो अने शब्दसमूहो, जे वाक्यो अने श्लोको वांचतांवेंत माणसने वळगे छे अने कहेवत जेवा थईने समाजमां चलणी नाणांनी गरज सारे छे ते बधा कोई पण देशमां अने कोई पण जमानामां आदर्श शैलीना ज गणाय. भर्तृहरिनी शैलीमां ए गुण सोए सो टका ऊतरेलो होवाने कारणे ज, पंजाबमां के बंगाळमां, काश्मीरमां के केरळमां, भर्तृहरिना श्लोको घेर घेर मोढे कराय छे अने संभाषणमां टंकाय छे.

महाराष्ट्र कवि मोरोपंते संभाषण माटेनो आदर्श एक आर्यामां ग्रथित कर्यो छे—

बह्वर्थ, जनमनोहर, अल्पाक्षर, मधुर, सत्य बोलावें ।
ज्या सद्वाक्यश्रवणें श्रोत्यांचें चित्त शिरहि डोलावें ॥

सांभळनारनुं माथुं अने हैयुं बन्ने प्रसन्नताथी डोलवा मांडे एवी, अल्पाक्षर अने मधुर तथा अर्थगंभीर शैली जोईती होय, तो संस्कृतनो रसियो भर्तृहरि पासे दोडवानो ज.

प्रारंभमां कह्युं छे तेम, भर्तृहरिमां एक ज श्लोकमां एक आखी वार्ता अने एनो बोध कही देवानी शक्ति जेम छे, तेम ज एक आखो आदर्श पण एक ज मोटा श्लोकमां ते सविस्तर वर्णवी शके छे. एक श्लोक एटले एक आखुं चित्र. भर्तृहरिनी आ चित्रण-शक्ति कालिदास अने भवभूति करतां जराये ऊतरती नथी. आदर्शोनी भव्यता जमाववा माटे भलभला कविओए भर्तृहरि पासेथी पाठ लेवा जोईए.

अंग्रेजीमां सॉनेट करीने काव्यनो के छंदनो एक प्रकार छे. स्वाभाविकता, संपूर्णता अने हृदयतृप्ति जाळवी चौद लीटीमां एक वात पूरी करवी ए ए काव्यप्रकारनी विशेषता छे. कविने स्फुरेली एकाद प्रतिभापूर्ण कल्पना चौद लीटीमां ज पूरी करवी — आ बंधनने कारणे कविने पोतानी बधी शक्ति एमां वापरवी पडे छे. ए ज खूबी भर्तृहरि पोताना भारदस्त शार्दूलविक्रीडित, स्रग्धरा अथवा शिखरिणीमां आणी आपे छे. आ गौरवशाळी वृत्तो भर्तृहरिना हाथमां एवो तो चमत्कार बतावे छे के एक श्लोक एटले एक सॉनेट ज जोई लेवो.

केटलाक कविओ नानां नानां वृत्तो लई एक पंचक, एक अष्टक अथवा एक दशकमां एक आखो भाव अथवा

प्रसंग पूर्ण करे छे; पण भर्तृहरिने तेम करवुं पडतुं नथी. एनो साहित्ययोग एटलो समर्थ छे के उपर वर्णवेलां एक एक वृत्तो एना हाथमां कुशळ किंकरनी पेटे काम आपे छे.

व्याकरणना के छंदोना नियमो तोडी वाचको पासेथी ए त्रुटी दरगुजर कराववानी नबळाई संस्कृत कविओ बहु ओछी बतावे छे. भर्तृहरिए तो ए क्यांय देखाडी नथी.

भर्तृहरिए मनुष्यने माटे जीवनने केवो आदर्श विस्तारी आप्यो छे ए हवे आपणे तपासीए; अने एनी साथे साथे भर्तृहरिना काळनी दुनिया केवी हती एनुं चित्र पण भर्तृहरिना ज श्लोको परथी आपणे तैयार करवानो प्रयत्न करीए.

आजे हिंदुस्तानमां मत्स्य, कूर्म अने वराह ए त्रण अवतारोनी क्यांय पूजा थती नथी. वामन अवतार केवळ नामथी विष्णुना अवतारमां समाई गयेलो छे. परशुराम तो एक बे न्यातोनो कुळदेवत थई बेठो छे. नृसिंहनुं पण एम ज थयुं छे. आजे तो अवतारोमां राम अने कृष्ण ए बे ज प्रधानपणे सार्वभौम थया छे. बौद्ध अथवा बुद्ध आ दशावतारमां क्यारे दाखल थयो अने पश्चिम भारतमां एनुं पंढरपुरना विठोबामां क्यारे रूपान्तर थयुं, एनो इतिहास हजी कोईए तारव्यो नथी. सनातनी हिंदुओ माने छे के कलंकी अवतार हजी थवानो छे. ज्यारे गुजरातमां

આગાખાની ખોજાઓએ વિચિત્ર રીતે આગાખાનને જ કલંકી અથવા નકલંકી ક્યારનો બનાવી દીધો છે! હિંદુધર્મની પૌરાણિક માન્યતાઓમાં કેટલું અરાજક પેદા થયું છે એનો હિંદુઓને જ હજી પૂરતો ખ્યાલ નથી. હિંદુ સંસ્કૃતિ અને હિંદુ સમાજ મરતાં મરતાં પણ હજારો વર્ષ ટકે એવો એક કબીરવડ છે. એની શાખા પ્રશાખાઓ કેટલી છે અને એની છાયા તળે બીજાં કેટલાં વૃક્ષો ઊગ્યાં છે અને એ એને પોષણ આપે છે કે એનો જીવનરસ ચૂસે છે, એની એને પોતાને જ ખબર નથી.

ભર્તૃહરિમાં અવતારોનો ઉલ્લેખ અનેક ઠેકાણે જડે છે. પણ એમાં મુખ્ય જે રામ અને કૃષ્ણ તે જ જડતા નથી એ આશ્ચર્ય છે. ભર્તૃહરિના ધાર્મિક તત્ત્વજ્ઞાન ઉપર બૌદ્ધધર્મની અસર પૂરેપૂરી દેખાય છે, છતાં બુદ્ધનો પણ ઉલ્લેખ ક્યાંય મળતો નથી. એનું કારણ શોધવું જોઈએ. ભર્તૃહરિ જેવા શિવ-ઉપાસકે જો વખતસર આગ્રહ રાખ્યો હોત તો ગૌતમ બુદ્ધ વિષ્ણુનો અવતાર ગણાવાને બદલે શિવનો જ એક અવતાર ગણાઈ જાત; અને વખતે તે જ બરાબર થાત. અવેરના પ્રચારક બુદ્ધને જો સંહારકારી શિવના અવતાર તરીકે ગણાવતાં વાંધો હોય તો 'વિનાશાય ચ દુષ્કૃતામ્' અવતાર લેનાર વિષ્ણુનો અવતાર પણ એ ન થઈ શકે. જીવનદૃષ્ટિએ તપાસતાં, બુદ્ધ શિવનો જ અવતાર ગણાવો જોઈએ. જો અનાદર ન ગણાય તો, નામ ઉપરથી જ વિષ્ણુ ઘુસણિયો છે; જ્યારે શિવ કલ્યાણકારી છે, કલ્યાણમૂર્તિ છે.

आम जोके भर्तृहरि विष्णुना अमुक अवतारो प्रत्ये आदर बतावे छे, महादेवनो अनन्य उपासक छे, छतां एना तत्त्वज्ञान उपर बौद्ध धर्मनी असर विशेष होय एम लागे छे. आपणा लोको अनेकानेक पंथ ऊभा करे छे छतां जोतजोतामां ए बधा पंथोने अने विचारभेदोने जीवनदृष्टिथी एकतानी दोरीमां परोवी पण दे छे. आपणी जातिनो ए खास स्वभाव छे. ए स्वभाव जेम भगवद्गीतामां देखा दे छे तेम ते भर्तृहरिमां पण पूर्णपणे विकसेलो देखाय छे.

भर्तृहरिनो जो विशेष आग्रह होय तो ते कर्म विषे छे. देवोनी भक्ति करवी ए ठीक छे पण देवो तो कर्मने अधीन छे. देवो करतां दैवनी मात्रा वधारे मानीए तो ते पण कर्मने ज अधीन छे. एम कहीने भर्तृहरिए कर्मनुं ज सर्वोपरीपणुं स्पष्ट कर्युं छे.

आ कर्म शुं छे ते उपनिषत्कालीन ऋषिओने पूछवुं जोईए. आखुं विश्व खरुं जोतां अनाद्यनन्त कर्मनो ज विस्तार अने विलास छे. जेने आपणे पंचमहाभूत कहीए छीए ते जड पदार्थो पण कर्मनी ज विभूति छे. अने जो ऊंडाणमां जईने विचार चलावीए तो आत्मा अने कर्म वच्चे विशेष भेद जडशे नहि. जे कंई हलनचलन एनी मेळे थाय छे, अथवा इरादापूर्वक कराय छे, तेटलुं ज कर्म नथी; पण आ विश्व पाछळ जे प्रेरणा छे अने जे प्रेरणाए ज विश्वनुं रूप धारण कर्युं छे तेने आत्मा पण कही शकाय,

अने कर्म पण कही शकाय. आत्मा कोई स्थावर वस्तु नथी अने कर्म कोई क्षणजीवी परिवर्तन नथी, बन्ने एक ज छे. एटलुं जो आपणे समजीए तो कर्म ए ज साध्य बने छे अने ए ज साधन पण बने छे. ए कर्मनी ज उपासना भर्तृहरिने अभिमत छे अने तेथी ज ते सर्व दृष्टिओनो समन्वय समजी शके छे. अने तेथी ज ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सूर्य बधाने कर्मना साम्राज्यमां ए गोठवी शके छे.

नाथसंप्रदायमां जे भर्तृहरि देखाय छे ते ज आ श्लोकोनो कवि के केम ए विषे पण खातरीपूर्वक कशुं कही शकाय तेम नथी. नाथसंप्रदायनी जे खास फिलसूफी छे ते आ श्लोकोमां नथी देखा देती. महाराष्ट्रना आद्य संत कवि ज्ञानेश्वरना मोटा भाई नाथसंप्रदायना हता. ज्ञानेश्वरे एमनी पासेथी दीक्षा लीधी हती, छतां ज्ञानेश्वरना ग्रंथोमां नाथसंप्रदायनी विशेषता जोवामां आवती नथी. भर्तृहरि अने ज्ञानेश्वर ए संप्रदायमां दाखल थया पछी एमनो ए दिशानो रस कंईक ओछो थयो हशे अने पछी एमणे सामान्य फिलसूफी उपर ज पोताना काव्यनो मदार बांध्यो हशे. ते गमे ते होय, भर्तृहरिना काव्यमां नाथ-संप्रदायनी खास छाप नथी.

४

अमारा नानपणमां नाना मोटा छंदना अनेक मराठी श्लोको अमे मोढे करता. न्यातभोजन वखते अथवा अन्त्याक्षरीनी

हरीफाईमां एनो उपयोग थतो. आवी मूडी वधारवानी दृष्टिए जे रोचक श्लोको ते वखते मोढे कर्या हता तेमां वामनपंडिते करेला भर्तृहरिना नीतिवैराग्य शतकना श्लोकोनो अनुवाद मोटो भाग भजवतो. आ श्लोकोनो जेम जेम अमे अर्थ करता गया तेम तेम अमने जीवननो आर्य आदर्श जडतो गयो. अने ए नीतिनी एक मोटी केळवणी थई पडी. बाळमानसने ज्यारे कांई भव्य आदर्श जडे छे त्यारे ते पोतानुं आचरण ए कसोटी उपर कसी जुए छे अने ए रीते ए आदर्शने गुरुस्थाने स्थापे छे. वामनपंडिते अमारा बालहृदयमां आ रीते भर्तृहरिनी स्थापना करी. भर्तृहरिए पोतानुं ते स्थान हजु सुधी टकावी राख्युं छे.

मराठी पछी संस्कृतनुं भणतर ज्यारे शरू थयुं अने भर्तृहरिना श्लोको पोतानुं भाषासौष्ठव अमारी आगळ खीलववा लाग्या, त्यारे ए श्लोको जराय अपरिचित जेवा न लाग्या. ऊलटुं वामनपंडिते पूर्वतैयारी करावी होवाथी संस्कृत श्लोको समजवामां घणुं सहेलु थयुं.

भर्तृहरिना संस्कृत श्लोको मोढे करतां मुख्य आकर्षण एना छन्दसौष्ठवनुं हतुं, भाषालालित्यनुं हतुं के आदर्शनी आर्यतानुं हतुं, ए आजे कहेवुं मुश्केल छे.

सदभाग्ये कॉलेजमां प्रवेश करतांनी साथे नीति-वैराग्यनुं सांगोपांग अध्ययन करवानी तक मळी. अने संस्कृत ग्रंथोनी आधुनिक दृष्टिए चिकित्सा करवानी दृष्टि पण मळी. आगळ जतां विद्यार्थीओने थोडा समयमां

संस्कृत भणाववानो प्रयत्न करतां आ श्लोकोमांथी कया लेवा, कया न लेवा, ए नक्की करवुं पड्युं. नसीबवाद उपर भार देनार श्लोको टाळवानुं प्रथम मन थयुं. स्त्रीओनां अंगोनुं अने हावभावोनुं वर्णन पण टाळवुं पड्युं. शृंगारशतकमांथी तो कशुं लेवाय ज नहि. छतां एमांय बेएक लीटी लेवा लायक जडी ते अहीं लीधी छे. आम शिक्षकनी दृष्टिए पसंदगी कर्या पछी भाषा अने भावनी दृष्टिए श्लोकोनो क्रम नक्की करवानुं मन थई आव्युं. ओछामां ओछा केटला श्लोको लेवाथी भर्तृहरिनी आखी शिखामण एमां मळी रहेशे ए जोवानी दृष्टि पण आ पसंदगीमां रहेली हती ज.

सन १९२२ नी सालमां ज्यारे प्रथम जेल मळी अने तेमांय पराणे सेववा पडेला त्रण चार महिनाना चोपडीना भूखमराने अंत भर्तृहरि ज्यारे हाथ आव्यो त्यारे सद्बोध-शतकनी रचना पूरी करी. अने विनोदने अर्थे ए आखो संग्रह लखी काढयो.

पछी एक वार नवजीवन मुद्रणालये ए बीबांमां गोठव्यो, पण एटलामां सत्याग्रहनी लडत शरू थई अने सरकारे प्रेस जप्त कर्युं अने पोलीसोए प्रेस साथे बीबांमां गोठवायेलुं सद्बोधशतक पण जप्त कर्युं, अने बधी महेनत खेदानमेदान करी नाखी. पछी तो संग्रहनुं मूळ हस्तलिखित पण मेळववुं कठण थई गयुं. आवी हाडमारीओ अने ढील सहन करतां करतां आ संग्रह

अंते १९४१मां प्रकाशित थाय छे. देशनी ऊछरती पेढीना मानस उपर अने हृदय उपर आ संग्रह अनंत काळ सुधी प्रकाश पाडतो रहे एवी भर्तृहरिना 'शांततेजस'ने प्रार्थना छे.

५

आम प्रस्तुत सग्रह भर्तृहरिनां शतकोमांथी शिक्षणने उपयोगी एवा श्लोको तारवीने करेलो छे.

सौथी सहेला एवा सत्तावीस श्लोको अलग वीणी काढी एमनी 'नक्षत्रमाला' बनावी छे. अपेक्षा एवी छे के शिक्षको, माबापो अथवा वालीओ रजाना दिवसोमां रोज एक बे एक बे करतां आ श्लोको एक महिनामां विद्यार्थीओने समजावी एमनी पासे मोढे करावशे. अने उच्चारण तरफ खास ध्यान आपी संस्कृत भाषाना अभ्यासनो पायो मजबूत करशे.

संस्कृत भाषा शीखवानी अने एमांथी आनंद मेळववानी चावी एना शुद्ध उच्चारणमां छे. संस्कृत भाषामां स्वाभाविक माधुर्य छे. एना गद्यमां सहेजे तालबद्धता आवी शके छे. अने अनेक प्रकारना एना छंदोमां एटलुं तो संगीत भरेलुं छे के माणस ए भाषा पूरती न जाणतो होय तोये केवळ नादमाधुर्यने वश थई सेंकडो श्लोको ए वांचतो ज जाय अने एमांथी नादानंद मेळवतो जाय.

पण जेने संस्कृतना शुद्ध उच्चारणनी खूबी हाथ आवी नथी अथवा, साचुं कहीए तो, जीभे चढी नथी, तेने

संस्कृत वांचवुं अथवा गावुं ए एक कष्टप्रद व्यवसाय थई पडे छे.

तेथी शिक्षकोए प्रथम पोतानुं उच्चारण शुद्ध छे के नहि एनी खातरी करी लई, अने तेम न होय तो प्रयत्नपूर्वक सुधारी लई, पछी ज विद्यार्थीओने संस्कृत भाषानी दीक्षा आपवी. विद्यार्थीओने संस्कृत उच्चारणनी दीक्षा आपवानो एकमात्र उपाय ए छे के प्रथम अक्षरोनां कंठ, तालु आदि स्थानो अने ह्रस्व दीर्घना नियमो समजावी तेम ज संधिनियमोनी स्वाभाविकता एमना मन पर ठसावी पछी, अथवा ते पहेलां, एक एक श्लोक शुद्ध अने मधुर ढबे दसवीस वार तो शुं पण पचास पचास वार धीरजपूर्वक पोते बोली संभळाववो. आ महेनत आजना शिक्षकोने वेठ जेवी लागशे; पण संस्कृति-रक्षणनी दृष्टिए एनुं महत्त्व असाधारण छे. सुलेखन, शुद्ध लेखन अने शुद्ध उच्चारण ए संस्कृतिनां महत्त्वनां अंगो छे, ए आपणे भूली न जवुं जोईए. अने जो गणित अने व्याकरण मारफत निर्दोष विचार करवानी टेव आपणे पाडी शकता होईए, तो शुद्ध लेखन, सुलेखन अने शुद्ध उच्चारण द्वारा आपणे सदाचारनो तथा शिष्टाचारनो पायो जरूर नाखी शकीए छीए.

छन्द, भाषा अने भावनी दृष्टिए सहेला अने शिक्षणसुलभ एवा सत्तावीस श्लोको तारवी काढया पछी नीति अने वैराग्यशतकमांथी सारामां सारा एकसो आठ श्लोको तारवी काढया; अने एमां पण छंद, भाव अने भाषानी

दृष्टिए अमुक क्रम गोठवी एमनुं सद्‌बोधशतक बनाव्युं. आ रीते संग्रह अने संपादन कर्या पछी एम जणाई आव्युं के, भर्तृहरिनी आर्य शिखामण संपूर्णपणे आटलामां आवी जाय छे अने विद्यार्थीओने शीखववा लायक एवुं भाग्ये ज कंई रही जाय छे.

आम देखाया छतां केटलाक श्लोको प्रत्येनो पक्षपात जबरदस्त नीवडवाथी अने भर्तृहरिनी आ आवृत्ति बनता सुधी संपूर्ण करवाना लोभथी केटलाक प्रकीर्ण श्लोको सद्‌बोधशतक पछी 'खिलकाण्ड' तरीके मूक्या छे. आ श्लोको पाठ्यक्रममां राखवाना नथी.

आटलुं कर्या पछी पण लोभ तृप्त थयो नहि, एटले भर्तृहरिमांथी जे नानां नानां वाक्यो कहेवत जेवां थई पड्यां छे अने आपणां लखाणोमां वापरी शकाय छे एवांओनुं एक परिशिष्ट बनावी एने **सूक्तिसुधा**नुं नाम आप्युं छे. निबंधलेखन शीखवनार शिक्षको आमांथी अनेक वचनो निबंधना विषय तरीके वापरी शके छे.

आटलुं कर्या पछी जे श्लोको छोडी दीधा हता तेमांथी केटलाकनां एक एक अथवा बब्बे चरणो लेवानुं मन थयुं. केमके ए स्वतंत्रपणे मोती जेवां चळकवा लाग्यां. एटले एमनी एक **मौक्तिकांजलि**, हार बनाव्या वगर एमने एम, अंते मूकी दीधी छे.

२५

भिन्न भिन्न अभिरुचिवाळा शतकभक्तोने आथी संतोष थशे एवी आशा छे. आवी रीते भर्तृहरिना काव्यमांथी विद्यार्थीओ माटे जेटलुं लेवालायक हतुं ते बधुं आ संग्रहमां आवी गयुं छे. अने एवी आशा बंधाई छे के हिंदुस्तानमां ज्यां ज्यां संस्कृत भाषानी प्रतिष्ठा छे त्यां त्यां आ संग्रह पाठय पुस्तक तरीके अथवा संस्कारनी केळवणीना खोराक तरीके वपराशे.

६

आ संग्रह उपर संस्कृतमां ज एक टीका तैयार करावची एवो प्रथम संकल्प हतो अने ते प्रमाणे मारा मित्र श्री. पांडुरंग वळामेए (हालना श्री रंग अवधूत महाराजे) ए तैयार पण करी आपी. पण सलाहकारोनो अभिप्राय पड्यो के संस्कृत टीकानो आजना विद्यार्थीओने बहु लाभ थतो नथी एटले दुःख साथे ए आखी टीका कोरे मूकवी पडी. ए टीकामांथी केटलाक समानार्थी श्लोको आ संग्रहनी टिप्पणीओमां लेवाया छे.

आ समानार्थ श्लोको विद्यार्थीओनी जिज्ञासाने वधु जाग्रत करशे अने आ दिशामां वधु शोधखोळ करवा प्रेरशे एवी आशा छे.

वेद जेम अपौरुषेय छे तेम संस्कृत साहित्यमां एवां असंख्य सुभाषितो छे के जेमना कर्तानुं ठेकाणुं क्यांय जडतुं नथी. पेढी दर पेढी लोक-कंठमां ए सुभाषितो

रमतां होय छे, अने लोककेळवणीनुं कीमती काम कर्ये जाय छे. केटलाक श्लोकोना देशी भाषामां पर्यायो पण होय छे. तेटला परथी मनाय छे के ते मूळ संस्कृतना अनुवाद हशे. पण एम पण बनवुं अशक्य नथी के मूळ देशी भाषानुं सुबोध-वचन गमी जवाथी संस्कृत पंडितोए एने पाछळथी संस्कृतमां उतार्युं होय. केटलीक पालि गाथाओ महाभारतमां जडे छे. त्यां पण मूळ कयुं अने अनुवाद कयो ए कहेवुं मुश्केल छे. केटलेक ठेकाणे श्लोकोनी रचना ज बतावी आपे छे के मूळ कयुं अने भाष्य कयुं? दाखला तरीके, गीतामां 'त्रिविधं नरकस्येदं' ए श्लोक अने भर्तृहरिनो 'कान्ता कटाक्षविशिखा...' ए श्लोक, ए बे वच्चे तुलना करतां तरत देखाई आवे छे के गीतानो कोरो श्लोक लईने एना उपर ज भर्तृहरिए काव्यमय भाष्य कर्युं छे.

सद्बोधशतकना प्रकाशन माटेनी बधी महेनत पहेली वार पण श्री. पांडुरंग देशपांडेए ज करी हती अने आ वखते पण एमनी महेनत अने चीवट विना आ काम पूरुं न ज थात. एटले एमनो आभार मानी एमना हिस्साने ओछो नथी करवा मागतो.

आ संग्रहनी संस्कृत जोडणी विषे बे शब्द कहेवा जोईए. घणी वार पदच्छेद करतां न आवडवाथी विद्यार्थीओ मूंझाय छे. समासनां पदो अलग बनाववाथी कोक वार घणी सगवड मळे छे. संधि तोडवाथी पण अर्थ सहेजे

स्पष्ट थाय छे; अने स्वल्पविराम, अर्धविराम, उद्गारचिह्न के प्रश्नचिह्न मूकवाथी श्लोक जोतांवेंत एनो अर्थ पोतानी मेळे प्रगट थाय छे. आवी सगवडो बनी शके तो पूरी पाडवानी दृष्टिए संस्कृतना संधिनियमोनुं केटलेक ठेकाणे पालन कर्युं नथी. आ प्रकार संस्कृत माटे नवो ज होवाथी एमां एकरूपता जळवाई नथी. विद्यार्थीओ आवी सगवडथी राजी थशे अने शिक्षको पण आ इरादापूर्वक दाखल करेली शिथिलताने दरगुजर करशे एवी आशा छे. बचाव माटे व्याकरणनो नियम हाजर छे ज के—

संहितैकपदे नित्या, नित्या धातूपसर्गयोः ।
नित्या समासे, वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

आ संग्रह साथे संस्कृत श्लोकोनुं गुजराती भाषांतर आपवानो प्रथम विचार न हतो. जरूर जेटली टिप्पणीओ आप्या पछी भाषांतरनी जरूर न रहेवी जोईए. छतां, जेमनुं संस्कृत काचुं होय छे तेमने श्लोकनुं भाषांतर मळ्युं होय, तो मूळनो अर्थ पोतानी मेळे बेसाडवामां घणी मदद थाय छे एवो जातिअनुभव छे.

ए उपरांत जेमनी पासे संस्कृत वांचवानी धीरज नथी पण जेओ ए साहित्यमां संग्रहेली आपणी सांस्कृतिक मूडीनो आस्वाद लेवा मागे छे तेमने माटे संस्कृतनां भाषांतरो घणां कीमती नीवडे छे.

पण आपणे त्यां भाषांतर-कळा पाछळ विशेष महेनत लीधेली जोवामां आवती नथी. केटलांक भाषांतरो तो मूळ

प्रथनी मददथी ज समजी शकाय एवां पण जोवामां आव्यां छे! केटलांक भाषांतरो एवां तो यांत्रिक होय छे के अर्थनी हानि करवा उपरांत बन्ने भाषाने पक्षपात रहित अन्याय करवानी ज सफळता बतावे छे.

संस्कृत साहित्य आपणो कीमतीनां कीमती परंपरागत वारसो छे. एने जो लोकभोग्य बनाववो होय तो एना सारामां सारा प्रामाणिक अने सरस अनुवादो थवा ज जोईए. आ काम क्यारनुं थवुं जोईतुं हतुं. पण एक तो संस्कृत साहित्य विशाळ छे अने बीजुं आपणी देशी भाषाओमां संस्कारिता वधारवा माटे साहित्यनुं सेवन करनार लोकोनी संख्या परिमित थई छे अने आपणा विद्वानो संस्कृत, प्राकृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रेंच आदि साहित्य उपर ज पुष्ट थवानुं पसंद करे छे तेथी पण आपणी देशी भाषाओ आ बाबतमां पछात ज रही छे.

आदर्श भाषांतरमां मूळनो भाव, एनी सूक्ष्म छटा, एनी विशिष्ट शैली अने एनुं माधुर्य तो जाळववानो प्रयत्न होवो जोईए. ते उपरांत जे भाषामां भाषांतर थाय छे ते भाषामां पण ए भाषांतर कढंगुं न लागवुं जोईए. भाषानो स्वभाव, एनो प्रवाह, एनो वाक्प्रचार, अने एनी मूडी ए बधाने अनुकूळ एवुं भाषांतर थाय तो ज ते देशी भाषानुं घरेणुं थई शके छे. मूळनो भाव स्पष्ट करवा माटे ज्यां एकाद शब्द वधारे वापरवो पडे अथवा स्पष्टीकरण आपवुं पडे त्यां ते विना संकोचे मूळने वफादार

रही पूरां पाडवां जोईए. ज्यां भाषानी विशेष शक्तिने कारणे मूळनुं लंबाण टूंकावी शकाय तेम होय त्यां तेम पण करतां संकोच न राखवो जोईए.

भर्तृहरिनुं एवुं भाषांतर रजू करवानी महत्त्वाकांक्षा मनमां हती; पण एने माटे जोईता वखतना अने पूर्व तैयारीना अभावे तेम करी न शक्यो. सद्भाग्ये मारा मित्र श्री पांडुरंग देशपांडेए ए बधा श्लोकोनो निर्दोष अने सारो सरखो अनुवाद करी आप्यो. एनो ज आधार लई एमां सहेजसाज फेरफार करी प्रस्तुत गुजराती अनुवाद वाचको आगळ मूकवानी हिंमत करी छे. श्री महादेव-भाईना शब्दोमां कहीए तो गाय जेम पोताना वाछरडाने चाटी चाटीने रूपाळुं करे छे तेम भाषांतर पण रूपाळुं करवानुं होय छे. हुं तो मानुं छुं के मूळनो जेम तेम शुद्ध अनुवाद कर्या पछी अनुवादके मूर्तिकारनी पेठे एने मठारवो जोईए. पछी एने मोटेथी अनेक वार वांचीने, गद्यमां जे आवश्यक ताल होवो जोईए ते आव्यो छे के नहि ते तपासवुं जोईए अने ते प्रमाणे अनेक वार घूंटी घूंटीने एने जीवतो अने लावण्ययुक्त बनाववो जोईए. अने फरी एने मूळ साथे सरखावी तपासवुं जोईए के एणे मूळ लखाणने कोई पण रीते अन्याय तो कर्यो नथी ?

आवुं भाषांतर रजू करी शकत तो ए समाधाननो विषय थात. तेम नथी बनवा पाम्युं एनुं मने तीव्र भान

छे. पण आशा छे के जेवुं छे तेवुं पण आ भाषांतर गुजराती वाचकोने आवकारलायक जणाशे.

हवे पछीनां भाषांतरो एवां तो सर्वांगसुंदर थवां जोईए के गुजराती भाषानुं अध्ययन करतां अनेक शैलीओ साथे परिचय केळववा मागनारने आवां भाषांतरो जोया वगर चाले ज नहि एम लागवुं जोईए. संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी, बंगाळी, मराठी वगेरे भाषाओए जे कंई शैलीनी समृद्धि केळवी होय ते बधीनो लाभ आपणी भाषाने मळवो ज जोईए एवो आग्रह राखीने, पोतानी भाषाने शणगारवा, समर्थ अने संस्कारी बनाववा पाछळ जेमणे भेख लीधो होय तेमनुं आ काम छे.

साबरमती, दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर

१४–११–'४१

अनुक्रमणिका

चि. बाळ,

आपणे साथे संस्कृत वांचता तेनी मीठी यादगीरीमां आ

सद्बोधशतक

तने ज अर्पण करुं छुं.

१-१२-'४१

काकानी सप्रेम
शुभाशिष

नक्षत्रमाला

नमः शान्ताय तेजसे ।

रजाना महिनामां बाळको रमतां रमतां मोढे करीं शके ए उद्देशथी नक्षत्र जेवा २७ श्लोको तारवी काढीं एमनी नक्षत्रमाळा अहीं रजू करी छे.

भर्तृहरिनी सुंदर बोधवाळी आ मधुर वाणी कंठ करवी ए संस्कारितानुं एक उत्तम साधन छे.

१

येषां न विद्या, न तपो, न दानं,

न चापि शीलं, न गुणो, न धर्मः ।

ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः

मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ॥

वृत्त — उपजाति, एटले के इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा मिश्र.

पाठान्तर — २. न चापि शीलं—ज्ञानं न शीलं ।

३. मर्त्यलोके-मृत्युलोके.

२

साहित्य-संगीत-कला-विहीनः

साक्षात्पशुः पुच्छ-विषाण-हीनः ।

तृणं न खादन्नपि जीवमानः

तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ॥

वृत्त — उपजाति.

३

आलस्यं हि मनुष्याणां

शरीरस्थो महारिपुः ।

नास्त्युद्यमसमो बन्धुः

कृत्वा यं नावसीदति ॥

वृत्त — अनुष्टुप् = श्लोक.

पाठान्तर — २. महारिपुः—महान् रिपुः ।

४. कृत्वा यं—कुर्वाणो

४

को न याति वशं नीचो
मुखे पिण्डेन पूरितः ।
मृदङ्गो मुखलेपेन
करोति मधुरं ध्वनिम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर : १. "लोके" ने ठेकाणे "नीचो" एवुं नवुं पाठान्तर उपजावी काढयुं छे.

५

यूयं वयं, वयं यूयं
इत्यासीन्मतिरावयोः ।
किं जातमधुना येन
यूयं यूयं, वयं वयम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

६

दानं भोगो नाशः
तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य ।
यो न ददाति न भुंक्ते
तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

वृत्त — आर्या.

७

परिचरितव्याः सन्तो
यद्यपि कथयन्ति ते न उपदेशम् ।
यास्तेषां स्वैरकथाः
ता एव भवन्ति शास्त्राणि ॥

वृत्त — आर्या.

८

येनैवाम्बरखण्डेन
संवीतो निशि चन्द्रमाः ।
तेनैव च दिवा भानुः
अहो दौर्गत्यमेतयोः ॥

वृत्त—अनुष्टुप् .

९

मृग-मीन-सज्जनानां
तृण-जल-संतोषविहितवृत्तीनाम् ।
लुब्धक-धीवर-पिशुनाः
निष्कारणवैरिणो जगति ॥

वृत्त — आर्या.

१०

भोगा न भुक्ता, वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं, वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो, वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः ॥

वृत्त — उपजाति.

११

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — २. (एक जण सूचव्युं छे.) 'याति राष्ट्रं समुन्नतिम्' ।

१२

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेन्द्रभवनेष्वपि ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

१३

मालतीकुसुमस्येव द्वे गतीह मनस्विनाम् ।
मूर्ध्नि वा सर्वलोकस्य शीर्यंत वन एव वा ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — १.–कुसुमस्तबकस्येव द्वे गती स्तो मनास्विनम् ;
द्वे गतीह मनस्विनः–द्वयी वृत्तिर्मनस्विनः ।

१४

लांगूलचालनमधश्चरणावपातं
भूमौ निपत्य वदनोदरदर्शनं च ।
श्वा पिण्डदस्य कुरुते; गजपुंगवस्तु
धीरं विलोकयति, चाटुशतैश्च भुंक्ते ॥

वृत्त — वसंततिलका.

१५

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः ।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः
प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — ४. प्रारब्धमुत्तम°–प्रारभ्य चोत्तम°

१६

रत्नैर्महार्हैस्तुतुषुर्न देवा,
न भेजिरे भीमविषेण भीतिम् ।
सुधां विना न प्रययुर्विरामं,
न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ॥

वृत्त — उपजाति.

१७

आज्ञा, कीर्तिः, पालनं ब्राह्मणानां,
दानं, भोगो, मित्रसंरक्षणं च ।
येषामेते षड् गुणा न प्रवृत्ताः
कोऽर्थस्तेषां पार्थिवोपाश्रयेण ॥

वृत्त — शालिनी.

१८

दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्यया भूषितोऽपि सन् ।
मणिनालंकृतः सर्पः किमसौ न भयंकरः? ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

१९

संपत्सु महतां चित्तं भवत्युत्पलकोमलम् ।
आपत्सु च महाशैलशिलासंघातकर्कशम् ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

२०

निन्दन्तु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु;
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु, युगान्तरे वा;
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

२१

भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः
नवाम्बुभिर्भूमिविलंबिनो घनाः ।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः
स्वभाव एवैष परोपकारिणाम् ॥

वृत्त — वंशस्थ.

पाठान्तर — १. भूमिविलंबिनो–भूरिविलंबिनो.

२२

श्रोत्रं श्रुतेनैव, न कुण्डलेन
दानेन पाणिर्न तु कंकणेन ।
विभाति कायः करुणापराणां
परोपकारैर्न तु चंदनेन ॥

वृत्त — उपजाति.

२३

पापान्निवारयति, योजयते हिताय,
गुह्यं च गूहति, गुणान्प्रकटीकरोति ।
आपद्गतं च न जहाति, ददाति काले,
सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्तः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

२४

छिन्नोऽपि रोहति तरुः,
क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्रः ।
इति विमृशन्तः सन्तः
संतप्यन्ते न ते विपदा ॥

वृत्त — आर्या.

पाठान्तर — २ –क्षीणश्चन्द्रोऽपि वर्धते लोके ।
४. न ते विपदा–न लोकेऽस्मिन् ।

२५

पातितोऽपि कराघातै रुत्पतत्येव कन्दुकः ।
प्रायेण साधुवृत्तानामस्थायिन्यो विपत्तयः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

२६

प्रायः कन्दुकपातेन पतत्यार्यः पतन्नपि ।
तथा त्वनार्यः पतति मृत्पिण्डपतनं यथा ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

२७

कदर्थितस्यापि हि धैर्यवृत्तेः
न शक्यते धैर्यगुणः प्रमार्ष्टुम् ।
अधोमुखस्यापि तनूनपातो
नाधः शिखा याति कदाचिदेव ॥

वृत्त — उपजाति.

पाठान्तर — ३. तनूनपातो–कृतस्य वह्नेः

सद्बोधशतकम्

श्रेयसामेष पन्थाः ।

नीति-शृंगार-वैराग्य शतकना त्रणसो गणाता पण वस्तुतः हवे ४०० नी आसपास मळी आवता श्लोकोमांथी भर्तृहरिना बोधनुं अमृत जेमां आवी गयुं छे अेवा १०८ श्लोको अहीं तारवी काढ्या छे. आमां आपणने वैरागी राजा भर्तृहरिनी शिखामण आखी मळी जाय छे एम कहेवाय.

ॐ

दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्तये ।
स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — २. स्वानुभूत्येकमानाय–स्वानुभूत्येकसाराय.

१

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं, प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी, यशःसुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने, विद्या परं दैवतं,
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं, विद्याविहीनः पशुः ॥

वृत्त — शार्दूलविक्रीडित.

पाठान्तर — ४. राजसु पूजिता–राज-सुपूजिता.

२

केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं, हारा न चन्द्रोज्ज्वलाः
न स्नानं, न विलेपनं, न कुसुमं, नालंकृता मूर्धजाः ।
वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

३

रे रे चातक ! सावधानमनसा मित्र ! क्षणं श्रूयताम्
अम्भोदा बहवो हि सन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः ।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा
यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।।

वृत्त — शार्दूल°

४

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः, प्रभवः स्मयदूषिताः ।
अबोधोपहताश्चान्ये, जीर्णमङ्गे सुभाषितम् ।।

वृत्त — अनुष्टुप्.

५

चला लक्ष्मीश्चलाः प्राणाश्चलं[1] जीवितयौवनम् ।
चलाचले च संसारे धर्म एको हि निश्चलः ।।

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — १. चलं जीवितयौवनम्–चले जीवितयौवने.

६

वयमिह परितुष्टा वल्कलैस्त्वं दुकूलैः
सम इह परितोषो, निर्विशेषो विशेषः ।
स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ।।

वृत्त — मालिनी.

७

अज्ञः सुखमाराध्यः, सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञान-लव-दुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रञ्जयति ॥

वृत्त — आर्या.

पाठान्तर — १. ब्रह्मापि नरं — ब्रह्मापि च तं नरं न रञ्जयति ।
आ पाठ साथे वृत्त गीति थाय छे.

८

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः ।
यदा किंचित्किंचिद् बुधजनसकाशादवगतं
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

९

न कश्चिच्चण्डकोपानामात्मीयो नाम भूभुजाम् ।
होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

१०

लोभश्चेदगुणेन किं? पिशुनता यद्यस्ति किं पातकैः?
सत्यं चेत्तपसा च किं? शुचि मनो यद्यस्ति
तीर्थेन किम्? ।
सौजन्यं यदि किं निजैः? स्वमहिमा यद्यस्ति
किं मण्डनैः?
सद्विद्या यदि किं धनैः? अपयशो यद्यस्ति
किं मृत्युना? ॥

वृत्त — शार्दूल°
पाठान्तर — ३. किं निजैः–किं बलेन.

११

तृष्णां छिन्धि, भज क्षमां, जहि मदं,
पापे रतिं माकृथाः,
सत्यं ब्रूह्यनुयाहि साधुपदवीं, सेवस्व विद्वज्जनम् ।
मान्यान्मानय, विद्विषोऽप्यनुनय,
प्रच्छादय स्वान् गुणान्
कीर्तिं पालय, दुःखिते कुरु दयां, एतत्सतां चेष्टितम्॥

वृत्त — शार्दूल°
पाठान्तर — ४. चेष्टितम्–लक्षणम्.

१२

अम्भोजिनीवननिवासविलासमेव
हंसस्य हन्ति नितरां कुपितो विधाता ।
न त्वस्य दुग्धजलभेदविधौ प्रसिद्धां
वैदग्ध्यकीर्तिमपहर्तुमसौ समर्थः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

१३

ददतु ददतु गालीर्गालिमन्तो भवन्तो
वयमपि तदभावाद्गालिदानेऽसमर्थाः ।
जगति विदितमेतद् 'दीयते विद्यमानं'
न हि शशकविषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ॥

वृत्त — मालिनी.

१४

राजन्! दुधुक्षसि यदि क्षितिधेनुमेनां
तेनाद्य वत्समिव लोकममुं पुषाण ।
तस्मिंश्च सम्यगनिशं परिपोष्यमाणे
नानाफलैः फलति कल्पलतेव भूमिः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

१५

त्वमेव चातकाधार इति केषां न गोचरः ।
किमम्भोदवरास्माकं कार्पण्योक्तिं प्रतीक्षसे ।।

वृत्त — अनुष्टुप्.

१६

संततायसि संस्थितस्य पयसो नामापि न श्रूयते
मुक्ताकारतया तदेव नलिनीपत्रस्थितं राजते ।
स्वात्यां सागरशुक्तिमध्यपतितं तन्मौक्तिकं जायते
प्रायेणाधममध्यमोत्तमगुणः संसर्गतो जायते ।।

वृत्त — शार्दूल

पाठान्तर — १. न श्रूयते–न ज्ञायते २. पत्रस्थितं–पत्रे स्थितं
३. तन्मौक्तिकं–सन्मौक्तिक.

१७

क्षीरेणात्मगतोदकाय हि गुणा दत्ताः पुरा तेऽखिलाः
क्षीरे तापमवेक्ष्य तेन पयसा स्वात्मा कृशानौ हुतः ।
गन्तुं पावकमुन्मनस्तदभवद् दृष्ट्वा तु मित्रापदं
युक्तं तेन जलेन शाम्यति, सतां मैत्री
पुनस्त्वीदृशी ।।

वृत्त — शार्दूल

१८

१८

'उत्तिष्ठ, क्षणमेकमुद्वह गुरुं दारिद्र्यभारं सखे !
'श्रान्तस्तावदहं चिरं मरणजं सेवे त्वदीयं सुखम्'।
इत्युक्तो धनवर्जितेन सहसा गत्वा श्मशाने शवो
दारिद्र्यान्मरणं वरं वरमिति ज्ञात्वैव तूष्णीं स्थितः॥

वृत्त — शार्दूल°

१९

सिंहः शिशुरपि निपतति
मदमलिनकपोलभित्तिषु गजेषु ।
प्रकृतिरियं सत्त्ववतां
न खलु वयस्तेजसो हेतुः ॥

वृत्त — आर्या.

२०

यदचेतनोऽपि पादैः स्पृष्टः प्रज्वलति
सवितुरिनकान्तः ।
तत्तेजस्वी पुरुषः परकृतनिकृतिं कथं सहते ? ॥

वृत्त — आर्या

२१

यदि नाम दैवगत्या जगदसरोजं कदाचिदपि
जातम् ।
अवकरनिकरं विकिरति तत् किं कृकवाकुरिव
हंसः ? ॥

वृत्त — आर्या
पाठान्तर — कदाचिदपि जातम्-सदैव संजातम्.

२२

आरम्भगुर्वी, क्षयिणी क्रमेण,
लघ्वी पुरा, वृद्धिमती च पश्चात् ।
दिनस्य पूर्वार्ध-परार्ध-भिन्ना,
छायेव मैत्री खल-सज्जनानाम् ॥

वृत्त — उपजाति.

२३

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा,
सदसि वाक्पटुता, युधि विक्रमः ।
यशसि चाभिरतिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥

वृत्त — द्रुतविलंबित.

२४

अकरुणत्वमकारणविग्रहः
परधने परयोषिति च स्पृहा ।
सुजनबन्धुजनेष्वसहिष्णुता
प्रकृतिसिद्धमिदं हि दुरात्मनाम् ॥

वृत्त — द्रुतविलंबित.

२५

करे श्लाघ्यस्त्यागः, शिरसि गुरुपादप्रणयिता,
मुखे सत्या वाणी, विजयि भुजयोर्वीर्यमतुलम् ।
हृदि स्वच्छा वृत्तिः, श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः,
विनाप्यैश्वर्येण प्रकृतिमहतां मण्डनमिदम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

२६

पद्माकरं दिनकरो विकचीकरोति
चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ।
नाभ्यर्थितो जलधरोऽपि जलं ददाति
सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

२७

क्वचिद्भूमौ शायी, क्वचिदपि च पर्यङ्कशयनः
क्वचिच्छाकाहारी, क्वचिदपि च
शाल्योदनरुचिः ।
क्वचित्कंथाधारी, क्वचिदपि च दिव्याम्बरधरो
मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

२८

अभिमुखनिहतस्य सतः
तिष्ठतु तावज्जयोऽथवा स्वर्गः ।
उभयबलसाधुवादः
श्रवणसुखोऽसौ मतात्यर्थम् ॥

वृत्त — आर्या.

२९

गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन ।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेः
भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥

वृत्त — मालिनी.

३०

जाड्यं धियो हरति, सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति, पापमपाकरोति ।
चेतः प्रसादयति, दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ? ॥

वृत्त — वसंततिलका.

३१

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता, शौर्यस्य वाक्संयमो,
ज्ञानस्योपशमः, श्रुतस्य विनयो, वित्तस्य पात्रे व्ययः ।
अक्रोधस्तपसः, क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता,
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम् ॥

वृत्त — शार्दूल०

३२

वह्निस्तस्य जलायते,
जलनिधिः कुल्यायते तत्क्षणात्,
मेरुः स्वल्पशिलायते, मृगपतिः सद्यः कुरंगायते, ।
व्यालो माल्यगुणायते, विषरसः पीयूषवर्षायते,
यस्यांगेऽखिललोकवल्लभतमं शीलं समुन्मीलति ॥

वृत्त — शार्दूल०

३३

व्याघ्रीव तिष्ठति जरा परितर्जयन्ती
रोगाश्च शत्रव इव प्रहरन्ति देहम् ।
आयुः परिस्रवति भिन्नघटादिवाम्भो
लोकस्तथाप्यहितमाचरतीति चित्रम् ! ॥

वृत्त — वसंततिलका.

३४

पातालमाविशसि, यासि नभो विलङ्घ्य,
दिङ्मण्डलं भ्रमसि मानस! चापलेन, ।
भ्रान्त्यापि जातु विमलं कथमात्मनीनं
तद् ब्रह्म न स्मरसि निर्वृतिमेषि येन ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — ३. °आत्मनीनं-°आत्मलीनं.

३५

अकिञ्चनस्य दान्तस्य शान्तस्य समचेतसः ।
सदा सन्तुष्टमनसः सर्वाः सुखमया दिशः ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

३६

मौनान्मूकः, प्रवचनपटुर्वातुलो जल्पको वा,
धृष्टः पार्श्वे वसति, च तथा दूरतश्चाप्रगल्भः ।
क्षान्त्या भीरुर्, यदि न सहते प्रायशो नाभिजातः,
सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता.

३७

प्रिया न्याय्या वृत्तिर्,मलिनमसुभङ्गेऽप्यसुकरं,
असन्तो नाभ्यर्थ्याः, सुहृदपि न याच्यः कृशधनः।
विपद्युच्चैः स्थेयं, पदमनुविधेयं च महतां,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

३८

वहति भुवनश्रेणीं शेषः फणाफलकस्थितां
कमठपतिना मध्येपृष्ठं सदा स विधार्यते ।
तमपि कुरुते क्रोडाधीनं पयोधिरनादरात्
अहह ! महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ॥

वृत्त — हरिणी.

३९

प्रदानं प्रच्छन्नं, गृहमुपगते संभ्रमविधिः,
प्रियं कृत्वा मौनं, सदसि कथनं चाप्युपकृतेः।
अनुत्सेको लक्ष्म्यां, निरभिभवसाराः परकथाः,
सतां केनोद्दिष्टं विषममसिधाराव्रतमिदम् ?॥

वृत्त — शिखरिणी.

४०

क्षुत्क्षामोऽपि, जराकृशोऽपि,
शिथिलप्रायोऽपि, कष्टां दशां
आपन्नोऽपि, विपन्नदीधितिरपि,
प्राणेषु नश्यत्स्वपि ।
मत्तेभेन्द्रविभिन्नकुंभकवलग्रासैकबद्धस्पृहः
किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ? ॥

वृत्त — शार्दूल°

४१

क्षुद्राः सन्ति सहस्रशः स्वभरणव्यापारमात्रोद्यताः
स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमानेकः सतामग्रणीः ।
दुष्पूरोदरपूरणाय पिबति स्रोतःपतिं वाडवो
जीमूतस्तु निदाघसंभृतजगत्संतापविच्छित्तये ॥

वृत्त — शार्दूल°

४२

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः
त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः ।
परगुणपरमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः॥

वृत्त — मालिनी.

पाठान्तर — २. प्रीणयन्तः—पूरयन्तः

४३

नम्रत्वेनोन्नमन्तः, परगुणकथनैः

स्वान् गुणान्ख्यापयन्तः,

स्वार्थान्संपादयन्तो विततपृथुतरारंभयत्नाःपरार्थे।

क्षान्त्यैवाक्षेपरूक्षाक्षरमुखरमुखान्दुर्मुखान्दूषयन्तः,

सन्तः साश्चर्यचर्या जगति बहुमताः कस्य

नाभ्यर्चनीयाः॥

वृत्त — स्रग्धरा.

४४

लज्जागुणौघजननीं जननीमिव स्वां

अत्यन्तशुद्धहृदयामनुवर्तमानाम् ।

तेजस्विनः सुखमसूनपि संत्यजन्ति

सत्यव्रतव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम् ॥

वृत्त — वसंततिलका.

४५

किं कूर्मस्य भरव्यथा न वपुषि

क्ष्मां न क्षिपत्येष यत् ?

किं वा नास्ति परिश्रमो दिनपतेर्

आस्ते न यन्निश्चलः? ।

किं त्वङ्गीकृतमुत्सृजन् स्वमनसा श्लाघ्यो जनो

लज्जते

'निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु' सतामेतद्धि गोत्रव्रतम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

४६

इतः स्वपिति केशवः, कुलमितस्तदीयद्विषां,
इतश्च शरणार्थिनः शिखरिणां गणाः शेरते।
इतोऽपि वडवानलः सह समस्तसंवर्तकैः,
अहोविततमूर्जितं भरसहं च सिंधोर्वपुः॥

वृत्त — पृथ्वी.

४७

उदन्वच्छन्ना भूः, स च निधिरपां योजनशतं
सदा पान्थः पूषा गगनपरिमाणं कलयति।
इति प्रायो भावाः स्फुरदवधिमुद्रामुकुलिताः
सतां प्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमा विजयते॥

वृत्त — शिखरिणी.

४८

एते सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृतः स्वार्थाविरोधेन ये।
तेऽमी मानवराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये तु घ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे॥

वृत्त — शार्दूल°

४९

स्थाल्यां वैडूर्यमय्यां पचति तिलखलीम्

इन्धनैश्चन्दनाद्यैः

सौवर्णैर्लाङ्गलाग्रै र्विलिखति वसुधाम्

अर्कमूलस्य हेतोः ।

छित्वा कर्पूरखण्डान् वृतिमिह कुरुते

कोद्रवाणां समंतात्

प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो

यस्तपो मन्दभाग्यः ॥

वृत्त — स्रग्धरा.

५०

किं तेन हेमगिरिणा, रजताद्रिणा वा

यत्राश्रिताश्च तरवस्तरवस्त एव ।

मन्यामहे मलयमेव, यदाश्रयेण

कंकोलनिंबकुटजा अपि चन्दनाः स्युः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

५१

वरं पक्षच्छेदः समदमघवन्मुक्तकुलिश-

प्रहारैरुद्गच्छद्बहलदहनोद्गारगुरुभिः ।

तुषाराद्रेः सूनोर् अहह! पितरि क्लेशविवशे

न चासौ संपातः पयसि पयसां पत्युरुचितः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

८२

ये संतोषसुखप्रबुद्धमनसस्तेषां न भिन्ना मुदो
ये त्वन्ये धनलोभसंकुलधियस्तेषां न तृष्णा हता ।
इत्थं कस्य कृते कृतः स विधिना तादृक्पदं संपदां
स्वात्मन्येव समाप्तहेममहिमा मेरुर्न मे रोचते ॥

वृत्त — शार्दूल.

पाठान्तर — १.–ये संतोषसुखप्रमोदमुदितास्तेषामभिन्नो मृदो;
सुखप्रबुद्धमनसः–निरंतरप्रमुदिताः
२. तेषां न तृष्णा हता–तेषां तु दूरे तृणाम् ।

८३

कृमिकुलचितं लालाक्लिन्नं विगन्धि जुगुप्सितं
निरुपमरसप्रीत्या खादन्नरास्थि निरामिषम् ।
सुरपतिमपि श्वा पार्श्वस्थं विलोक्य न शंकते
न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुःपरिग्रहफल्गुताम् ॥

वृत्त — हरिणी.

पाठान्तर — २. निरुपमरसप्रीत्या–निरुपमरसं प्रीत्या.

८४

व्यालं बालमृणालतन्तुभिरसौ रोद्धुं समुज्जृम्भते
छेत्तुं वज्रमणीन् शिरीषकुसुमप्रांतेन संनह्यते ।
माधुर्यं मधुबिन्दुना रचयितुं क्षाराम्बुधेरीहते
नेतुं वाञ्छति यः खलान्पथि सतां
सूक्तैः सुधास्यन्दिभिः ॥

वृत्त — शार्दूल°

५५

प्रसह्य मणिमुद्धरेन्मकरवक्त्रदंष्ट्रान्तरात्
समुद्रमपि संतरेत्प्रचलदूर्मिमालाकुलम् ।
भुजङ्गमपि कोपितं शिरसि पुष्पवद्धारयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

वृत्त — पृथ्वी.

पाठान्तर — १. दंष्ट्रान्तरात्–दंष्ट्रांकुरात्.

५६

लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः ।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत्
न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत् ॥

वृत्त — पृथ्वी.

५७

तानीन्द्रियाणि सकलानि तदेव कर्म
सा बुद्धिरप्रतिहता वचनं तदेव ।
अर्थोष्मणा विरहितः पुरुषः स एव
त्वन्यः क्षणेन भवतीति विचित्रमेतत् ॥

वृत्त — वसंततिलका.

५८

शास्त्रोपस्कृतशब्दसुन्दरगिरः शिष्यप्रदेयागमाः
विख्याताः कवयो वसन्ति विषये यस्य
प्रभोर्निर्धनाः ।
तज्जाड्यं वसुधाधिपस्य कवयो ह्यर्थं विनापीश्वराः
कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षका न मणयो यैरर्घतः
पातिताः ॥

वृत्त — शार्दूल°

५९

जाड्यं ह्रीमति गण्यते, व्रतरुचौ दंभः, शुचौ कैतवम्,
शूरे निर्घृणता, मुनौ विमतिता,
दैन्यं प्रियालापिनि ।
तेजस्विन्यवलिप्तता, मुखरता वक्तर्यशक्तिः स्थिरे,
तत्को नाम गुणो भवेत् स गुणिनां
यो दुर्जनैर्नाङ्कितः ? ॥

वृत्त — शार्दूल°

६०

अधिगतपरमार्थान् पण्डितान्मावमंस्थाः
तृणमिव लघुलक्ष्मीर् नैव तान् संरुणद्धि ।
अभिनवमदलेखाश्यामगण्डस्थलानां
न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् ॥

वृत्त — मालिनी.

६१

हर्तुर्याति न गोचरं, किमपि शं पुष्णाति यत्सर्वदा
ह्यर्थिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं
प्राप्नोति वृद्धिं पराम्।
कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधनं, विद्याख्यमन्तर्धनं
येषां तान्प्रति मानमुज्झत नृपाः; कस्तैः सह स्पर्धते ?

वृत्त — शार्दूल°

६२

प्राणाघातान्निवृत्तिः, परधनहरणे संयमः,
सत्यवाक्यं,
काले शक्त्या प्रदानं,
युवति-जन-कथा-मूकभावः परेषाम्।
तृष्णास्रोतोविभङ्गो, गुरुषु च विनयः,
सर्वभूतानुकंपा,
सामान्यः सर्वशास्त्रेष्वनुपहतविधिः,
श्रेयसामेष पन्थाः ॥

वृत्त — स्रग्धरा

६३

क्षान्तिश्चेत्कवचेन किं? किमरिभिः क्रोधोऽस्ति
चेद्देहिनां?
ज्ञातिश्चेदनलेन किं? यदि सुहृद् दिव्यौषधैः
किं फलम्?
किं सर्पैः यदि दुर्जनाः? किमु धनैर्विद्यानवद्या यदि?
व्रीडा चेत्किमु भूषणैः?, सुकविता यद्यस्ति
राज्येन किम्? ॥

वृत्त — शार्दूल०

६४

वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये
महार्णवे पर्वतमस्तके वा।
सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा
रक्षन्ति पुण्यानि पुराकृतानि ॥

वृत्त — उपजाति.

६५

या साधूंश्च खलान्करोति,
विदुषो मूर्खान्, हितान्द्वेषिणः,
प्रत्यक्षं कुरुते परोक्षम्, अमृतं हालाहलं तत्क्षणात्।
तामाराधय सत्क्रियां भगवतीं भोक्तुं फलं वाञ्छितं
हे साधो! व्यसनैर्गुणेषु विपुलेष्वास्थां वृथा मा कृथाः॥

वृत्त — शार्दूल०

६६

यत्रानेके क्वचिदपि गृहे तत्र तिष्ठत्यथैको
यत्राप्येकस्तदनु बहवस्तत्र नैकोऽपि चान्ते ।
इत्थं चेमौ रजनिदिवसौ दोलयन् द्वाविवाक्षौ
कालः काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिसारैः ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता.

पाठान्तर — ४. भुवनफलके–सह बहुकलः (बहुकलम् वा)

६७

भ्रान्तं देशमनेकदुर्गविषमं प्राप्तं न किञ्चित्फलं,
त्यक्त्वा जातिकुलाभिमानमुचितं सेवा कृता
निष्फला ।
भुक्तं मानविवर्जितं परगृहेष्वाशंकया काकवत्,
तृष्णे ! जृम्भसि पापकर्मनिरते नाद्यापि संतुष्यसि ॥

वृत्त — शार्दूल°

६८

नायं ते समयो, रहस्यमधुना, निद्राति नाथो, यदि
स्थित्वा द्रक्ष्यसि कुप्यति प्रभुरिति,
द्वारेषु येषां वचः ।
चेतस्तानपहाय याहि भवनं देवस्य विश्वेशितुः
निर्दौवारिकनिर्दयोक्त्यपरुषं निःसीमशर्मप्रदम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ४. °निर्दयोक्त्यपरुषं–°निर्दयोक्तपरुषं

६९

अजानन्माहात्म्यं पततु शलभो दीपदहने
स मीनोऽप्यज्ञानाद्बडिशयुतमश्नातु पिशितम् ।
विजानन्तोऽप्येते वयमिह विपज्जालजटिलान्
न मुञ्चामः कामान् अहह ! गहनो मोहमहिमा ॥

वृत्त — शिखरिणी.

७०

यावत्स्वस्थमिदं शरीरमरुजं यावज्जरा दूरतो
यावच्चेन्द्रियशक्तिरप्रतिहता यावत्क्षयो नायुषः ।
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा कार्यः प्रयत्नो महान्
प्रोद्दीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ४. प्रोद्दीप्ते–संदीप्ते

७१

फलमलमशनाय, स्वादु पानाय तोयं,
शयनमवनिपृष्ठं, वल्कले वाससी च ।
नवधनमधुपानभ्रान्तसर्वेन्द्रियाणां
अविनयमनुमन्तुं नोत्सहे दुर्जनानाम् ॥

वृत्त — मालिनी.

७२

विपुलहृदयैर्धन्यैः कैश्चिज्जगज्जनितं पुरा,
विघृतमपरैर्, दत्तं चान्यैर्विजित्य तृणं यथा।
इह हि भुवनान्यन्ये धीराश्चतुर्दश भुञ्जते,
कतिपयपुरस्वाम्ये पुंसां क एष मदज्वरः॥

वृत्त — हरिणी.

पाठान्तर — विपुल हृदयैः — विपुलमतिभिः

७३

त्वं राजा, वयमप्युपासितगुरुप्रज्ञाभिमानोन्नताः,
ख्यातस्त्वं विभवैर्, यशांसि कवयो
दिक्षु प्रतन्वन्ति नः।
इत्थं मानधनातिदूरमुभयोर् अप्यावयोरन्तरं
यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽसि,
वयमप्येकांततो निस्पृहाः॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ३. मानधनाति° — मानद नाति°

७४

अभुक्तायां यस्यां क्षणमपि न यातं नृपशतैः
भुवस्तस्या लाभे क इव बहुमानः क्षितिभुजाम्।
तदंशस्याप्यंशे तदवयवलेशेऽपि पतयो
विषादे कर्तव्ये विदधति जडाः प्रत्युत मुदम्।

वृत्त — शिखरिणी.

७५

मृत्पिण्डो जलरेखया वलयितः सर्वोऽप्ययं नन्वणुः
भागीकृत्य तमेव संयुगशतै राज्ञां गणा भुञ्जते ।
तद्दद्युर्ददतेऽथवा न किमपि क्षुद्रा दरिद्रा भृशं
धिग्धिक्तान् पुरुषाधमान्धनकणं
वाञ्छन्ति तेभ्योऽपि ये ॥

वृत्त — शार्दूल°

७६

गंगातरंगहिमशीकरशीतलानि
विद्याधराध्युषितचारुशिलातलानि ।
स्थानानि किं हिमवतः प्रलयं गतानि
यत्सावमानपरपिण्डरता मनुष्याः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — १. °हिमशीकर° — °कणशीकर°

७७

ब्रह्माण्डमण्डलीमात्रं किं लोभाय मनस्विनः ।
शफरीस्फुरितेनाब्धेः क्षुब्धता जातु जायते ?

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — २. जातु जायते ? — न तु जायते

७८

स्वल्पं स्नायुवसावशेषमलिनं निर्मांसमप्यस्थिकं
श्वा लब्ध्वा परितोषमेति न तु तत्
तस्य क्षुधाशान्तये ।
सिंहो जंबुकमङ्कमागतमपि त्यक्त्वा निहन्ति द्विपं
सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वाञ्छति जनः
सत्त्वानुरूपं फलम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

७९

अमीषां प्राणानां तुलितबिसिनीपत्रपयसां
कृते किं नास्माभिर्विगलितविवेकैर्व्यवसितम् ।
यदाढ्यानामग्रे द्रविणमदनिःसंज्ञमनसां
कृतं वीतव्रीडैर्निजगुणकथापातकमपि ॥

वृत्त — शिखरिणी.

८०

परेषां चेतांसि प्रतिदिवसमाराध्य बहु हा
प्रसादं किं नेतुं विशसि हृदय ! क्लेशकलिलम् ।
प्रसन्ने त्वय्येव स्वयमुदितचिंतामणिगुणे
विमुक्तः संकल्पः किमभिलषितं पुष्यति न ते ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — ३. त्वय्येव — त्वय्यन्तः

८१

क्वचिद्वीणावाद्यं, क्वचिदपि च हाहेति रुदितं
क्वचिद्विद्वद्गोष्ठी, क्वचिदपि सुरामत्तकलहः ।
क्वचिद्रामा रम्याः, क्वचिदपि गलत्कुष्ठवपुषो,
न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — १. वीणावाद्यं — वीणावादः

८२

समारम्भा भग्ना कति न कतिवारांस्तव पशो !
पिपासोस्तुच्छेऽस्मिन् द्रविणमृगतृष्णार्णवजले ।
तथापि प्रत्याशा विरमति न तेऽद्यापि शतधा
न दीर्णं यच्चेतो नियतमशनिग्रावघटितम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

८३

तपस्यन्तः सन्तः किमधिनिवसामः सुरनदीं
गुणोदारान् दारानुत परिचरामः सविनयम् ।
पिबामः शास्त्रौघान्, उत विविधकाव्यामृतरसान्,
न विद्मः किं कुर्मः कतिपयनिमेषायुषि जने ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — २. सविनयम् — सविनयान्

८४

तुङ्गं वेश्म, सुताः सतामभिमताः,
संख्यातिगाः संपदः
कल्याणी दयिता, वयश्च नवमित्यज्ञानमूढो जनः ।
मत्वा विश्वमनश्वरं निविशते संसारकारागृहे;
संदृश्य क्षणभंगुरं तदखिलं धन्यस्तु संन्यस्यति ॥

वृत्त — शार्दूल°

८५

यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे न धनिनां, ब्रूषे न चाटुं मृषा,
नैषां गर्वगिरः शृणोषि, न पुनः
प्रत्याशया धावसि ।
काले बालतृणानि खादसि, सुखं
निद्रासि निद्रागमे,
तन्मे ब्रूहि कुरंग ! कुत्र भवता किं नाम तप्तं तपः ॥

वृत्त —शार्दूल°

८६

किं कन्दाः कन्दरेभ्यः प्रलयमुपगता,
निर्झरा वा गिरिभ्यः
प्रध्वस्ता वा तरुभ्यः सरसफलभृतो
वल्कलिन्यश्च शाखाः ।
वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि प्रसभमपगतप्रश्रयाणां खलानां
दुःखोपात्ताल्पवित्तस्मयवशपवनानर्तितभ्रूलतानि ॥

वृत्त — स्रग्धरा.

८७

गंगातीरे हिमगिरिशिलाबद्धपद्मासनस्य
ब्रह्मध्यानाभ्यसनविधिना योगनिद्रां गतस्य ।
किं तैर्भाव्यं मम सुदिवसैर्यत्र ते निर्विशङ्काः
संप्राप्स्यन्ते जरठहरिणाः शृङ्गकण्डूविनोदम् ॥

वृत्त — मन्दाक्रान्ता.

पाठान्तर — ४. – कण्डूयन्ते जरठहरिणाः स्वाङ्गमङ्गे मदीये,
अथवा °शृङ्गमङ्गे मदीये ।

८८

धन्यानां गिरिकन्दरे निवसतां
ज्योतिः परं ध्यायतां
आनन्दाश्रुजलं पिबन्ति शकुना निःशंकमङ्केशयाः।
अस्माकं तु मनोरथोपरचितप्रासादवापीतट-
क्रीडाकाननकेलिकौतुकजुषाम् आयुः परिक्षीयते ॥

वृत्त — शार्दूल°

८९

अहौ वा हारे वा बलवति रिपौ वा सुहृदि वा
मणौ वा लोष्ठे वा कुसुमशयने वा दृषदि वा ।
तृणे वा स्त्रैणे वा मम समदृशो यान्ति दिवसाः
क्वचित्पुण्यारण्ये शिव शिव शिवेति प्रलपतः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — ३. यान्ति – यान्तु ।

९०

अवश्यं यातारश्चिरतरमुषित्वापि विषयाः
वियोगे को भेदस्त्यजति न जनो यत्स्वयममून् ।
व्रजन्तः स्वातंत्र्यादतुलपरितापाय मनसः
स्वयं त्यक्त्वा ह्येते शमसुखमनन्तं विदधति ॥

वृत्त — शिखरिणी.

९१

कर्मायत्तं फलं पुंसां बुद्धिः कर्मानुसारिणी ।
तथापि सुधिया भाव्यं सुविचार्यैव कुर्वता ॥

वृत्त — अनुष्टुप्.

पाठान्तर — १. तथापि – तस्माद्धि ।

९२

नमस्यामो देवान्, ननु हतविधेस्तेऽपि वशगाः;
विधिर्वन्द्यः, सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः ।
फलं कर्मायत्तं, किममरगणैः, किं च विधिना;
नमस्तत्कर्मभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति ॥

वृत्त — शिखरिणी.

९३

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्माण्डभाण्डोदरे
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे ।
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने, तस्मै नमः कर्मणे ॥

वृत्त — शार्दूल°

९४

खल्लोल्लापाः सोढाः कथमपि तदाराधनपरैः;
निगृह्यान्तर्बाष्पं हसितमपि शून्येन मनसा ।
कृतश्चित्तस्तम्भः; प्रतिहतधियामञ्जलिरपि;
त्वमाशे मोघाशे किमु परमतो नर्तयसि माम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठांतर — ४. किमुपरमतो – किमपरमतो ।

९५

दीना. दीनमुखैः सदैव शिशुकैराकृष्टजीर्णाम्बरा
क्रोशद्भिः क्षुधितैर्नरैर्न विधुरा दृश्येत चेद्गेहिनी।
याञ्चाभङ्गभयेन गद्गदगलत्त्रुट्यद्विलीनाक्षरं
को 'देहीति' वदेत्स्वदग्धजठरस्यार्थे मनस्वी जनः ॥

वृत्त— शार्दूल°

पाठान्तर — २. नरैर्न विधुरा — निरन्नविधुरा

९६

क्षान्तं न क्षमया, गृहोचितसुखं त्यक्तं न संतोषतः,
सोढा दुःसहशीतवाततपनाः क्लेशान्न तप्तं तपः।
ध्यातं वित्तमहर्निशं नियमितप्राणैर्न शंभोः पदं,
तत्तत्कर्म कृतं यदेव मुनिभिस्तैस्तैः फलैर्वंचिताः ॥

वृत्त —शार्दूल°

१७

ब्रह्मज्ञानविवेकिनोऽमलधियः कुर्वन्त्यहो दुष्करं
यन्मुञ्चन्त्युपभोगवन्त्यपि धनान्येकान्ततो निःस्पृहाः।
न प्राप्तानि पुरा न संप्रति न च प्राप्तौ दृढप्रत्ययो
वाञ्छामात्रपरिग्रहाण्यपि परं
त्यक्तुं न शक्ता वयम् ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — १. °विवेकिनोऽमलधियः— °विवेकनिर्मलधियः
२. यन्मुञ्चन्त्युपभोगवन्त्यपि धना° — यन्मुञ्च-
न्त्युपभोगकाञ्चनधना°

१८

इयत्येतस्मिन्वा निरवधिचमत्कृत्यतिशये
वराहो वा राहुः प्रभवति चमत्कारविषयः ।
महीमेको मग्नां यदयमवहद्दन्तसलिलैः
शिरःशेषः शत्रुं निगिलति परं संत्यजति च ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — ३. दन्तसलिलैः— °दन्तमुकुलैः। केटलाक
'दन्तसलिले' पाठ सूचवे छे

९९

पातालान्न विमोचितो बत बली,
नीतो न मृत्युः क्षयं,
नो मृष्टं शशलाञ्छनं च मलिनं,
नोन्मूलिता व्याधयः ।
शेषस्यापि धरां विधृत्य न कृतो भारावतारः क्षणं,
चेतः सत्पुरुषाभिमानगणनां मिथ्या वहँल्लज्जसे ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ४. वहँल्लज्जसे — वहन् खिद्यसे

१००

जातः कूर्मः स एकः पृथुभुवनभरायार्पितं येन पृष्ठं
श्लाघ्यं जन्म ध्रुवस्य भ्रमति नियमितं
यत्र तेजस्विचक्रम् ।
संजातव्यर्थपक्षाः परहितकरणे नोपरिष्टान्न चाधो
ब्रह्माण्डोदुंबरान्तर्मशकवदपरे प्राणिनो जातनष्टाः ॥

वृत्त — स्रग्धरा.

१०१

विरम विरसायासादस्माद्दुरध्यवसायतो
विपदि महतां धैर्यध्वंसं यदीक्षितुमीहसे।
अयि जडमते ! कल्पापाये व्यपेतनिजक्रमाः
कुलशिखरिणः क्षुद्रा नैते न वा जलराशयः॥

वृत्त — हरिणी.

१०२

प्रशान्तशास्त्रार्थविचारचापलं
निवृत्तनानारसकाव्यकौतुकम्।
निरस्तनिःशेषविकल्पविस्तरं
प्रपत्तुमन्विच्छति शंकरं मनः॥

वृत्त — वंशस्थ.

१०३

वितीर्णे सर्वस्वे तरुणकरुणापूर्णहृदयाः
स्मरन्तः संसारे विगुणपरिणामा विधिगतीः।
वयं पुण्यारण्ये परिणतशरच्चन्द्रकिरणां
त्रियामां नेष्यामो हरचरणचित्तैकशरणाः॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — २. विगुणपरिणामा विधिगतीः — विरसपरिणामां विधिगतिम्।

१०४

किं वेदैः स्मृतिभिः पुराणपठनैः शास्त्रैर्महाविस्तरैः
स्वर्गग्रामकुटीनिवासफलदैः कर्मक्रियाविभ्रमैः ।
मुक्त्वैकं भवबन्धदुःखरचनाविध्वंसकालानलं
स्वात्मानन्दपदप्रवेशकलनं शेषा वणिग्वृत्तयः ॥

वृत्त — शार्दूल॰

१०५

चाण्डालः किमयं द्विजातिरथवा
शूद्रोऽथ किं तापसः
किं वा तत्त्वविवेकपेशलमतिर्
योगीश्वरः कोऽपि किम् ।
इत्युत्पन्नविकल्पजल्पमुखरैः संभाष्यमाना जनैः
न क्रुद्धाः पथि नैव तुष्टमनसो
यान्ति स्वयं योगिनः ॥

वृत्त — शार्दूल॰

१०६

यदासीदज्ञानं स्मरतिमिरसंस्कारजनितं
तदा दृष्टं नारीमयमिदमशेषं जगदपि ।
इदानीमस्माकं पटुतरविवेकांजनजुषां
समीभूता दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनुते ॥

वृत्त — शिखरिणी.

पाठान्तर — २. जगदपि–जगदिति

१०७

भोगा भंगुरवृत्तयो बहुविधास्तैरेव चायं भवः
तत्कस्येह कृते परिभ्रमत रे लोकाः ! कृतं चेष्टितैः ।
आशापाशशतोपशान्तिविशदं चेतः समाधीयतां
कामोच्छित्तिवशे स्वधामनि यदि श्रद्धेयमस्मद्वचः ॥

वृत्त — शार्दूल°

१०८

मातर्मेदिनि, तात मारुत, सखे तेजः, सुबन्धो जल,
भ्रातर्व्योम, निबद्ध एव भवतामेष प्रणामाञ्जलिः ।
युष्मत्संगवशोपजातसुकृतोद्रेकस्फुरन्निर्मल-
ज्ञानापास्तसमस्तमोहमहिमा लीये परे ब्रह्मणि ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — २. एव भवतामेष प्रणामाञ्जलिः —
एष भवतामन्त्यः प्रणामाञ्जलिः ।

प्रकीर्णश्लोकाः

१०९

शय्या शैलशिला, गृहं गिरिगुहा,
वस्त्रं तरूणां त्वचः
सारङ्गाः सुहृदो, ननु क्षितिरुहां वृत्तिः फलैः कोमलैः
येषां नैर्झरमम्बुपानमुचितं, रत्यै च विद्याङ्गना,
मन्ये ते परमेश्वराः शिरसि यैर्बद्धो न सेवाञ्जलिः ॥

वृत्त — शार्दूल°

११०

न संसारोत्पन्नं चरितमनुपश्यामि कुशलं
विपाकः पुण्यानां जनयति भयं मे विमृशतः ।
महद्भिः पुण्यौघैश्चिरपरिगृहीताश्च विषया
महान्तो जायन्ते व्यसनमिव दातुं विषयिणाम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

१११

आदित्यस्य गतागतैरहरहः संक्षीयते जीवितं
व्यापारैर्बहुकार्यभारगुरुभिः कालो न विज्ञायते ।
दृष्ट्वा जन्मजराविपत्तिमरणं त्रासश्च नोत्पद्यते
पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ॥

वृत्त — शार्दूल°

११२

क्षणं बालो भूत्वा, क्षणमपि युवा कामरसिकः,
क्षणं वित्तैर्हीनः, क्षणमपि च संपूर्णविभवः ।
जराजीर्णैरङ्गैर्नट इव वलीमण्डिततनुः,
नरः संसारान्ते विशति यमधानीजवनिकाम् ॥

वृत्त — शिखरिणी.

११३

प्रियसख ! विपद्दण्डव्रातप्रपातपरम्परा-
परिचयचले चिन्ताचक्रे निधाय विधिः खलः ।
मृदमिव बलात्पिण्डीकृत्य प्रगल्भकुलालवत्
भ्रमयति मनो नो जानीमो किमत्र विधास्यति ॥

वृत्त — हरिणी.

११४

माने म्लायति, खण्डिते च वसुनि,
व्यर्थे प्रयातेऽर्थिनि,
क्षीणे बंधुजने, गते परिजने, नष्टे शनैर्यौवने ।
युक्तं केवलमेतदेव सुधियां यज्जह्नुकन्यापयः-
पूतग्रावगिरीन्द्रकन्दरतटीकुंजे निवासः क्वचित् ॥

वृत्त — शार्दूल°

पाठान्तर — ४. नटीकुंज — दरीकुंज

११५

अभिमतमहामानग्रंथिप्रभेदपटीयसी
गुरुतरगुणग्रामांभोजस्फुटोज्ज्वलचन्द्रिका ।
विपुलविलसल्लज्जावल्लीविदारकुठारिका
जठरपिठरी दुष्पूरेयं करोति विडंबनम् ॥

वृत्त — हरिणी.

११६

ज्ञानं सतां मानमदादिनाशनम्
केषांचिदेतन्मदमानकारणम् ।
स्थानं विविक्तं यमिनां विमुक्तये
कामातुराणामतिकामकारणम् ॥

वृत्त — वंशस्थ.

११७

सिंहो बली द्विरदशूकरमांसभोजी
संवत्सरेण रतिमेति किलैकवारम् ।
पारावतः खरशिलाकणमात्रभोजी
कामी भवत्यनुदिनं वद कोऽत्र हेतुः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

११८

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहितः पुच्छविकलः
व्रणी पूयक्लिन्नः कृमिकुलशतरावृततनुः ।
क्षुधाक्षामो जीर्णः पिठरककपालार्पितगलः
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हन्त्येव मदनः ॥

वृत्त — शिखरिणी.

११९

कान्ताकटाक्षविशिखा न लुनन्ति यस्य
चित्तं न निर्दहति कोपकृशानुतापः ।
कर्षन्ति भूरिविषयाश्च न लोभपाशैः
लोकत्रयं जयति कृत्स्नमिदं स धीरः ॥

वृत्त — वसंततिलका.

पाठान्तर — १. लुनन्ति यस्य — खनन्ति यस्य.

सूक्तिसुधा

भर्तृहरिनां वचनो आपणा देशमां चलणी नाणानी पेठे वपराय छे. बधा ज प्रांतमां भर्तृहरिनो सरखो प्रचार होवाथी अने एनी विचारशैली बधे ज सरखी ग्राह्य होवाथी, एक रीते प्रजाकीय सांस्कृतिक एकता साधवामां आ वचनोनो फाळो मोटो अने कीमती नीवड्यो छे.

संस्कारी लोकोनां भाषणोमां अने लखाणोमां आ वचनो अवारनवार आववानां ज. राष्ट्रीय केळवणीमां आ वचनोने अवश्य स्थान होवुं जोईए. युवानो आ वचनो कंठस्थ करे ए जरूरनुं छे. केम के ए कहेवत पेठे वपराय छे अने एमांथी ज आपणी सभ्यता विकसी छे.

सुकविता यद्यस्ति, राज्येन किम् ?

*

व्रीडा चेत् किमु भूषणैः ?

*

पिशुनता यद्यस्ति, किं पातकैः ?

*

किं सर्पैर्यदि दुर्जनाः ?

*

क्षान्तिश्चेत् कवचेन किम् ?

*

शुचि मनो यद्यस्ति, तीर्थेन किम् ?

*

अपयशो यद्यस्ति, किं मृत्युना ?

*

ज्ञातिश्चेत् अनलेन किम् ?

*

सत्यं चेत्, तपसा च किम् ?

*

कल्पं स्थितं तनुभृतां तनुभिस्ततः किम् ?

*

ग्रस्तं न किं केन वा ?

*

संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः ?

*

निपुणता का ? धर्मतत्त्वे रतिः ।

*

का हानिः ? समयच्युतिः ।

*

राज्यं किं ? आज्ञाफलम् ।

*

कः शूरः ? विजितेन्द्रियः ।

*

सेवस्व विद्वज्जनम् ।

*

जहि मदम् ।

*

मान्यान्मानय ।

*

दुःखिते कुरु दयाम् ।

*

प्रच्छादय स्वान् गुणान् ।

*

विद्विषोऽप्यनुनय ।

*

पापे रतिं मा कृथाः ।

*

मोहं मार्जय ।

*

शान्तं भावमुपेहि ।

*

चेतः ! प्रसीदाधुना ।

*

विद्या परं दैवतम् ।

*

विद्या बन्धुजनो विदेशगमने ।

*

विभूषणं मौनमपण्डितानाम्

*

कवयो ह्यर्थं विनापीश्वराः ।

*

मूर्खस्य नास्त्यौषधम् ।

*

विद्याविहीनः पशुः ।

*

'प्रियं कृत्वा मौनं' पुरुषमभिजातं कथयति ।

*

नास्त्युद्यमसमो बंधुः ।

*

शीलं परं भूषणम् ।

*

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता ।

*

शौर्यस्य वाक्संयमः (विभूषणम्) ।

*

न निश्चितार्थाद्विरमन्ति धीराः ।

*

न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः ।

*

यं यं पश्यसि तस्य तस्य पुरतो मा ब्रूहि दीनं वचः ।

*

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ।

*

भोक्तुं न मोक्तुं क्षमाः ।

*

दौर्मन्त्र्यान्नृपतिर्विनश्यति ।

*

वचो हि सत्यं परमं विभूषणम् ।

*

न खलु वयस्तेजसो हेतुः ।

*

बलवान् कालः कृतान्तोऽक्षमी ।

*

कालाय तस्मै नमः ।

*

नहि शशक-विषाणं कोऽपि कस्मै ददाति ।

*

अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः ।

*

तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत् ।

*

हृदि स्वच्छा वृत्तिः ।

*

विपत्सूच्चैः स्थेयम् ।

*

अविनयमनुमन्तुं नोत्सहे दुर्जनानाम् ।

*

सन्तः साश्चर्यचर्याः ।

*

संसारे रे मनुष्याः! वदत यदि सुखं
स्वल्पमप्यस्ति किंचित् ।

*

भोगे रोगभयम् ।

*

गुणे खलभयम् ।

*

वित्ते नृपालाद्भयम् ।

*

शास्त्रे वादभयम् ।

*

आघ्रातं मरणेन जन्म ।

*

अस्थैर्येण विभूतयोऽप्युपहताः ।

*

कथमहो मोहान्न लज्जामहे !

*

वैराग्यमेवाभयम् ।

*

तृष्णा न जीर्णा, वयमेव जीर्णाः ।

*

स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला ।

*

वयमप्येकान्ततो निस्पृहाः ।

*

तल्पमस्वल्पमुर्वी ।

*

सन्तो वनान्तं गताः ।

*

मही रम्या शय्या ।

*

विपुलमुपधानं भुजलता ।

*

योगी सुखं तिष्ठति ।

*

आयुः कल्लोललोलम् ।

*

धर्म एको हि निश्चलः ।

*

बहुतृणं विश्वं मुहुः पश्यताम् ।

*

संत्यज निजां कल्लोललोलां गतिम् ।

*

लीये परे ब्रह्मणि ।

*

जीर्णमंगे सुभाषितम् ।

*

मौ क्ति का ञ्ज लिः

वाग्भूषणं भूषणम्

'सूक्तिसुधा' करतां जरा मोटां अने अर्थगंभीर एवां वचनोनी अहीं अंजली धरी छे. एनो हार बनावी कंठमां धारण करवाथी अनेक आपत्तिने वखत सदुपाय सूझे छे.

मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्।

*

संतः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः ।

*

सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्यः ।

*

मन्ये ते परमेश्वराः शिरसि यैर्बद्धो न सेवांजलिः।

*

न जाने संसारः किममृतमयः किं विषमयः ।

*

प्रतीकारो व्याधेः सुखमिति विपर्यस्यति जनः ।

*

पीत्वा मोहमयीं प्रमादमदिरामुन्मत्तभूतं जगत् ।

*

नीचस्य गोचरगतैः सुखमास्यते कः ?

*

न हि गणयति क्षुद्रो जन्तुः परिग्रहफल्गुताम् ।

*

विवेकभ्रष्टानां भवति विनिपातः शतमुखः ।

*

नोलूकोऽप्यवलोकते यदि दिवा,
सूर्यस्य किं दूषणम् ?

*

कुत्स्याः स्युः कुपरीक्षकाः, न मणयो
यैरर्घतः पातिताः ।

*

पत्रं नैव यदा करीरविटपे, दोषो वसन्तस्य किम्?

*

लक्ष्मीर्यत्र, पतन्ति तत्र विवृतद्वारा इव व्यापदः ।

*

कालः काल्या भुवनफलके क्रीडति प्राणिसारैः ।

*

तत्किं नाम निरंकुशेन विधिना यन्निर्मितं सुस्थितम्?

*

को देहीति वदेत्स्वदग्धजठरस्यार्थे मनस्वी जनः?

*

सर्वः कृच्छ्रगतोऽपि वांछति जनः सत्त्वानुरूपं फलम् ।

*

किं जीर्णं तृणमत्ति मानमहतामग्रेसरः केसरी ?

*

होतारमपि जुह्वानं स्पृष्टो दहति पावकः ।

*

तत्को नाम गुणो भवेत्स गुणिनां यो दुर्जनैर्नांकितः?

*

अवस्था वस्तूनि प्रथयति च संकोचयति च ।

*

वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते।

*

तृणमिव लघुलक्ष्मीर्नैव तान् (पंडितान्) संरुणद्धि।
न भवति बिसतंतुर्वारणं वारणानाम् ॥

*

अहह ! महतां निःसीमानश्चरित्रविभूतयः ।

*

कल्पांतेष्वपि न प्रयाति निधनं विद्याख्यमन्तर्धनम्।

*

अधोमुखस्यापि तनूनपातः
नाधः शिखा याति कदाचिदेव ।

*

स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमान्
एकः सतामग्रणीः ।

*

प्राप्येमां कर्मभूमिं न चरति मनुजो
यस्तपो मन्दभाग्यः ।

*

यद्यस्मासु पराङ्मुखोऽसि, वयमप्येकान्ततो
निस्पृहाः ।

*

सखे नान्यच्छ्रेयो जगति विदुषोऽन्यत्र तपसः।

*

सर्वं वस्तु भयान्वितं भुवि नृणां वैराग्यमेवाभयम् ।

*

वनं वा गेहं वा सदृशमुपशान्तैकमनसाम् ।

*

चेतःसद्मनि योगिनां विजयते ज्ञानप्रदीपो हरः ।

*

साहित्यसंगीतकलाविहीनः
साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः।

*

सतां प्रज्ञोन्मेषः पुनरयमसीमा विजयते ।

*

ज्ञानं सतां मानमदादिनाशनं
केषांचिदेतन्मदमानकारणम् ।

*

कलाशेषश्चन्द्रः, शरदि सरितः श्यानपुलिनाः ।
तनिम्ना शोभन्ते गलितविभवाश्चार्थिषु जनाः ॥

*

कूपे पश्य पयोनिधावपि घटो
गृह्णाति तुल्यं जलम् ।

*

तद्धीरो भव, वित्तवत्सु कृपणां वृत्तिं वृथा मा कृथाः॥

*

सर्वाशापरिपूरके जलधरे वर्षत्यपि प्रत्यहं ।
सूक्ष्मा एव पतन्ति चातकमुखे द्वित्राः पयोबिन्दवः॥

*

भोगः कोऽपि स एक एव परमो
नित्योदितो जृम्भते ।

*

यत्स्वादाद्विरसा भवन्ति विषयाः
त्रैलोक्य-राज्यादयः ॥

*

को वा वीचिषु बुद्बुदेषु च तडिल्लेखासु च
स्त्रीषु च ।
ज्वालाग्रेषु च पन्नगेषु च सरिद्वेगेषु च प्रत्ययः ॥

*

पुरा विद्वत्तासीदुपशमवतां क्लेशहतये ।
गता कालेनासौ विषयसुखसिद्ध्यै विषयिणाम् ॥

*

नृभिः प्राणत्राणप्रवणमतिभिः कैश्चिदधुना ।
नमद्भिः कः पुंसामयमतुलदर्पज्वरभरः ?

*

स तु भवतु दरिद्रो यस्य तृष्णा विशाला।
मनसि च परितुष्टे कोऽर्थवान् को दरिद्रः ॥

टिप्पण

नक्षत्रमाळा

१

विद्या — विद्–जाणवुं.

तपस् — तपश्चर्या. एवुं कठण काम के जे करवाथी शक्तिओ वधे. शारीरिक, वाचिक, मानसिक, तथा आत्मिक शक्तिओ जे कर्म वडे वधे छे तेने तपस् कहे छे.

[तपथी शक्तिओ वधे छे, ज्यारे भोगथी ते घटे छे. क्रोध के द्वेषथी पण तप क्षीण थाय छे.]

अन्वय — मर्त्यलोके चरन्ति ।

२

साहित्य — (१) विचारोना वाहन तरीके भाषानी केळवणीनुं शास्त्र. आने व्युत्पत्ति पण कहे छे. (२) भाषाना अभिजात ग्रंथराशिने पण साहित्य कहे छे. 'वाङ्मय,' अने 'सारस्वत' ए बे शब्दो आ ज अर्थना छे.

कला — मूंगो माणस पण जेमां फावी शके ते कला – एवी एक मजानी व्याख्या शुक्रनीतिमां आपेली छे.

विषाण — शींगडुं.

भागधेयम् — भाग्य, सद्भाग्य.

सरखावो : धर्मेण हीनाः पशुभिस्समानाः ।

३

यं (उद्यमं) कृत्वा (नरः) न अवसीदति ।

उद्योग करवाथी माणस पडतो नथी, तेनो नाश थतो नथी.

शत्रु बहारनो होय तो तेनाथी नासी जवाय, पण रोगनी पेठे शरीरमां ज बेठो होय तो तेनो समूळगो नाश न करीए तो ते आपणो सर्वनाश जरूर करवानो.

सरखावो : उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः ।

४

मूळ श्लोकमां 'को न याति वशं लोके' एवो पाठ हतो. पण कवि तो नीच लोको विषे ज कहेवा मागे छे. शीलवान पुरुषो लांचने वश थता नथी. जे मृदंग (माटीना अंगवाळा) होय ते ज 'लोट' मळवाथी मीठुंमीठुं बोले छे.

पिण्ड — भातनो के लोटनो गोळो, खावानुं, लांच.

५

ज्यां प्रेम होय छे त्यां स्व-पर एवो भेद होतो नथी, त्यां 'मारुं तारुं' कोई करतुं नथी. स्वार्थ के मत्सर वच्चमां आव्यो के तरत ज जुदाई शरू थाय छे.

अधुना — अहुणा, हमणां.

६

यः (वित्तं) **न ददाति न वा भुंक्ते तस्य** (वित्तस्य) **तृतीया गतिः** (नाशः) **भवति** ।

लोभथी अने कंजूसाईथी धननो संग्रह करवाथी कशो लाभ नथी. सोमनाथना मंदिरनी संपत्ति जेम लूंटाई तेम तेनो नाश ज थवानो. सरखावो :

कृपणेन समो दाता भुवि कोऽपि न विद्यते ।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति ॥

— व्यास

७

परिचर् — सेवा करवी.

स्वैरकथाः — सहेजमां बोलेलां वचनो.

पाठान्तर — २. ते न उपदेशम्–नो सदुपदेशम् ।

८

अंबरखण्ड —(१) वस्त्रनो ककडो, धोतियुं;
(२) आकाशनो भाग.

संवीतः — संव्ये–ढांकवुं, लपेटवुं, वींटाळवुं.

चन्द्रमाः — चन्द्रमस् नुं प्रथमा एकवचन.

दौर्गत्यं — कफोडी दशा, दुर्गति.

पौर्णिमानी रात्रे जे आकाशमां चंद्र फर्यो तेमां ज बीजे दिवसे सूरजने फरतो जोई, कविने थयुं के बे वच्चे एक ज धोतियुं छे. एके उतार्युं ते बीजो पहेरे छे !

९

वृत्ति — (१) गुजराननुं साधन, आजीविका;
(२) स्वभाव.

लुब्धक — शिकारी.

धीवर — माछी.

पिशुन — नीच, खल.

विहित — कृत, योग्य, निर्दोष.

संतोषविहितवृत्तिः — संतोषेण विहिता कृता वृत्तिः येन सः। यदृच्छालाभसंतुष्टः ।

सरखावो : अकारणाविष्कृतवैरदारुणाः (खलाः) ।

— बाण

१०

अफीणनो बंधाणी बिचारो अफीण शुं खाय ? अफीण ज तेने खाई जाय छे.

काळ अनन्त छे. आपणे काळ शुं वितावी शकवाना हता ? आपणे ज चाल्या जईए छीए.

वयमेव जीर्णाः — आपणे ज पची गया. भोग भोगववाथी तृष्णा ठंडी पडती नथी, आपणे ज ठंडा थईए छीए.

११

परिवर्तिन् — फरनार, चकडोळनी पेठे भमनार.

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।

— गीता

ते ज जन्मेलो कहेवाय के जेना जन्म्याथी एटले के पुरुषार्थ वडे वंशनी उन्नति थाय छे.

वंश — कुळ, खानदान, कोम, जाति.

१२

वरं — मनाक् प्रियम् । वधारे सारुं, बहेतर.

दुर्गम् — दुःखेन गम्यते यत्र । कठण जग्या, पहाड, किल्लो वगेरे.

भ्रान्तं — भटकवुं, रखडपट्टी.

वनचर — जंगली पशुओ, जानवरो.

वनेचर — जंगलमां वसनारा भील वगेरे माणसो.

'मूर्ख'ने ठेकाणे 'नीच' अथवा 'दुष्ट' पण वापरी शकाय.

१३

स्तबक — गुच्छो, गोटो.

मनस्विन् — तेजदार माणस; पराक्रमी, पुरुषार्थी, स्वाभिमान धरावनार.

सरखावो : नैसर्गिकी सुरभिणः कुसुमस्य सिद्धा
मूर्ध्नि स्थितिर्न चरणैरवताडनानि । — भवभूति.

पाठान्तरमां **मनास्विनम्**ने ठेकाणे **मनस्विनाम्** जोईए.

१४

लांगूल — पूंछडुं.

पिण्डदस्य — खवडावनारनो (आगळ)

गजपुंगव — श्रेष्ठ हाथी. पुंगव एटले बळद, पण अहीं 'श्रेष्ठ' एटलो ज अर्थ थाय छे.

तु — ज्यारे, बीजी बाजूए.

चाटु — खुशामतना शब्दो.

१५

प्रारब्धम् — शरू करेलुं.

प्रारभ्य चोत्तम॰ पाठमां खूबी छे. उत्तम लोको नीच लोको जेम डरे छे तेम न डरतां शरूआत करे छे अने प्रारंभ करीने (प्रारभ्य) मध्यम लोकोनी पेठे तेनो परित्याग पण करता नथी. सरखावो :

अनारम्भो हि कार्याणां प्रथमं बुद्धिलक्षणम् ।
प्रारब्धस्यान्तगमनं द्वितीयं बुद्धिलक्षणम् ॥

अने 'कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः' ।

१६

महार्हाः — महान् अर्हः (मूल्यं) येषां ते । मोंघा, कीमती.

भीमविष — भयंकर विष.

भीतिं न भेजिरे — बीक राखी नहि, सेवी नहि.

समुद्रमंथन वखते जे चौद रत्नो नीकळयां, तेमां हालाहल विष पण नीकळ्युं. छतां अमृत मळे नहीं त्यां सुधी देवदानवोए मंथन बंध राख्युं नहि.

कोई पण महान प्रयत्नने अंगे शरूआतथी ज अल्प लाभ अने महासंकटो आवे छे. अल्प फळोनो स्वीकार करवाथी तेटली तपस्या घटी जाय छे, अने महाफळ दूर दूर जाय छे.

१७

आज्ञा — हकूमत, सत्ता.

ब्राह्मणानाम् — ब्राह्मणादीनां सर्ववर्णानाम् । धर्मपराणां विदुषां वा । आने ठेकाणे 'सज्जनानां' के 'दुर्बलानां' एवुं मूकशुं ?

सत्ता, कीर्ति वगेरे छ लाभ (गुण) जो न थाय तो राजानो आश्रय करवामां शो सार ?

न प्रवृत्ताः — प्राप्त थता नथी, सधाता नथी.

१८

मोटा मोटा नागोना माथा पर एक मणि होय छे अने रात्रे तेनो प्रकाश चारे तरफ पडे छे, एवी एक मान्यता लोकोमां चालती आवेली छे. मणिमां अनेक सारा गुणो होय छे, पण सर्प तो भयंकर ज होय छे. दुष्ट माणस विद्वान के हुन्नरी होय तो ते वधारे भयंकर नीवडे छे.

१९

उत्पल — कमळ. **उत्पलकोमलं** — कमळ जेवुं कोमळ.

महा (मोटा) **शैल** (पर्वत)नी **शिलाना संघात** (समूह) जेवुं **कर्कश** (कठोर, मजबूत, अडग).

विपदि धैर्यम् । अथ अभ्युदये क्षमा ।

वैभव होय त्यारे मोटा लोको बीजानां दुःख जोई कोमळ थाय छे. तेमनुं हृदय झट पीगळी जाय छे. पण ज्यारे तेमना उपर विपत्ति आवी पडे छे त्यारे तेओ पोताना प्रत्ये कठोर थाय छे; कष्ट वेठतां डगता नथी, शील छोडता नथी.

२०

नीति — सदाचार, व्यवहारकुशळता, कुटिलता, दावपेच, एम विविध अर्थमां आ शब्द वपराय छे.

नीतिनिपुणाः — चतुर मुत्सद्दीओ.

लक्ष्मीः — संपत्ति, वैभव.

धीर — विचारवान, डाह्यो. धी (बुद्धि) चलावनार ते धीर.

'चार लोको कहे तेम चालवुं,' 'नुकसान न थाय एटलुं खास जोवुं,' 'पोताने बचावीने बने तो बीजानुं भलुं करवुं,' एम माननारा आजे घणा थया छे. तेथी ज आजनो जमानो हलको थयो छे. 'जे नेक देखाय

तेने ज वळगी रहेवुं, तेनी ज हिमायत करवी, अने तेम करतां जे आवी पडे ते खुशी साथे वधावी लेवुं,' ए लक्षण वीरयुगनुं छे.

२१

नम्राः — (१) नीचे नमेला; (२) विवेकी, विनयशील.

उद्गम — ऊगवुं ते.

घनाः — वादळां.

नवाम्बु — नवुं पाणी.

भूमिविलंबिनः — जमीन तरफ नीचे झूकेला.

अनुद्धता — उद्धत नहिं एवा, नम्र.

झाडो पोतानां फळो बीजाने आपे छे; मेघ पोतानुं पाणी बीजा माटे वर्षे छे; सत्पुरुषो पण पोतानी संपत्ति परोपकारमां खर्चे छे; अने तेम करतां ते त्रणे गर्व करता नथी, नम्र रहे छे.

२२

श्रुत — विद्या, शास्त्र, भणतर. वेदने श्रुति कहे छे.

श्रोत्रिय — विद्वान.

गुरुमुखथी सांभळीने विद्या ग्रहण करवामां आवती ते जमानामां आ शब्द तैयार थयो छे.

पाणि — हाथ.

दरेक वाक्यमां विभाति (शोभे छे) ए क्रियापद लेवुं जोईए.

२३

सारो स्नेही शुं शुं करे छे ते आ श्लोकमां वर्णव्युं छे.

मित्रम् — स्नेही.

गुह्यं — गुप्त राखवा योग्य वात.

काले — संकट समये, अणीने वखते.

न जहाति — छोडतो नथी.

२४

उपचीयते — वधे छे.

विमृशन्तः — विचार करवावाळा.

विपदा — विपत्तिथी.

मूंझाता नथी केमके विपत्ति टकवानी नथी.

२५

कन्दुकः — दडो.

कराघातैः — कर एटले हाथ, एना आघातोथी.

पातितः — पाडेलो.

उत्पतति एव — जरूर ऊछळे छे.

वृत्त — (१) शील, चारित्र्य; (२) गोळ.

साधुवृत्त — (१) सज्जन; (२) गोळ दडो.

स्थायिन् — कायम टकनार.

अस्थायिन् — न टकनार.

२६

आर्य (श्रेष्ठ) पुरुष पडे तो पण दडाना पडवा प्रमाणे पडे छे. एटले के तरत पाछो ऊछळे छे.

अनार्य (पामर) माणस तो जेम माटीनुं ढेफुं पडे तेम पडे छे.

२७

कदर्थित — पजवायेलो, दुःखित.

प्रमार्ष्टुम् — प्रमृज् – भूंसी नाखवुं.

तनूनपात् — अग्नि, देवता.

शिखा — ज्वाळा.

मशाल नीचे करीए तो पण ज्वाळा तो उपर ज जवानी.

टिप्पण

सद्बोधशतकम्

मंगलाचरण

दिक्कालाद्यनवच्छिन्न — दिशा, काळ इत्यादिथी अमर्यादित; स्थळकाळ वगेरेथी पर.

चिन्मात्रमूर्ति — चिन्मात्रं मूर्तिः यस्य । केवळ (शुद्ध) ज्ञान ए ज जेनुं स्वरूप छे ते.

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म । — तैत्तिरीयोपनिषद्

स्वानुभूत्येकमानाय — स्वानुभूतिः एव एकं मानं प्रमाणं ज्ञानसाधनं यस्य सः तस्मै । स्वानुभूति आत्मसाक्षात्कार ए ज जेने जाणवानुं एक साधन छे तेने.

१

प्रच्छन्न — गुप्त, गूढ.

गुप्त – रक्षाएलुं, सुरक्षित

संस्कृत साहित्यमां विद्यानी प्रशस्ति अनेक रीते थयेली छे:

विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।

सा विद्या या विमुक्तये ।

विद्याविहीनः पशुः — सरखावोः

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः ।

आ श्लोकमां घणा रूपको होवाथी अलंकार मालारूपक थाय छे.

२

मूर्धजाः — मूर्ध्नि जाताः मूर्धजाः । माथाना वाळ. (मूर्धन्–माथुं; जन्–जन्मवुं, पेदा थवुं.)

संस्कृता (वाणी) — शास्त्रसंस्कारयुक्ता ग्राम्यत्वादि दोषरहिता च । गीतामां तेनुं वर्णन आम कर्युं छे :

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।

वाग्भूषणं भूषणं – सरखावो

कामान्दुग्धे विप्रकर्षत्यलक्ष्मीं कीर्तिं सूते दुष्कृतं या हिनस्ति ।
तां चाप्येतां मातरं मङ्गलानां धेनुं धीराः सूनृतां वाचमाहुः ॥

— भवभूति

तेम ज

संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च ।

कुमारसंभव १–२८

३

प्ताङ्कुशाः — दानशीलाः, चातकाधाराः (श्लोक १५ जुओ)

सरखावो:

याञ्चा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा ।

मेघदूत

तेम ज

साधुरेवार्थिभिर्याच्यः क्षीणसत्त्वोऽपि सर्वदा ।
शुष्कोऽपि हि नदी मार्गः खन्यते सलिलार्थिभिः ॥

४

स्मयदूषिताः — गर्वथी दूषित.

अबोधोपहताः — अज्ञानग्रस्ताः

जीर्णमङ्गे सुभाषितम् — विद्या अने वचनचातुरी कोना आगळ व्यक्त करवी ? ते अंदर ने अंदर सुकाई गई छे.

अदेखाई, अहंकार अने अज्ञान के जडता ए त्रणे काव्य, साहित्य तेम ज कळानी साची कदर करवामां अन्तरायो छे.

५

चलाचल — अतिशय चंचळ. अतिशयता बतावया माटे 'चल'ने अहीं बेवडयुं छे. अने तेथी पहेला चलना अन्त्य अ नो आ थयो छे. चल+अचल एम पण रूप बनी शके छे अने त्यां अचलनो अतिचल एवो अर्थ थाय छे. नास्ति चलं यस्मात् तत् । सरखावो :

लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितम् ।

६

दुकूलं — नाजुक रेसानुं कपडुं; रेशमी कपडुं.

निर्विशेषः आधिक्यरहितः भेदरहितः **विशेषः** । महत्त्व वगरनो फेर, अन्तर

सरखावो : सर्वाः संपत्तयस्तस्य संतुष्टं यस्य मानसम् ।

उपानद्गूढपादस्य ननु चर्मावृतैव भूः ॥

— हितोपदेश

तथा संतोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ।

७

अज्ञः — जानाति इति ज्ञः; न ज्ञः अज्ञः ।

दुर्विदग्ध — कुसंस्कारी, अर्धदग्ध, दुर्विनीत. विदग्ध-सारी रीते बाळेलुं, परिपक्व, शुद्ध, संस्कार पामेलो, भणेलो.

सरखावो :

A little knowledge is a dangerous thing;
Drink deep or taste not the Castalian spring.
— Pope

८

द्विपः — द्वाभ्यां (शुंडया मुखेन च) पिबति इति द्विपः । हाथी.

सरखावो: अल्पविद्यो महागर्वी ।

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पंडितंमन्यमानाः ।
—कठोपनिषद

९

जुह्वान — आहुति आपतो – आपनार – माणस.

पावकः — अग्नि. पुनाति इति पावकः ।
दोषोने बाळीने पवित्र करनार.

सरखावो : हसन्नपि नृपो हन्ति ।

तेम ज राजसेवा मनुष्याणां असिधारावहेलनम् ।
पञ्चाननपरिष्वङ्गो व्यालीवदनचुंबनम् ॥
— कुवलयानन्द

१०

लोभः — प्राप्तेऽप्यर्थे अधिकप्राप्तीच्छा ।
लोभ बधां पापोनुं मूळ गणाय छे. लोभः पापस्य कारणम् ।

लोभः स्वल्पोऽपि तान् हन्ति श्वित्रं रूपमिवेप्सितम् ।

तान् — अखिलान् गुणान् । श्वित्र – कोढ.

पिशुनता — पाछळथी दोष काढवानी के चाडी खावानी टेव.

तीर्थम् — तीर्यते यत्र तत्तीर्थम् । घाट, पार ऊतरवानो मार्ग, आरो, पवित्र स्थान.

निजाः — पोतीकाओ, सगांवहालांओ.

अपयशो — सरखावो :

संभावितस्य चाकीर्तिः मरणादतिरिच्यते । — गीता

११

जहि — मारी नाख. हन्-मारवुं.

पदवी – मार्ग

१२

दुग्धजलभेदविधौ वैदग्ध्यम् — दूध ने पाणी जुदां पाडवानी हंसनी कळा संस्कृत साहित्यमां बहु गवाई छे. सरखावो : नीरक्षीरविवेके हंसालस्यं त्वमेव कुरुषे चेत् ।

विश्वेऽस्मिन्नधुनान्यः कुलव्रतं पालयिष्यति कः ॥

— भामिनीविलास

१३

विद्यमान — हस्ती धरावती वस्तु

शशकविषाण अथवा **शशशृङ्ग, वन्ध्यासुत, खपुष्प** इ. शब्दो असंभवित वस्तु माटे वपराय छे.

बोलवा उपरथी माणसनी लायकात जणाई आवे छे.

न नीचजातस्य ललाटशृङ्गम्, कुलप्रसूतस्य न पाणिपद्मम् ।
यथा यथा मुञ्चति वाक्यबाणं तथा तथा जातिकुलप्रमाणम् ॥

१४

दुधुक्षसि — तुं दोहवाने इच्छे छे. 'दुह्–दोहवुं'नु आ इच्छादर्शक रूप छे.

अनिशम् — हंमेश

अति संक्षेपने कारणे आ श्लोकमां बे उपमाओनुं मिश्रण (संकर) थयुं छे. सरखावो :

दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम् ।

— रघुवंश

१५

गोचर — ज्ञात, प्रत्यक्ष. गो (इन्द्रिय)+चर ।

अम्भोदवर — मेघश्रेष्ठ (अम्भस् + द + वर)

कार्पण्योक्ति — दीन वचन

चातक पक्षी विषे संस्कृत कविओनो संकेत छे के, ते आकाशमांथी पडतुं पाणी ज पीए छे अने बाकीनो वखत ते पडवानी राह जुए छे. ते उपरथी उत्कट प्रतीक्षा

माटे, चातकनी जेम राह जोवी एवी कहेवत थई पडी छे.
सरखावो : धरणीपतितं तोयं चातकानां रुजाकरम् ।

याचना करवानो प्रसंग आवतां स्वमान धरावनार माणसने केटली मनोवेदना थाय छे ते नीचेना श्लोकथी स्पष्ट थशे.

देहीति वक्तुकामस्य यद् दुःखमुपजायते ।
दाता चेत्तद्विजानीयात् दद्यात्स्वपिशितान्यपि ॥

— प्रसंगावलि

१६

अयस् — लोढुं, तांबुं

स्वात्याम् — स्वाति नक्षत्रमां सूर्य होय त्यारे समुद्रमांनी छीपो ऊघडे छे अने तेमां वरसादनां टीपां पडतां तेनां मोती थाय छे, एवी मान्यता छे.

पात्रविशेषे न्यस्तं गुणान्तरं व्रजति शिल्पमाधातुः ।
जलमिव समुद्रशुक्तौ मुक्ताफलतां पयोदस्य ॥

वराहमिहिर १८-१३

सोबत तेवी असर.

१७

ते — तेओ, जाणीता, लोकप्रसिद्ध.

कृशानु — अग्नि

कुदरती घटना उपरथी नैतिक तत्त्व घटाववुं अथवा तेनी उपर भावारोपण करवुं, ए आंग्ल कविओनी एक खासियत मनाय छे. पण ते भर्तृहरि जेवा प्राचीन कविमां पण बहु सुन्दर रूपमां मळी आवे छे.

मित्रापदं° — आपत्ति ज मित्रतानी साची कसोटी छे.

निकषग्रावा तु तेषां (मित्राणां) विपत् । —हितोपदेश

१८

एक दरिद्री माणसे स्मशानमां पडेला शबने पोताना दारिद्र्यभार साथे थोडा वखत माटे सादु करवा वीनव्युं. पण शबे विचार कर्यो के आ तो खोटनो वेपार छे तेथी एणे तेने जवाब न आपवानुं ज उचित मान्युं.

सरखावो : दारिद्र्यान्मरणाद् वा मरणं मे रोचते न दारिद्र्यम् ।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ॥
— मृच्छकटिक मां 'चारुदत्त

१९

मदः — हाथीना गंडस्थळमांथी झरतो मद, दान.

सत्त्ववत् — तेजस्वी, बळवान

सरखावो : तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते । — कालिदास

२०

पाद — पग, किरण

इनकान्तः — सूर्यकान्तमणि

निकृति — अपमान

यद्...तद् — जो...तो पछी.

धूळने विषे पण एक कविए आम ज कह्युं छे:

पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति ।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः ॥

२१

अव[illegible]र — कचरानो ढगलो, उकरडो

कृकवाकु — कूकडो (कृकेण गलेन वक्ति इति ।)

सरखावो : वनेऽपि सिंहा मृगमांसभक्षिणो
बुभुक्षिता नैव तृणं चरन्ति ।
एवं कुलीना व्यसनाभिभूता
न नीचकर्माणि समाचरन्ति ॥

२२

सरखावो :

इक्षोरग्रात्क्रमशः पर्वणि पर्वणि यथा रसविशेषः ।
तद्वत् सज्जनमैत्री विपरीतानां च विपरीता ॥

— शार्ङ्गधरपद्धति

वे दुर्जनो जो पासे आवे तो वखत जतां तेमनो संबंध वधारे ने वधारे बगडतो जाय छे, ज्यारे सज्जनोनो संबंध वधारे ने वधारे स्निग्ध थतो जाय छे.

२३

धैर्यम् दृढचित्तत्वम् ।
मनसो निर्विकारत्वं **धैर्यम्** सत्स्वपि हेतुषु ।
युधि विक्रमः — युद्धे चाप्यपलायनम् । —गीता
अभिरतिः — प्रीति, संग्रहेच्छा

२४

अकारणविग्रहः — कारण विना लडवाड.

सरखावो : अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात्कस्य भयं न विद्यते । — बाण

योषित् — स्त्री

असहिष्णुता — (तेमनो उत्कर्ष) सहन न थवो ते, अदेखाई

२५

प्रणयिता — भक्ति, निष्ठा (प्रणय–प्रेम, भक्ति)

प्रकृतिमहताम् – प्रकृत्या महताम्। स्वभावे मोटाओना।

करे श्लाध्यः त्यागः –

दानेन पाणिः (विभाति) न तु कंकणेन ।

मुखे सत्या वाणी – किं वाचां मण्डनम् ? सत्यम् । —शंकर

श्रुतमधिगतं च श्रवणयोः –

श्रोत्रं श्रुतेन एव (विभाति) न कुंडलेन ।

२६

पद्म - सूर्यथी विकसतुं कमळ

कैरव – चन्द्रथी विकसतुं कमळ, कुमुद

विकचीकरोति — विकसित करे छे, खीलवे छे. विकच – विगतः कचः यस्मात् । प्रफुल्ल, स्फुट. (कच–घडी)

नाभ्यर्थितोऽपि नो संबन्ध दिनकर, चन्द्र तथा जलधर त्रणे साथे लेवानो छे.

कृताभियोगाः — कृतः अभियोगः उत्साहपूर्वकः यत्नः यैस्ते । कृतोद्योगाः।

स्वभाव एवोन्नतचेतसां सतां परोपकारव्यसनं हि जीवितम् ।

२७

शाल्योदन:— शालि नामना चोखानो- कमोदनो-भात

मनस्वी — प्रशस्तं मन: अस्य अस्तीति । उदार – उन्नत – मनवाळो

कार्यार्थी — कार्यं अर्थयते इति । काम करवा मागनार (विद्यार्थी, धनार्थी इ. नी जेम)

सरखावो : सुखदु:खे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ ।

तेम ज क्रियासिद्धि: सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ।

२८

अभिमुखनिहत — सामी छातीए घवायेलो

साधुवाद: — ' साधु साधु ' इति वाद: उक्ति: । 'शाबाश,' ' शाबाश 'ना पोकारो, जयजयकार

तिष्ठतु तावत् — सरखावो :

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम् ।

— गीता

२९

अवधार्या — विचारवी घटे छे.

आविपत्ते: — मरण पर्यंत

विपाक: — (पच्-रांधवुं) राधवुं ते; पक्वता, फळ, परिणाम

अतिरभसकृत — अति उतावळथी करेलुं, वगर वचार्ये करेलुं

सरखावो : सहसा विदधीत न क्रियां, अविवेकः परमापदां पदम् ।
— भारवि

३०

दिशति — उपदेशे छे, बतावे छे, आपे छे.

अपाकरोति — (अप+आ+करोति) दूर करे छे. संस्कृतमां उपसर्गोनी मददथी अनेक अर्थभेद सहेलाईथी उपजावी अने बतावी शकाय छे.

सत्संगतिः° — सरखावो :

संगः सतां किमु न मङ्गलमातनोति । — जगन्नाथ पण्डित
सतां हि संगः सकलं प्रसूते । — सभातरङ्ग
सतां सद्भिः संगः कथमपि हि पुण्येन भवति ।
— भवभूति

३१

ऐश्वर्यम् — ईश्वरस्य भावः । स्वामित्व, वैभव

उपशमः — शान्ति, इन्द्रियनिग्रह, इन्द्रियजय

वित्तस्य° — सात्त्विक दाननुं आ लक्षण ज छे.

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं विदुः । — गीता

प्रभवितुः — निग्रहानुग्रहसमर्थस्य । प्रभुता धरावनारनुं

सरखावो :

ज्ञाने मौनं, क्षमा शक्तौ, त्यागे श्लाघाविपर्ययः ।
गुणा गुणानुबन्धित्वात् तस्य (दिलीपस्य) सप्रसवा इव ॥
— रघुवंश

शीलं° — सरखावोः कोऽलंकारः? शीलम् । — शंकर

३२

जलायते — जलमिव आचरति । जलवच्छीतलो भवति । आ अने बीज नामधातुओ छे, अने ते अय् प्रत्यय लगाडवाथी बने छे.

कुल्या — खाबोचियुं.

माल्यगुण — हारनो दोरो

समुन्मीलति — विकसे छे, प्रकाशे छे

सरखावो : अहौ वा हारे वा.........श्लोक ८९

३३

परितर्जयन्ती — धमकावती, बीक बतावती.

तर्ज् (बीक बतावती) उपरथी बनेलो तर्जनी शब्द अंगूठा पासेनी आंगळी माटे वपराय छे, कारण धमकावतां तेनो उपयोग थाय छे.

भिन्नघटात् इव अम्भः — फूटेला घडामांथी जेम पाणी

चित्रम् — विचित्र, आश्चर्यकारक

अहितम् — स्वविनाशहेतुभूतं कर्म । परापकारम्

३४

मानस — हे मन. कवि मनने उद्देशीने प्रश्न करे छे.

आत्मनीनं — आत्मने हितम् । आत्माने माटे हितकर.

आत्मलीनं — आत्मनि अन्तःकरणे लीनं गूढं स्थितं, न तु दूरस्थम् ।

भ्रान्त्यापि — भूलथी पण, क्यारेक पण

निर्वृतिः — शांति, मोक्षसुख, परमानन्द

सरखावो : तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीराः

तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् । — कठोपनिषद्

३५

अकिंचन — नास्ति किंचन यस्य सः । जेनी पासे कशुं नथी एवो, गरीब, पूरेपूरो अपरिग्रही

दान्त — इन्द्रियनिग्रहवान् ।

निग्रहो बाह्यवृत्तीनां दम इत्यभिधीयते ।

शान्त — यतचित्त, जेणे पोतानुं चित्त काबूमां राख्युं छे ते.

सुखमय — आनंददायी, सुखपूर्ण

सरखावो : संतोषामृततृप्तानां यत्सुखं शान्तचेतसाम् ।

कुतस्तद्धनलुब्धानां इतश्चेतश्च धावताम् ॥

— हितोपदेश

३६

चाटुल — खुशामतखोर

धृष्ट — अविनीत, निर्लज्ज, धीट.

अप्रगल्भ — बीकण, असंस्कारी, गामडियो.

अभिजात — संस्कारी, कुलीन, खानदान

गहनः — दुःखेनापि अवगन्तुं अशक्यः ।

सरखावो : वरं वनं वरं वह्निः वरं भारोपजीवनम् ।

पुंसां विवेकहीनानां सेवया न धनार्जनम् ॥

—सभातरङ्ग

भारोपजीवनम् — हमाली के वैतरुं करीने जीववुं ते.

३७

असुभंग — मरण. असवः-प्राणाः । आ शब्द बहु-वचनमां ज वपराय छे.

पदमनुविधेयं च महताम् — अनुयाहि साधु-पदवीम् । जुओ श्लोक ११

असिधाराव्रत — खांडानी धार उपर चालवा के सूवा जेवुं अघरुं व्रत, अति विकट कर्म.

सरखावो : क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया ।

दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥ —कठोपनिषद

३८

मध्येपृष्ठम् — पृष्ठस्य मध्ये इति मध्येपृष्ठम्-अव्ययीभाव समास. जेमके मध्येमहाभारतम् मध्येगङ्गम् इ.

कमठपति — कूर्मावतारी विष्णु

सः एटले **शेषः**

क्रोडाधीनं कुरुते — खोळामां ले छे.

३९

प्रदानं प्रच्छन्नम् — दान आपे ते तेनी कोई पण जातनी जाहेरात कर्या विना.

संभ्रमविधि—प्रत्युत्थानाभिवादनादिना आदरविधिना औत्सुक्यम् । ऊठीने उतावळथी सामा जई स्वागत करवुं ते. **संभ्रम** — आदर, उतावळ.

निरभिभवसार — निन्दारहित

अनुत्सेकः — निरभिमानता

सरखावो : श्लोक ३७

४०

क्षुत्क्षामः — क्षुधा क्षामः । भूखथी क्षीण थयेलो.

विपन्नदीधितिः — विपन्ना नष्टा दीधितिः दीप्तिः यस्य सः । नष्टतेज, तेजोहीन.

इभ — हाथी

केसरी — केसरः (याळ) अस्य अस्ति इति । सरखावो : यदि नाम दैवगत्या...(श्लोक २१मो)

४१

वाडव — वडवानल. समुद्रमां रहीने तेने शोषतो काल्पनिक अग्नि

संभृत — एकठी करेली

जीमूतः — जीवनस्य मूतः पटबन्धः-मेघ

सरखावो : यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः सोऽत्र जीवति ।
वायसाः किं न कुर्वन्ति चञ्च्वा स्वोदरपूरणम् ॥
—पंचतंत्र

तथा प्रजानामेव भूत्यर्थं स (दिलीपः) ताभ्यो बलिमग्रहीत् ।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुं आदत्ते हि रसं रविः ॥ — रघुवंश

४२

मनसि वचसि° — मनोवाक्कायैः पुण्यकर्माचरणे रताः । मन, वाणी अने कर्मथी पुण्यकर्म आचरनारा.

श्रेणि — हार, परंपरा.

पर्वतीकृत्य — पर्वत जेवुं करीने. आने 'च्वि' रूप कहे छे. अभूततद्भावे च्विः । पुत्रीकृतः धवलीकरोति इ.

४३

वितत — विस्तृत, श्रमपूर्वक करेलुं

पृथु — मोटुं, पहोळुं

मुखर — खूब बोलनार

दुर्मुख — जेनुं मोढुं पण न जोवाय एवो, दुष्ट

साश्चर्यचर्या: — आश्चर्यकारक आचरणवाळा

क्षान्त्यवा ... दूषयन्त: — आक्षेप के निंदाना कठोर शब्दोथी जेमनां मुख वाचाळ बन्यां छे एवा दुष्ट लोकोनी पिशुनताने पोताना क्षमाशील आचरणथी ज उघाडी पाडी तेमने जाणे टपको आपता, उतारी पाडता, तेमनुं हीनत्व स्पष्ट करता.

सरखावो:

अक्कोधेन जिने कोधं असाधुं साधुना जिने।

जिने कदरियं दानेन सच्चेनालीकवादिनम् ॥ —धम्मपद

तथा स्वार्थो यस्य परार्थ एव स पुमान् एक: सतामग्रणी: ।

श्लोक ४१

४४

लज्जा — दुष्कर्मनिवारणहेतुभूत: गुणविशेष: । व्रीडा इति यावत् ।

अनुवर्तमानाम् — सदाय पाछळ पाछळ आवती; रक्षण करती

सुखम् — सुखेथी

सरखावो:

परित्यजेयं त्रैलोक्यं राज्यं देवेषु वा पुनः ।
न त्वहं सत्यमुत्स्रष्टुं व्यवसेयं कथंचन ॥

महाभारते भीष्माचार्यः ।

४५

कूर्मः — कौ जले ऊर्मिः वेगः अस्य इति । जेनी पाणीमां गति छे ते – काचबो

निर्वाहः — चीवटपूर्वक नभाववुं, पार पाडवुं ते

प्रतिपन्नवस्तुषु — हाथमां लीधेली वस्तु, अंगीकृत कार्य.

गोत्रव्रतम् — कुलव्रत, कुलधर्म

सरखावो:

अद्यापि नोज्झति हरः किल कालकूटं
कूर्मो बिभर्ति धरणीं खलु पृष्ठभागे ।
अम्भोनिधिर्वहति दुःसहवाडवाग्निं
अङ्गीकृतं सुकृतिनः परिपालयन्ति ॥

रघुकुलरीति सदा चलि आई । प्राण जाहु बरु बचनु न जाई ।

— तुलसीदास

४६

तदीयद्विषाम् — तेना (केशवना) शत्रुओनुं-राक्षसोनुं

कुलं — रहेठाण, समूह

शिखरिन् — शिखरवाळो – पर्वत

संवर्तकाः— प्रलयकालवर्षिणः मेघविशेषाः प्रलयाम्रयः वा ।

ऊर्जितम् — अति बळवान, प्रभावशाळी

भरसह — भार सहन करे तेवुं

४७

उदन्वच्छन्ना — समुद्रथी ढंकायेली–मर्यादित थयेली.

उदन्वत् — उदकानि सन्ति अत्र इति । सागर.

कलयति — मापे छे. कल् क्रियापदना संस्कृतमां अनेक अर्थ थाय छे अने तेथी आ धातु कामधेनु कहेवाय छे. कलतिः कामधेनुः इति वैय्याकरणोक्तिः।

स्फुरदवधिमुद्रामुकुलिताः — लसत्परिच्छेद एव मुद्रा ('सील')तया मुकुलिताः पिहिताः परिच्छिन्ना इत्यर्थ : । स्पष्ट देखाती मर्यादानी छाप (मुद्रा–' सील ')थी ढंकायेली, परिच्छिन्न

भावाः (स्थावरजंगमाः) — (स्थावर जंगम) बधी वस्तुओ

प्रज्ञोन्मेषः — बुद्धिनो उन्मेष—विकास (खीलवुं ते) सरखावो :

इति परिमितिमन्तो भान्ति सर्वेऽपि भावाः
स तु निरवधिरेकः सज्जनानां विवेकः ॥

४८

परार्थघटकाः — पारकानुं हित साधनार

४९

स्थाली — स्थलति तिष्ठति अन्नमत्र इति । थाळी, तपेली

वैडूर्य — पोखराज.

तिलखली — तलनो खोळ

लांगल — हळ.

अर्कमूल — आंकडानुं मूळियुं

वृति — वाड

कोद्रव — कोदरो, एक हलकुं रुक्ष धान्य

कर्मभूमि — सत्कर्म करवा योग्य भूमि, मर्त्यलोक. 'भोगभूमि' अथवा 'फलभूमि' स्वर्ग माटे वपराय छे.

कर्मभूमिरियं ब्रह्मन् ! फलभूमिरसौ मता । — महाभारत

५०

हेमगिरि — सोनानो पर्वत, मेरु पर्वत. आ पर्वत पृथ्वीना मध्यमां आवेलो छे अने तेनी आसपास आखुं विश्व फरे छे. एवी पौराणिक मान्यता छे.

रजताद्रि — चांदीनो पर्वत, कैलास पर्वत. बरफथी ढंकायेलो होवाथी सूर्यप्रकाशमां चांदीना पतराथी मढेलो होय एवो देखाय छे.

तरवस्तरवः ते एव — ते वृक्षो (बदलाया विना) जेवां होय तेवां वृक्षो ज रहे छे.

मन्यामहे — मोटो गणीए छीए; मान आपीए छीए.

मलयः — हिन्दुस्तानना दक्षिणमां आवेलो पर्वत. तेना उपर चन्दननां झाड बहु थाय छे. ते उपरथी 'मलयज 'नो अर्थ चन्दन थाय छे.

सरखावो :

मलयाचलगन्धेन त्विन्धनं चन्दनायते ।
तथा सज्जनसंगेन दुर्जनः सज्जनायते ॥

५१

मघवन् — इन्द्र. मह्यते पूज्यते इति मघवन् – मघवा ।

कुलिश — वज्र.

दहनोद्गारगुरुभिः — अग्निनी ज्वाळाओथी दुःसह.

उद्गार — बहार आववुं ते, ज्वाळा

गुरु — भारे, दुःसह.

तुषाराद्रेः सूनुः — हिमालय पर्वतनो पुत्र, मैनाक पर्वत.

असौ संपातः — ते (पुराणोमां प्रसिद्ध एवुं) पतन.

पहेलां पर्वतोने पांखो हती. ते बधेय ऊडता अने प्राणीओने भारे त्रास आपता. एमनी सामे दाद मागवा मुनिओनुं शिष्ट मंडळ (deputation) इन्द्र पासे गयुं. प्राणीमात्रने आ ऊडता पहाडोना त्रासमांथी मुक्त करवा इन्द्रे पोताना वज्रथी पर्वतोनी पांखो कापी नाखी. ते वखते हिमालयनो पुत्र मैनाक पोतानो जीव बचाववा वायुनी मददथी समुद्रमां कूदी पडी संताई गयो. ए पौराणिक कथानो अहीं उल्लेख छे.

५२

भिन्न — नष्ट थयुं, नाश पाम्युं

मुदः (मुद् नुं बहुवचन) आनंद, संतोष, मनःस्वास्थ्य

इत्थम् — आम, आवी स्थितिमां

तादृक् — तेवो, अमर्याद

स्वात्मन्येव...महिमा° — जेना सोनानुं महत्त्व पोतानी अंदर ज समाप्त थयुं छे तेवो, जेना सोनानो बीजा कोईने लाभ नथी एवो.

अभिन्ना मृदः — माटीथी जुदो नथी एवो, माटी समान

५३

कृमिकुलचित — जीवडाओनी आबादीथी भराई गयेलुं — खदखदतुं

जुगुप्सा — घृणा. गुप् (रक्षण करवुं)नुं इच्छादर्शक रूप छे, पण ते आ ज खास अर्थमां वपराय छे

न शंकते — शरमातो नथी

फल्गुता — तुच्छता, असारता

सरखावो : त्यक्तलज्जो राज्यभाग् इव ।

अथवा तो त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

५४

व्याल — दुष्ट गज, भयंकर भुजंग. सरखावो : न भवति बिसतन्तुर्वारणं वारणानाम् । श्लोक ६० मो

समुज्जृम्भते — प्रयत्न करे छे.

वज्रमणि — हीरो

संनह्यते — तैयार थाय छे.

सुधास्यन्दि — अमृत स्रवनार, अतिमधुर.

सूक्त(सु+उक्त) – सुभाषित

सरखावो :

न दुर्जनः सज्जनतामुपैति बहुप्रकारैरपि सेव्यमानः ।
भूयोऽपि सिक्तः पयसा घृतेन न निम्बवृक्षो मधुरत्वमेति ॥

८८

प्रसह्य — बलात्कारथी, खूब बळ वापरीने

मकर — मं विषं किरति इति । मगर

प्रचलदूर्मि॰ — प्रचलन्त्यः ये ऊर्मयः तेषां मालाभिः आकुलः तम् ।

प्रतिनिविष्ट — सामो थईने बेठेलो, दुराग्रहाक्रान्त, जिद्दी.

सरखावो : ज्ञानलवदुर्विदग्ध.

अने

अरण्यरुदितं कृतं शवशरीरमुद्वर्तितं
स्थलेऽब्जमवरोपितं सुचिरमूषरे वर्षितम् ।
श्वपुच्छमवनामितं बधिरकर्णजापः कृतो
धृतोऽन्धमुखदर्पणो यदबुधो जनः सेवितः ॥ कुवलयानन्द

५६

सिकताः — रेती. वालुकाः नी जेम हंमेश बहुवचनमां वपराय छे.

पीडयन् — घाणीमां पीलनार–पीलीने. पीड्-दबाववुं

शशविषाण — ससलानुं शींगडुं (असंभवित वस्तु)

बोलवानी साथे ज जे बे वस्तुओनो विरोध के असंभाव्यता स्पष्ट थाय तेने 'वदतो व्याघात' कहे छे. एवी साव असंभवित वस्तुओना दाखला नीचेना श्लोकमां एकत्र आणेला छे:

एष वन्ध्यासुतो याति खपुष्पकृतशेखरः ।
मृगतृष्णाम्भसि स्नातः शशशृङ्गधनुर्धरः ॥

५७

तानि — तान्येव.

सकलानि — अविकलानि

अप्रतिहता — अकुंठित

उष्मन् — गरमी, हूंफ

दाटेला खजाना उपर रहेतुं उंदर जेवुं प्राणी पण धननी गरमी (हूंफ)थी कूदको मारी खींटीए भेरवेली भिक्षानी झोळीमांथी खाई शके छे, एवी पंचतंत्रना कविए वार्ता कही छे ते अहीं याद आवे छे.

उष्मापि वित्तजो वृद्धिं तेजो नयति देहिनाम् ।

— द्वितीयं तंत्रम्

५८

उपस्कृत — अलंकृत, शणगारेल, संस्कार आपेल

प्रदेय — आपवा योग्य

आगम — विद्या, वेद

विषय — देश

कुत्स्य — निंद्य, हलको (कुत्सा – निंदा परथी)

यैः अर्घतः पातिताः — जेमणे ओछी किंमत आंकी

अर्घ — किंमत, मूल्य.

सरखावो :

कनकभूषणसंग्रहणोचितो यदि मणिस्त्रपुणि प्रणिधीयते ।
न स विरौति न चापि हि शोभते भवति योजयितुर्वचनीयता ॥

— सभातरंगे

(त्रपु – सीसुं, कलाईनी धातु)

५९

ह्रीमति — लज्जावाळा(मां)

मुनिः — मूंगो, मौनसेवी

विमतिता — बुद्धिहीनत्व, मूर्खता

अवलिप्तता — गर्विष्ठपणुं

मुखरता — वाचाळपणुं. निन्दितं मुखं यस्य विद्यते स मुखरः । तस्य भावः तत्ता ।

अङ्कितः — अङ्क – चिह्न, डाघो. ते उपरथी अङ्कित – अंकयुक्त, डाघवाळुं, दूषित, वखोडायेलो.

सरखावो : मौनान्मूकः इ. श्लोक ३६.

आवी परिस्थितिमां बीजा एक कविनो नीचेनो उपदेश ज ग्राह्य छे.

विद्यते न खलु कश्चिदुपायः सर्वलोकपरितोषकरो यः ।
सर्वथा स्वहितमाचरणीयं; किं करिष्यति जनो बहुजल्पः ? ॥

अथवा :—

सर्वथा व्यवहर्तव्यं; कुतोह्यवचनीयता ? — भवभूति
को लोकमाराधयितुं समर्थः ।

६०

अधिगतपरमार्थाः — ज्ञानरूप परम तत्त्व जेमणे हांसल कर्युं छे तेओ

मा अवमंस्थाः—अवगणना करीश नहि.

ह्यस्तन भूतकाळनुं रूप मा साथे निषेधात्मक आज्ञार्थना अर्थमां वपराय छे.

संरुणद्धि— अटकावे छे, रोके छे, रोकी शके छे

वारणं — बंधन, प्रतिरोधक. **वारणः** — हाथी

६१

गोचर — गावः (इन्द्रियाणि) चरन्ति अस्मिन् इति – इन्द्रियोनो प्रदेश–विषय

किमपि — अवर्णनीय

शम् — कल्याण. शम्+कर – शंकर

प्रतिपाद्यमान — दीयमान, अर्पण थतुं

कल्पान्तेऽपि — कल्प एटले ब्रह्मानो एक दिवस. ते ४३२ करोड वर्षनो थाय. १००० युगोनो एक कल्प थाय छे. कल्प एटले त्रैलोक्य पण थाय छे.

पुनर्जन्मना सिद्धान्त मुजब आ जन्ममां प्राप्त करेली विद्या तेम ज संस्कारो बीजा जन्ममां पण आपोआप प्राप्त थाय छे. विद्या कुलजनवधूरिव जहाति नो जन्मजन्मानि ।

हर्तुर्न गोचरं याति, दत्ता भवति विस्तृता।
कल्पान्तेऽपि क्षयं नैति, विद्यारत्नं महद्धनम् ॥

तान्प्रति मानमुज्झत — तेमनी साथे अहंभावनुं वर्तन छोडी दो.

६२

प्राणाघाता — प्राणीवधमांथी निवृत्ति. ' न हिंस्यात् सर्वाणि भूतानि ' इति श्रुतिः ।

काले — योग्य वखते

शक्त्या — यथाशक्ति । शक्त्यनुसार

युवति......परेषाम् — पारकानी स्त्री विषे वातचीत न करवी ते.

अनिर्वर्णनीयंहि परकलत्रं नाम । शाकुन्तल ५

विभंगः — नाश.

सामान्यः — सर्वशास्त्रसाधारणः सर्वलोकसाधारणः सार्ववर्णिकः इति यावत् । सार्वभौम

अनुपहितविधिः — अनुपहतः विधिः यस्य — जेनुं विधान (करवुं) अकुंठित रहे छे – जे परिणाम आपवामां चूकतुं नथी, अमोघ. (२) बीजा कोई पण शास्त्रने आडे न आवनार.

मनो रागादिरहितं वागदुष्टानृतादिना ।
हिंसादिरहितं कर्म तदेवेश्वरपूजनम् ॥
– एक आधुनिक संन्यासी

६३

किं — 'किंप्रयोजनम्'ना अर्थमां तेनी जेम ज तृतीया साथे 'किम्' वपराय छे.

ज्ञाति — न्यात, दायादो. तेमां कुसंप ने कजियो होय एटले धूळधाणी थवानी ज.

सुहृद् — मित्र (शोभनं हृदयं यस्य); सारुं हृदय (शोभनं निर्मलं हृदयं मनः)

किं सर्पः°—

विषधरतोऽप्यतिविषमः खल इति न मृषा वदन्ति विद्वांसः ।
यदयं नकुलद्वेषी सकुलद्वेषी पुनः पिशुनः ॥

सुकविता यद्यस्ति राज्येन किम् — सारुं काव्य रचवानी शक्ति होय तो राज्यनी शी जरूर ? लोकोनां हृदयो वश करवानी शक्ति होय तो हुकूमतनी जरूर शी ?

अनवद्या — वद्या एटले बोलवा योग्य, स्तुत्य. अवद्या – निंद्य । न अवद्या अनवद्या – अनिंद्य, स्तुतिने पात्र

६४

विषमस्थित — संकटमां के अगवडमां आवी पडेलो

प्रमत्त — भानवगरनो

सरखावो :

अरक्षितं तिष्ठति दैवरक्षितं सुरक्षितं दैवहतं विनश्यति ।

६५

प्रत्यक्षम् — अक्ष्णोः प्रति । अव्ययीभाव समास अक्षम् इन्द्रियम् प्रतिगतम् । तत्पुरुष

परोक्षं प्रत्यक्षं कुरुते — अज्ञातने सुज्ञात बनावे छे.

भगवतीम् सत्क्रियाम् आराधय — ऐश्वर्यवती सत्क्रियानी आराधना कर.

व्यसनैः (संकटैः) **विपुलेषु गुणेषु** — जे साधवामां अनेक संकटो के मुश्केलीओ वेठवी पडे छे तेवा गुणो विषे.

विपुलेषु गुणेषु व्यसनैः आस्थां मा कृथाः — अनेक गुणो प्राप्त करवा पाछळ पडीश नहि. व्यसन-आसक्ति

'सर्वं पदं हस्तिपदे निमग्नम्' ए न्याये बधा ज गुणो 'भगवती सत्क्रिया' (सदाचार)मां आवी जाय छे.

६६

गृहे — घरमां, कोठामां, खानामां

प्राणिसाराः — प्राणी रूपी सोगटां

अक्षौ — रात अने दिवसरूपी बे पासा.

पाठान्तरोमां **बहुकलः** कालनुं विशेषण; **बहुकलम्** क्रियाविशेषण.

'काल' अने 'काली'नो केटलाक टीकाकारो शंकर अने पार्वती एवो पण अर्थ करे छे. जगतनो संहार करवानुं काम तो शंकरनुं छे ज. शंकर अने पार्वतीनी सोगटां रमवानी वात पण आपणी पौराणिक कथाओमां प्रचलित छे.

६७

दुर्ग — दुर्गम स्थान. दुःखेन गम्यते अत्र इति ।

विषम — विकट

सेवा कृता निष्फला — (नीचोनी) निष्फल सेवा करी 'a thankless task.'

काकवत् — कागडानी जेम

काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुंक्ते ।

आशङ्कया — डरथी, बीतां बीतां, कागडनी जेम कोई हांकी काढशे ए बीकथी.

जृम्भ् — बगासुं खावुं, मों पहोळुं करवुं, वधवुं.

अङ्गं गलितं, पलितं मुण्डं, दशनविहीनं जातं तुण्डम् ।
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं, तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् ॥

— शंकराचार्य

६८

रहस्यम् — खानगी वात (चाले छे)

विश्वेशितुः — (विश्व + ईश्) विश्व उपर राज्य करनार ईश्वरना, शंकरना

निर्दौवारिकनिर्दयोक्ति — निर्गताः दौवारिकाणां निर्दयोक्तयः यस्मात् तत् निर्दौवारिकनिर्दयोक्ति । अतः **अपरुषम्** ।

द्वारि नियुक्तः **दौवारिकः** – द्वारपाळ

पाठान्तरमां **निर्दौवारिक...क्तपरुषम्** आ आखो एक समास छे.

६९

शलभः — पतंगियुं

दीपदहने — दीवानी ज्योति उपर

बडिशयुत — आंकडावाळुं

विजानन्तः — विषयाणां विनाशहेतुत्वं सम्यगव-गच्छन्तः ।

विपज्जालजटिलान — दुःखो के संकटोनी जाळथी के परंपराथी व्यापेला.

शब्दादिभिः पञ्चभिरेव प . .त्वमापुः स्वगुणेन बद्धाः ।
कुरंग-मातंग-पतंग-मीन-भृंगाः नरः पञ्चभिरञ्चितः किम् ॥

— शंकराचार्यः

'अञ्चित – ग्रस्त'

कुरंग, मातंग वगेरे एक एक विषयना भोग बने छे, ज्यारे बुद्धि होवा छतां माणस तो पांचेयनो भोग बने छे.

७०

अरुजम् — रोग रहित. न विद्यते रुक् रुजा यस्मिन्

अप्रतिहत — अकुंठित

सरखावो : महता पुण्यपण्येन क्रीतेयं कायनौस्त्वया ।
पारं दुःखोदधेर्गन्तुं तर यावन्न भिद्यते ॥

मोहमुद्गर

तथा न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।

७१

शयनमवनिपृष्ठम् — शय्या भूमितलम्

अनुमन्तुं नोत्सहे — (हुं) सांखी शकतो नथी

नवधनमधुपान° — नवा ज मळेला द्रव्यना मदथी उन्मत्त – आंधळा – थयेला

सरखावो:

फलं स्वेच्छालभ्यं ... सहन्ते संतापं तदपि धनिनां द्वारि कृपणाः । — भर्तृहरि

७२

कैश्चित् — ब्रह्माए जगत सरज्युं तेनो तेम ज तेना मरीचि, पुलह इ. मानसपुत्रोनो अहीं उल्लेख छे.

अपरैः — विष्णु तथा तेना कूर्मादि अवतारो तेम ज मान्धाता वगेरे राजाओ अहीं सूचित छे.

अन्यैः — परशुराम, बलि वगेरेए पृथ्वी जीती तेने दानमां आपी तेनो उल्लेख छे.

अन्ये धीराः — अनेक प्रख्यात राजाओ आ पदमां आवी शके.

चतुर्दश भुवनानि — भूः, भुवर्, स्वर् इत्यादि चौद लोको. एमां सात उपरना तथा सात नीचेना लोकोनो समावेश थाय छे.

७३

उपासितगुरु° — उपासितः सेवितः यः गुरुः तस्मात् लब्धा या प्रज्ञा तस्याः अभिमानेन उन्नताः।

प्रतन्वन्ति — फलावे छे.

स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।

मानधन — मान-स्वमान-जेनुं धन छे ते

मानद — (१) मानं ददाति इति। बीजाने मान आपनार. (२) मानं द्यति (शत्रूणाम्) इति। बीजाना (शत्रुना) मानना नाश करनार.

पराङ्मुख — पराक् मुखं यस्य सः। बेपरवा.

एकान्ततः — अत्यन्त, पूरेपूरा

७४

अभुक्तायां यस्याम् — अहीं पृथ्वीने साधारण स्त्री-पण्य स्त्री-जोडे सरखावी छे. यस्यां नृपशतैः अभुक्तायां क्षणमपि न यातम् इति अन्वयः।

पतयः — पतिओ, राजाओ.

प्रत्युत — ऊलटुं, ने बदले

७५

मृत्पिण्डो° — अहीं समुद्रवलयांकित पृथ्वीने कवि एक अणु तरीके ओळखावे छे.

भृशं दरिद्राः क्षुद्राः (राज्ञां गणाः) **तत्किमपि दधुः अथवा न ददते** — माटीना गोळाना ककडा माटे लडनारा भिखारा अने क्षुद्र एवा आ राजाओ मागनाराओने कंईक आपे ने न पण आपे.

भागीकृत्य — भाग पाडीने, वहेंची लईने

७६

परपिण्ड — परान्न

सावमान° — अपमान वेठीने पण, पारका पासे भीख मागीने जीववामां राचनारा.

७७

किं लोभाय — 'भवति' अहीं अध्याहृत छे. चतुर्थीनुं रूप **लोभाय** परिणाम बतावे छे.

शफरी — नानकडी माछली

स्फुरितेन — हालचालथी, स्फुरणथी.

जातु — खरेखर, कदी.

७८

सिंहः — हिनस्ति इति सिंहः । वर्णविपर्ययात्

सत्त्वानुरूप — पोताना बळ के महत्ताने अनुरूप - शोभे तेवुं

मांस — मनुए मांसनी व्युत्पत्ति आम आपी छे:

मां स भक्षयिताऽमुत्र यस्य मासमिहाद्म्यहम् ।
एतन्मांसस्य मांसत्वं प्रवदन्ति मनीषिण: ॥

सरखावो : सिंह: शिशुरपि इति १९ श्लोक:

७९

तुलितबिसिनी° — कमळना पांदडा उपरना पाणी साथे जेने सरखाववामां आवे छे (तेवा अस्थिर, चंचळ प्राण)

नलिनीदलगतजलमतितरलम् तद्वज्जीवितमतिशयचपलम् ।
—शंकराचार्य

विवेक — सारानरसानो विचार

आढ्य — संपन्न. धन + आढ्य = धनाढ्य. गुणाढ्य

नि:संज्ञ — बेभान, मूढ

निजगुणकथा° — आत्मस्तुति करवामां पाप रहेलुं छे.
इन्द्रोऽपि लघुतां याति स्वयं प्रख्यापितै:गुणै: । सुभाषित
ब्रुवते हि फलेन साधवो न तु कण्ठेन निजोपयोगिताम् ।
नैषधीय° २–४८

सरखावो:

जठरकुहरी दुष्पूरेयं करोति विडंबनम् ।

८०

प्रसादं नेतुम् — प्रसन्न के खुश करवा माटे

प्रसन्ने त्वय्येव — तुं पोते ज प्रसन्न-संतुष्ट-थाय त्यारे

चिंतामणि — इच्छित वस्तु आपनार काल्पनिक मणि

स्वयमुदित...गुणे — स्वयमुदिनाः चिन्तामणिगुणाः यस्मिन् तस्मिन् ।

विमुक्तः संकल्पः — बधी तृष्णानो ज्यारे त्याग करायो होय – अन्त आव्यो होय – त्यारे कई इच्छित वस्तु प्राप्त करवानी बाकी रहे छे ? त्यारे बधी ज इच्छाओ तृप्त थयेली गणाय.

८१

विद्वद्गोष्ठी — विद्वानोनो वार्तालाप, काव्यशास्त्र-विनोद

गोष्ठो — गावः अनेकाः वाचः तिष्ठन्ति अस्याम् – सभा, संभाषण.

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन तु मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा ॥

गलत्कुष्ठवपुषः : — गलत्कुष्ठानि वपूंषि यासां ताः (रामाः)

८२

समारंभाः : — शरू करेलां कार्यो

पशु — अनुभवथी जे डहापण शीखतो नथी तेवो माणस, पशु जेवो जड

प्रत्याशा — तृष्णा

अ[illegible] — वज्र जेवो कठण पथ्थर

घटित — बनेलुं

आ संसारनी भोगविलाससृष्टि झांझवानां जळ जेवी छे. तेनी पाछळ पडतां माणस केटलीये वार भग्नाश थाय छे. तोपण तेनी नफटाई एटली अनहद छे के ते पशुनी जेम फरी फरी तेनी ज पाछळ दोडे छे. तेथी तेनुं हृदय पथ्थर जेवुं कठण ज होवुं जोईए, एम कवि कहे छे.

८३

अधिनिवस् — आ क्रियापद बीजी विभक्ति ले छे.

सुरनदीम् अधिनिवसाम: — यतिधर्मेण इत्यर्थः

दारान् परिचराम: — गृहस्थधर्मेण अनुनयामः

गुणोदारान् — गुणैः उदारान् । सद्गुणी (स्त्रीओने)

८४

अज्ञानमूढो जनः — अज्ञानने लीधे मोहमां पडेलो.

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः । — गीता

संख्यातिग — अगणित, संख्यानी पार

संदृश्य — निहाळीने, जोईने

सरखावो: अतो विमुक्त्यै प्रयतेत विद्वान् ।

संन्यस्तबाह्यार्थसुखस्पृहः सन् ।

८५

यद्वक्त्रं मुहुरीक्षसे — बीजाना मोढा तरफ वारेवारे जोवुं ए दैन्यनुं लक्षण छे.

चाटु — खुशामत

प्रत्याशया — पैसा वगेरे मळशे एवी आशा के लालचथी.

कवि अहीं अन्योक्ति द्वारा साधुचरित माणसना गुणोनुं वर्णन करे छे.

८६

सरसफल...शाखाः — अन्नवस्त्रनी प्राथमिक जरूरियातो पूरी पाडनारी तरुशाखाओ

वीक्ष्यन्ते यन्मुखानि — सरखावो : यद् वक्त्रं मुहुरीक्षसे श्लोक ८५.

प्रसभमपगतप्रश्रयाणाम् — साव विनयशून्य थयेला

दुःखोपात्ताल्प......भ्रूलतानि — 'मुखानि'नुं विशेषण छे. दुःखेन अत्यन्तकष्टेन उपात्तं संपादितं तदल्पमपि यद्वित्तं धनं तेन यो स्मयो गर्वः स एव पवनो वातः तद्वशात् नर्तिताः चलिताः भ्रूलताः येषां तानि (मुखानि)।

सरखावो : गंगातरंगहिमशीकर इ. श्लोक ७६

८७

योगनिद्रां गतः — योगनिद्रा के समाधिमां मग्न थयेलो. योगः विषयान्तरव्यावृत्तिः तद्रूपा निद्रा ।

अभ्यसनम् — अभ्यासः

किं तैः भाव्यं मम सुदिवसैः — एवा मंगल दिवसो हुं जोईश खरो ? एवा सारा दिवसो मने आवशे खरा ?

शृङ्गकण्डूविनोदम् — शींगडुं खंजवाळवानो विनोद – आनंद.

पोतानामां अहिंसा दृढमूल थतां आसपासनां प्राणीओ स्वाभाविकपणे ज निर्भय थाय छे. अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः । — योगदर्शन

८८

परं ज्योतिः — ब्रह्म

आनंदाश्रुजलं पिबन्ति शकुनाः —
सरखावो : संप्राप्स्यन्त जरठहरिणाः इ. श्लोक ८७

अंकेशयाः — अङ्के शेरते ते अंकेशयाः (अलुक् समास) – खोळामां सूतेला.

मनोरथोप ... कौतुकजुषाम् 'अस्माकम्' नुं विशेषण छे.

मनोरथोपरचितप्रासाद — हवाई बंगला

अस्माकं आयुः परिक्षीयते — अमारी जिंदगी वही जाय छे.

८९

मणौ वा लोष्ठे वा —सरखावो: समलोष्ठाश्मकाञ्चनः।

स्त्रैणम् —स्त्रीओनो समूह

स्त्रैणना त्रण अर्थ थाय छे. १. स्त्रीओनो समूह, २. स्त्रीपणुं, ३. स्त्रीओने वशवर्ती.

समदृशः—समा समाना दृक् यस्य सः समदृग् । तस्य ।

पुण्यारण्ये — तपोवने

९०

उषित्वा — रहीने

स्वयम् — पोतानी मेळे

अतुलपरितापाय —आ चतुर्थीनुं पद परिणाम बतावे छे. °परितापं दातुम् ।

विषयोनो वियोग अनिवार्य ज छे, तो तेमनो त्याग करवानुं श्रेय आपणे ज केम न लेवुं? एम करतां पामरतामांथी तेम ज अनेक विटंबणामांथी बची जवाय छे, अने अपार शांतिनुं सुख मळे छे.

शमसुखमनन्तम् — अपार शान्तिनुं सुख.

यच्च काममुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम् ।

तेम ज गीतामां

तृष्णाशमसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम् ॥

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः ।

निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥

९१

तथापि — तोपण. अहीं 'तस्माद्धि' (तथी)ना अर्थमां लेवुं घटे.

समस्त जगत कर्माधीन छे; तेथी डाह्या माणसे विचार करीने काम करवुं घटे.

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता, परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसूत्रग्रथितो हि लोकः॥
— योगवासिष्ठ

९२

हतविधि — हत - दुष्ट, मूओ. 'दग्ध' पण आ अर्थमां वपराय छे.

विधिः — विधि (नसीब), ब्रह्मदेव

प्रतिनियत — कोई पण कार्यनुं चोक्कस एवुं कोई एक फळ आपवानी शक्ति धरावनारो (गमे तेवुं फळ आपवानी अशक्ति आमां ध्वनित छे).

न हि कर्माणि क्षीयन्ते । — महाभारत

फलं कर्मायत्तम — वावे तेवुं लणे, ए न्यायथी फळ कर्माधीन छे.

न येभ्यः प्रभवति — जेमनी आगळ एनुं कशुं चालतुं नथी.

कर्मनो अटल नियम अहीं बताव्यो छे.

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति ॥

कुलालवत् नियमितः—कुंभारनी जेम (ब्रह्मांडरूपी वासणनी अंदर) अनेकविध सृष्टि उत्पन्न करवाना काममां निमायेलो, रखायेलो–रखायो, रोकवामां आव्यो.

गहन — अरण्य, त्रासदायक

रुद्रः — रोदयति (असुरान्) इति रुद्रः ।

कपालपाणिपुटके — कपाले च पाणिपुटके च ।

स्वयं महेशः, श्वशुरो नगेशः, सुतो गणेशश्च, सखा धनेशः ।
तथापि भिक्षाटनमेव शम्भोः ; बलीयसी केवलमीश्वरेच्छा ! ।

सूर्यो भ्राम्यति — सरति आकाशे इति सूर्यः । सुवति कर्मणि लोकं प्रेरयति इति वा । पहेली त्रण लीटीथी अहीं वाक्यरचना जुदी पडे छे. आने '**प्रक्रमभंग**' कहे छे

कर्मनो कायदो कोई पण उथापी शकतुं नथी. बधाने एने तावे थवुं ज पडे छे. ऋत (The Immutable Law) अथवा ब्रह्म विषे उपनिषदमां वर्णन कर्युं छेः

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः ।
भयादिन्द्रश्चाग्निश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥

दशावतार — मत्स्यकूर्मो वराहश्चनरसिंहाथ वामनः ।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश ॥

'पृथ्वी उपर तारे दस वार जन्म लेवो पडशे' एवो दुर्वासा ऋषिए शाप आप्याथी विष्णुने दस अवतार लेवा पड्या. (कल्की अवतार तो बाकी छे.)

९४

उल्लाप — ठपको, निंदा, गाळ

कथमपि — महा मुसीबते, जेम तेम करीने.

चित्तस्तम्भः कृतः — मननी लागणीओ दबावी दीधी

मोघाशा —जेनी इच्छा अथवा मनोरथ निष्फळ गया छे ते. आशामां सपडाएलो माणस गमे तेवी विटंबणाओ सहन करवा तैयार थाय छे.

ते धन्याः पुण्यभाजस्ते तैस्तीर्णः क्लेशसागरः ।
जगत्संमोहजननी यैराशाऽऽशीविषा जिता ॥

आशीविषा — नागण

९५

विधुरा — विगता धूः कार्यभारो यस्याः सा ।

(साधनाभावने लीधे) जेने कशुं काम नथी एवी; मूंझवण के दुःखने लीधे विषण्ण थयेली बिचारी.

निरन्नविधुर — अन्न न होवाथी विह्वल के विषण्ण बनेली

गेहिनी — गेह - घर. एवी ज रीते गृह उपरथी गृहिणी शब्द थाय छे.

याञ्चाभङ्ग° — याचनाभंग थवाना भयथी गद्गद वाणीए तूटता अने पडता अक्षरे

कोदेहीति वदेत् — सरखावो:

देहीति वचनं श्रुत्वा देहस्थाः पञ्च देवताः ।
मुखान्निर्गत्य गच्छन्ति ह्री-श्री-धी-धृति-कीर्तयः ।।
तीक्ष्णधारेण खड्गेन वरं जिह्वा द्विधा कृता ।
न तु मानं परित्यज्य देहि देहीति भाषणम् ।। — प्रसङ्गरत्नावलि

९६

क्षान्तं (किन्तु) न क्षमया — 'अशक्तिमान् भवेत् साधुः' पण एवी नीति स्वीकारी दरगुजर कर्युं.

त्यक्तं (नाम किन्तु) न संतोषतः — सुखोए त्याग कर्यो त्यारे तेमनो त्याग थयो; पोते समाधानपूर्वक सुखोनो त्याग न कर्यो.

नियमितप्राणैः — प्राणोने रोकीने, जाणे प्राणायाम करीने.

श्रद्धा के भावशुद्धि विना करेलां क्षमा, त्याग, तप के ध्यानमांथी इच्छित फळनी अपेक्षा राखवी वृथा छे. हेतु तेवुं फळ.

९७

उपभोगवन्ति — उपभोगो आपनारा – मेळववामां साधनभूत

न च प्राप्तौ दृढप्रत्ययः — भविष्यकाळमां मळवा विषे खातरी पण नथी एवा

वाञ्छामात्रपरिग्रहाणि — फक्त वासनामां — कल्पनामां - ज पकडी राखेला, मनमां ज रमनारा

विवेक एटले ज आत्मानात्मवस्तुविचार; ए होय तो तेनुं आ परिणाम अनिवार्य ज होय.

९८

शिरःशेषः — शिरः एव शेषः यस्य सः (राहुः) ।

समुद्रमंथन वखते राहुकेतुए अमृत चाख्युं. ते गळा नीचे ऊतरी जाय ते पहेलां ज देवोए तेमनुं डोकुं उडावी दीधुं. तथी ग्रहण वखते सूर्य तथा चंद्रनो तेओ ग्रास करे छे—बलके तेमना गळी जवाने परिणामे ज ग्रहणो थाय छे. पण थोडा वखत पछी तेओ तेमने छोडी दे छे. एवी पौराणिक मान्यता छे. एम शत्रुने पण छोडी देवामां कवि राहुनी मोटाई बतावे छे.

९९

मिथ्या वहन खिद्यसे — साधु होवानुं अभिमान तुं राखीने वृथा कष्ट वेठे छे.

पारकानुं दुःख दूर करे ते (परदुःखभंजन) ज सत्पुरुष नामने लायक गणाय.

पृथु — विशाळ, विस्तीर्ण. आ शब्द उपरथी ज पृथ्वी शब्द बन्यो छे.

कूर्मः — विष्णुए कूर्मावतार लई पृथ्वीने पोतानां पीठ उपर ऊंचकी हती.

ध्रुव — उत्तानपाद राजानो पुत्र ध्रुव तपने प्रभावे तारामंडळना मध्यमां स्थान पाम्यो. आखुं ज्योतिर्मंडळ (तेजस्विचक्रम्) तेनी आसपास फरतुं आपणे जोईए छीए.

संजातव्यर्थपक्षाः — (१) संजाताः च ते व्यर्थाः संजात-व्यर्थाः। तेषां पक्षो येषां ते। जेमनो जन्म निरर्थक छे एवाना पक्षमां भळेला; (२) व्यर्थौ पक्षौ स्वार्थपरमार्थ-लक्षणौ इहपरलोकलक्षणौ वा येषां ते व्यर्थपक्षाः। संजाताश्च ते व्यर्थपक्षाश्च। इहलौकिक तेम ज पारलौकिक बेमांथी एकेय हित जेमणे संपादन कर्युं नथी एवा; (३) संजाताश्च ते व्यर्थाश्च पक्षाः येषां ते। जेमने पांखो छे पण ते नकामी जेवी छे, एवां (उदुंबरना फळमांनां मगतरां.)

उदुंबरमशक शब्द 'कूपमण्डूक'नी जेम ज संकुचितपणुं बतावे छे.

नोपरिष्टात् न चाधः — न उपर न नीचे; कोई पण रीते उपयोगी नहि. धोबीनो कूतरो न घरनो न घाटनो.

१०१

विरसायास — रसहीन के निष्फळ प्रयत्न

दुरध्यवसाय — दुराग्रह, मूर्खाईभरेलो धंधो

व्यपेतनिजक्रमाः — (१) पोते स्थिर रहीने पृथ्वीने आधार आपवानुं जेमणे छोडयुं छे. (२) पोतानी मर्यादा जेमणे ओळंगी छे एवा.

कुलशिखरिणः — कुलपर्वतो सात गणाय छेः

महेन्द्रो, मलयः, सह्यः, शुक्तिमान्, ऋक्षपर्वतः।

विंध्यश्च, पारियात्रश्च, सप्तैते कुलपर्वताः ॥

सामान्यपणे पर्वतो तथा समुद्रो पोतानी मर्यादा ओळंगता नथी, पण कल्पना अंत वखत तेओ पण चलित थाय छे. पण महान व्यक्तिओ आवे वखत पण धीरज के हिंमत हारती नथी. सरखावो :

दर्शितभयेऽपि धातरि धैर्यध्वंसो भवेन्न धीराणाम्।

तेम ज : – उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे

विकसति यदि पद्मं पर्वतानां शिखाग्रे ।

प्रचलति यदि मेरुः, शीततां याति वह्निः

न चलति खलु वाक्यं सज्जनानां कदाचित् ॥

१०२

मनः शंकरं प्रपत्तुम् अभिवाञ्छति, ए मुख्य वाक्य छे. बाकीनां बधां पदो मननां विशेषणो छे.

चापल — चंचळता, अस्थिरता

विकल्पविस्तर — शंकाकुशंकाओनो विस्तार

१०३

वितीर्णे सर्वस्वे — सर्वस्व आपी दईने

विगुणपरिणामाः विधिगतीः — विचित्र के दुःखद परिणामवाळी विधिनी घटनाओ; दैवदुर्विलसितानि.

त्रियामा — त्रण प्रहरवाळी-रात्रि

पुण्यारण्य — पवित्र वन, तपोवन

'**विरसपरिणामाः**' पाठमां विरस एटले दुःखपूर्ण.

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेन अमृतत्त्वमानशुः ।

— बृहदारण्यकोपनिषद्

१०४

किम् — किं कार्यम्, किं प्रयोजनम्, कोऽर्थः । तेनो शो उपयोग? आ अर्थमां आ बधा शब्दो तृतीया साथे वपराय छे.

किं वेदैः° — सरखावो:

नानुध्यायाद् बहून् शब्दान् वाचो विग्लापनं हि तत् ।

— बृहदारण्यकोपनिषद्

स्वर्गग्रामकुटीनिवासफलद — वेद, स्मृति वगेरेथी मळता फळमां कशो दम नथी, ए बतावबा ग्राम अने कुटी शब्दांनो उपयोग करी स्वर्गनिवासनी तुच्छता कविए बतावी छे.

कर्मक्रियाविभ्रमः — यज्ञयाग इत्यादि क्रियाओनो विलास—पसारो.

प्लवा ह्येते अदृढा यज्ञरूपा अष्टादशोक्तं अवरं येषु कर्म ।

— मुण्डकोपनिषद्

मुक्त्वा — बाद करीने, सिवाय

स्वात्मानन्द — स्वस्मिन् आत्मनि य आनन्दः तस्य यत्पदं तस्मिन् यः प्रवेशः तस्य कलनम् करणम् । आत्मसाक्षात्कार.

शेषाः वणिग्वृत्तयः — बाकीना तो वाणियावेडा छे.

१०५

पेशल — दक्ष, कुशल

विकल्पजल्प — शंकाकुशंकायुक्त एवा बकवाद

मुखर — वाचाळ

हाथी चलत है अपनी गतमें कुतर भुकत है वाकु भुकवा दे ।

— कबीर

तुल्यप्रियाप्रियो धीरः तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः । — गीता

१०६

स्मरतिमिर — काम-विकार ए ज अंधकार अथवा कोई नेत्ररोग (तिमिर) तेना संस्कारोथी उत्पन्न थयेलुं (अज्ञान).

पटुतरविवेकांजनजुषाम — सदसद् वस्तुनो विचार करवामां विशेष कुशळ एवो जे विवेक ए ज अंजन (सुरमो) जेमणे आंखमां आंज्युं छे एवा (अमारी.)

समीभूता — असमा समा संपन्ना समीभूता।
समत्वने पामी. (अभूत तद्भावे च्विः।)

१०७

'**तैरेव चायं भवः**' पछी '**रचितः**' अध्याहृत छे.

कस्य कृते — कया भोग माटे, शा माटे ?

कृतम् — बस करो. अलम् पण ए ज अर्थमां तृतीया साथे ज वपराय छे.

आशापाश...विशदम् — अगणित आशाओनी शान्ति थवाथी स्वच्छ - विशुद्ध - बनेलुं

कामोच्छित्तिवशे — कामस्य उच्छित्त्या वशम्; तस्मिन्। कामनाओनो-वासनाओनो-नाश थवाथी हवे पोताना वशमां आवेलुं - प्राप्त थयेलुं. **उच्छित्ति** — उच्छेद, समूळ नाश.

स्वधामनि — पोताने स्थाने-आत्मामां

पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभूः तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षत् आवृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्॥

— कठोपनिषद्

१०८

सुकृत — पुण्यकर्म

उद्रेक — उत्कर्ष, उत्कटता, विकास.

अपास्त — दूर करायेलुं

मोहमहिमा -- एषणात्रितयात्मकः मोहः तस्य-महिमा । एषणा त्रण छे : पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा.

युष्मत्संग...मोहमहिमा - युष्माकं संगस्य वशेन उपजातं यत् सुकृतं तस्य उद्रेकेण उत्कर्षेण स्फुरत् निर्मलं च यद् ज्ञानं तेन अपास्तः दूरीकृतः समस्तः मोहस्य महिमा यस्य तथाभूतः (अहम्)।

अन्त्यः — छेवटनी (विदायनी सलाम). कारण हवे परब्रह्ममां लीन थाय छे.

कुटुंबीजन जेवा पृथ्वी. आप, तेज, वायु अने आकाश ए पांच महाभूतोए देह आप्यो अने टकाव्यो. ते देहथी पुण्यकर्म कर्यु, जेथी ज्ञान मळ्युं अने परिणामे मुक्ति मळी. ते माटे ते भूतोनो कवि उपकार माने छे अने दुनियानी विदाय ले छे.

१०९

सरखावो आ ज कविनो श्लोक 'मही रम्या शय्या इ.'

वृत्तिः — आजीविका

रत्यै — आनंद आपवा माटे, मनोविनोद माटे. काव्यशास्त्र-विनोदार्थम्।

सेवाञ्जलिः — सेवार्थः अञ्जलिः। चतुर्थी तत्पुरुष।

विद्याङ्गना — अङ्गना-प्रशस्तानि अङ्गानि यस्याः सा। विद्या एव अङ्गना।

११०

कुशलं चरितम् – कल्याणकारक कर्म-व्यवहार-परिणाम.

विपाकः पुण्यानां — पुण्य कर्मोना परिणामनो विचार करतां मने डर लागे छे.

चिरपरिगृहीता : — घणा लांबा वखतथी संग्रह करेला-भेगा थयेला – सेवायेला.

महान्तो जायन्ते — मोटा थाय छे, वध्ये ज जाय छे.

न जातु कामः कामानाम् उपभोगेन शाम्यति ।

हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ।। —मनु

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्-

'नास्त्यकृतः कृतेन ।' —मुण्डकोपनिषद

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति । —गीता

१११

गतागतम् — गतं च आगतं च गतागतम्--आवजा

दृष्ट्वा — गीतामां 'जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम्' ने ज्ञाननुं लक्षण गणाव्युं छे. जेने जन्मजराव्याधि आदिथी त्रास के वैराग्य उत्पन्न थतो नथी ते जड ज कहेवाय.

उन्मत्तभूतम् — उन्मत्त इव इति उन्मत्तभूतम् । (सुप्सुप समास ।) सरखावो : भारभूत.

कामरसिकः — कामेषु रसिकः। भोगोमां आनंद लेनार – राचनार, भोगोनी लहेजत माणनार

वलीमण्डिततनुः — (घडपणने लीधे) करचलीओथी युक्त देहवाळो

यमधानी — यमनी नगरी. **धानी** - स्थान. सरखावो : राजधानी, मसीधानी, इ.

जवनिका — नाटकनो पडदो. यवन लोको पासेथी आपणे लीधो हशे तेथी पडदानुं जवनिका नाम पडवुं लागे छे.

बाल्य, तारुण्य इत्यादि अवस्थाओ ए ज जिंदगीना नाटकना जुदा जुदा अंको छे. ते पूरा कर्या पछी संसारनी रंगभूमि उपर भाग भजवतो नर (माणस) छेवटे मरणना पडदानी पाछळ सदाने माटे जाय छे.

आंग्ल कवि शेक्सपियर जिंदगीनी सात अवस्थाओ (जिंदगीरूप नाटकना सात अंक) गणावे छे:

All the world's a stage,
And all the men and women merely players;
They have their exits and their entrances;
And one man in his time plays many parts,
His acts being seven ages.

— 'As You Like It'

११३

आ श्लोकमां मुख्य वाक्य आ छे:

विधिः मनः पिण्डीकृत्य भ्रमयति ।

जेम कोई कसायेलो कुंभार माटीना पिंडाने एटले के गोळाने चाक उपर फेरवी तेना जुदा जुदा आकार घडे छे, तेवी रीते विधि (दैव, ब्रह्मा) माणसना मनने चिन्ताना चाक उपर फेरवे छे. पण ते कया घाट घडवा मागे छे ते आपणा जाण्यामां आवतुं नथी.

विपद्दण्ड...चले — विपदः एव दंडाः तेषां व्रातस्य प्रपातपरंपरायाः परिचयेन चलतीति विपद्दण्ड...चलम् । तस्मिन । **परिचय** — स्पर्श, ताडन.

११४

माने म्लायति इत्यादि पहेली बे लीटीमां बधी 'सति सप्तमी'नी रचनाओ छे.

जह्नुकन्या — गंगा नदी, जाह्नवी

भगीरथना प्रयत्नथी स्वर्गमांथी ऊतर्या पछी गंगा जह्नु राजानी यज्ञभूमि उपरथी वहेवा लागी; तेथी तेनो यज्ञ जळमय थई गयो. परिणामे जह्नु चिडाई गया अने गंगाने पी गया. पछी देवोनी, ऋषिओनी तथा खास करीने भगीरथनी प्रार्थनाथी तेणे पोताना कानवाटे गंगाने बहार काढी. तेथी गंगा जह्नुनी कन्या मनाय छे.

जह्नोः कन्यां सगरतनयस्वर्गसोपानपंक्तिम् । — मेघदूत

११५

इयं जठरपिठरी विडंबनं करोति आ मुख्य वाक्य छे. बाकीनां बधां पदो 'जठरपिठरी'नां विशेषणो छे. माणसना स्वमान, औदार्य इत्यादि गुणो तथा व्रीडा के शरम ए बधानो एकी साथे आ जठरपिठरी (पेटनो खाडो) नाश करे छे. पेटनो खाडो पूरवा माटे माणसने अनेक विडंबणाओ सहन करवी पडे छे.

अभिमत...पटीयसी — प्रिय एवा स्वमाननी ग्रंथिने-भावनाने-भिन्न करनार, छेदी नाखनार.

गुरुतर...चन्द्रिका — अनेक उदात्त गुणोनो समूह ए ज कोई सूर्यविकासी कमळ – तेने संकोचावनार उज्ज्वळ चांदनी.

विपुल...कुठारिका — उत्कट शरमनी लागणी के व्रीडा ए ज कोई वेलो – तेने कापनार कुहाडी. सरखावो : जठरपिठरवर्ती वह्निनिरर्थीकरोति ।

११६

एक ज वस्तु भिन्न भिन्न प्रकृतिवाळा माणसोनी बाबतमां साव विरोधी परिणाम उपजावे छे. One man's meat is another man's poison.

११७

द्विरदः — द्वौ रदौ दन्तौ यस्य सः । हाथी

खर — कठण.

બળવાન માણસ જ પોતાના વિકારોને કાબૂમાં રાખી શકે છે. અશક્તઃ દુર્જનઃ ।

૧૧૮

કૂતરાના આબેહૂબ વર્ણન દ્વારા અહીં કવિએ માણસની પામર વિકારવશતા ઉપર ભારે કટાક્ષ કર્યો છે. છેલ્લી લીટીનો પૂર્વાર્ધ તો કહેવત જેવો થઈ ગયો છે.

પૂયક્લિન્નઃ — પરુથી ખરડાયેલો

પિઠરકકપાલાર્પિતગલઃ — જેના ગળામાં હાંડલાંનો કાંઠલો ભરાઈ ગયા છે એવો

૧૧૯

ન લુનન્તિ — કાપતા નથી, ઘાયલ કરતા નથી.

કૃશાનુઃ — (કૃશયતિ—નાશ કરીને ઘટાડે છે તે) અગ્નિ.

કામ ક્રોધ અને લોભને જીતે તે ત્રણ લોકને જીતે.

ત્રિવિધં નરકસ્યેદં દ્વારં નાશનમાત્મનઃ ।
કામઃ ક્રોધસ્તથા લોભસ્તસ્માદેતત્ત્રયં ત્યજેત્ ॥

— ગીતા ૧૬-૨૧

टिप्पण

सूक्तिसुधा

पृ. ८६. सुकविता यद्यस्ति°— आस्वाद लेवा माटे सरस कविता होय तो तेनी आगळ राज्यसुख पण तुच्छ छे. अथवा एवो पण अर्थ कराय : 'सरस कविता लखीने, समाजनुं हृदय जीतीने जो लोकोन्नति करी शकाती होय तो एने बदले राजसत्ता द्वारा समाजने काबूमां राखी समाजने सुधारवानो प्रयत्न शा माटे करवो ?'

व्रीडा एटले 'हीन कर्म केम कराय ?' ए जातना सद्वृत्तिने जन्म देनारी लज्जा के शरम.

ज्ञातिश्चेत्°— भर्तृहरिना जमानामां पण न्यात-जातना झघडाथी समाज दुर्दशाए पहोंच्यो हशे. एटले ज ए कहे छे के जाति (ना झघडा) होय तो बीजा दावानळनी जरूर शी ?

सत्यं चेत्° — प्रामाणिकपणे सत्यनुं पालन करवा जतां माणस एटलो तो तवाई जाय छे के आत्मशुद्धि माटे बीजा तपनी जरूर ज नथी.

कल्पं स्थितं — माणसनुं शरीर कल्प जेटलुं टके तोय तेथी शुं ? मात्र लांबा जीवनथी श्रेयनी प्राप्ति थोडी ज थाय छे ? 'काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते'।

पृ. ५७. ग्रस्तं न किं — एवी कई वस्तु छे के जेने माथे बीजी कोई वस्तुनो भय नथी? दरेक वस्तुने खाई नाखनार कंईक ने कंईक उपद्रव होय ज छे.

समयच्युतिः — वखतनो अगाउ, तकने जवा देवी ते. **च्युतिः** अतिवाहनम् — पसार थवा देवुं.

आज्ञाफलम — आज्ञा फलम् यस्य । हुकम करी शकवो—तेनुं पालन करावी शकवुं ए जेनुं फल छे ते; हुकमनुं पालन कराववानुं सामर्थ्य.

पृ. ५८. शान्तं भावमुपैहि — चित्तशान्ति प्राप्त कर. चित्तने स्थिर राख.

अपण्डितानाम — पण्डा बुद्धिः अस्य संजाता असौ पण्डितः। न पण्डिताः इति अपण्डिताः मूर्खाः। तेषाम् ।

पृ. ५९. विवेकभ्रष्टानाम — माणसे विवेक गुमावी दीधो के तेनुं अनेक रीते पतन थवानुं **विनिपातः** — महापतन, सर्वनाश.

गंगा स्वर्गमांथी शंकरना माथा पर पडी, त्यांथी हिमालयना शिखर उपर, त्यांथी वळी धरतीनी सपाटी उपर, एम करतो करतो सो मुखथी सागरमां पडे छे. एम गंगाना विवेकभ्रष्ट के स्थानभ्रष्ट थवाथी अधःपात थयानी घटना वर्णवीने कवि उपर जणावेलो नियम तारवे छे.

भोक्तुं न मोक्तुं क्षमाः — विषयान् भोक्तुं – सामान्यपणे माणस एवी दुविधामां के दुःस्थितिमां होय छे के तेथी ते विषयोनो उपभोग लई शकतो नथी तेमज तेनो सदंतर त्याग पण करी शकतो नथी.

दौर्मन्त्र्यान्नृपति — 'दुर्मन्त्री राज्यनाशाय'। **दौर्मन्त्र्य** – खराब के दुष्ट मंत्री होवापणुं, बदसलाह.

पृ. ६०. कृतान्तः— कृतं अन्तयति इति, कृतः अन्तः येन वा । अन्त लावनार, नाश करनार.

अक्षमी — क्षमा न विद्यते अस्य । क्षमा न करनार.

पृ. ६१. शास्त्रे वादभयम् — शास्त्रनी बाबतमां पक्षापक्षीनो ने वादनो भय होय छे. वादभयम् ने ठेकाणे 'वादिभयम्' पाठ पण छे.

अस्थैर्येण — समृद्धि के संपत्तिने माथे अस्थिरता के नश्वरतानी आपत्ति होय ज छे.

कथमहो — केवुं विचित्र के मोहने लीधे अमने शरम पण नथी आवती !

पृ० ६२. तल्पमस्वल्प — 'शय्या भूमितलम्'। धरतीनी सपाटी ए ज एक विस्तीर्ण पथारी छे.

सन्तो वनान्तं — आ बधो संसारनो पसारो नश्वर के क्षणजीवी छे एम ओळखीने डाह्या माणसोए वननो ज आश्रय लीधो छे.

उपधानम् — उपधीयते शिरः अत्र इति । उशीकुं

आयुः कल्लोल° — जीवित मोजाना जेवुं चंचल छे. सरखावो : तुलितबिसिनी पत्रपयसाम् । तथा 'नलिनीदलगतसलिलं तरलं तद्वज्जीवितमतिशयचपलम्' ।

बहुतृणम्° — विश्व तरफ सदाय घासनी जेम जोवुं. ईषदसमाप्तं तृणं **बहुतृणम्** तृणकल्पम् । लगभग घासना जेवुं.

संत्यज निज्ञां° — जलतरंगना जेवी पोतानी अस्थिर अवस्था के मनोदशानो त्याग कर.

मौक्तिकाञ्जलि

पृ. ६५. मनस्वी — प्रशस्तं मनः अस्ति अस्य इति मनस्विन् । उदार, धीर, श्रेष्ठ चित्तवाळो. गुजरातीमां सामान्यतः 'स्वच्छंदी', 'तरंगी'ना अर्थमां ज वपराय छे.

प्रतीकारो व्याधेः° — जे केवळ रोगनुं निवारण छे ते ज जाणे सुख छे एवो अवळो ख्याल माणस बांधे छे. तत्त्वतः सुख छे के नहि अने होय तो ते शामां छे ते जोवानी तस्दी ते लेतो नथी.

नीचस्य गोचर° — नीच माणसना दृष्टिपथमां, सकंजामां सपडायेला कया माणसने सुख मळी शके वारु ? नीच

રાજાના ક્ષેત્રમાં રહીને કોને સુખ મળી શકે? **ગોચર**—(**ગો**: ઇન્દ્રિય; **ચર**: ચાલવું, ફરવું.) ઇન્દ્રિયો જ્યાં સુધી—જ્યાં—જઈ અથવા પહોંચી શકે તે ક્ષેત્ર.

પરિગ્રહ — સ્વીકારેલી વસ્તુ. વળગાડ.

પૃ० ૬૬. પત્રં નૈવ°— વસંત ઋતુ બેસતાં તમામ વનસ્પતિ પલ્લવિત થાય છે પણ કેરડાના ઝાડને પાંદડાં નથી આવતાં તેમાં કંઈ વસંત ઋતુનો દોષ છે શું? વિધિએ કપાળે લખ્યું હોય તે કોણ ભૂંસી શકે?

કરીર — કેરડાનું ઝાડ.

વિવૃતદ્વારાઃ — વિવૃતં દ્વારં યાભ્યઃ તાઃ । જેમને માટે બારણાં ખોલેલાં જ છે એવી (એવી રીતે.)

પ્રાણિ સારૈઃ :— પ્રાણીરૂપ સોગટાં વડે.

કાળ કાળી સાથે સોગટાંની રમત રમે છે એવી પૌરાણિક માન્યતા છે. પ્રાણીઓ એ જ તે સોગટાં છે એમ અહીં કહ્યું છે. કવિ નરસિંહરાવે પોતાના કાવ્યમાં જરા ભિન્ન — કાળી માણસ સાથે રમત રમે છે એવી — કલ્પના કરેલી છે:

મોહથી નિજ માનિયાં
શોગટાં જે આપણે,
શક્તિ તે મન ધારિયાં
હા! લે હરી બીજી ક્ષણે!

— સ્મરણસંહિતા

सुस्थितम् — सारी रीते स्थिर थयेलुं, अपाय-विहीन, अविनाशी.

दग्धजठरस्यार्थे — बळ्या पेटने खातर.

अवस्था वस्तूनि° — कोई वस्तु महत्त्वनी, कीमती छे के नजीवी छे ते माणसनी गरज अथवा अवस्था उपर के प्रसंग उपर आधार राखे छे. कोई पण चीज वस्तुतः ज नजीवी के महत्त्वनी होती नथी. एनुं महत्त्व के तुच्छता सापेक्ष होय छे.

पृ० ६७. तनूनपात — तनुं न पातयति जाठर-रूपेण शरीरं धारयति. तनूनपं घृतं अत्ति इति वा तनूनपात् अग्निः । अग्नि जठरमां रहीने खाधेलुं अन्न पचावे छे अने शरीरने पडवा देतो नथी तेथी शरीरने न पडवा देनार कहेवाय. अग्निमां घी होमाय छे ए प्रसिद्ध ज छे.

सखे नान्यत° — डाह्या माणस माटे आ दुनियामां तप सिवाय बीजी कोई कल्याणकारक वस्तु नथी

पृ० ६८. सर्वं वस्तु° — (बीजी) बधी ज वस्तुओने माथे भय झझूमे छे. केवळ वैराग्य ज एक एवी वस्तु छे के जेने कशानो डर नथी.

उपशान्त्यैकमनसाम — उपशान्ति के वैराग्यमां ज जेमनुं चित्त चोंटेलुं छे तेवाओने माटे.

चेतःसद्मनि — ज्ञानना दीप एवा जे शंकर ते योगीओना अंतःकरणरूप घरमां विराजे छे-प्रकाशे छे.

कलाशेषश्चन्द्रः — कृष्णपक्षमां अग्नि, सूर्य, विश्वेदेव इत्यादि देवो तथा पितरो चन्द्रना अमृतनुं वाराफरती पान करे छे अने तेथी तेनी कळाओ क्षीण थाय छे ए मान्यतानो अहीं उल्लेख छे.

पारकाने काजे करेला दान के यज्ञने लीधे क्षीणता आवे तो पण ते शोभास्पद ज छे. सरखावो आखा श्लोक माटे:

स्थाने भवानेकनराधिपः सन् अकिञ्चनत्वं मखजं व्यनक्ति ।
पर्यायपीतस्य सुरैर्हिमांशोः कलाक्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः ॥
— रघुवंश

तथा

धर्मार्थे क्षीणकोशस्य क्षीणत्वमपि शोभते ।
सुरैः पीतावशेषस्य कृष्णपक्षे विधोरिव ॥ — कामन्दकः

श्यानपुलिनाः — श्यानानि पुलिनानि यासां ताः जेना पट सुकाई गया छे एवी.

कूपे पश्य — जुओ, घडो कूवामांथी तेम ज सागरमांथी सरखुं ज पाणी लई शके छे.

तद्धीरो भव — तेथी धीरज राख; पैसादार लोको आगळ पामरता बताबीश नहि.

पृ. ६१. सर्वाशापरिपूरके॰ — बधानी आशाओ पूर्ण करनार — बधी दिशाओने व्यापनार (व्यापीने) — मेघ दररोज वरसे तोय चातकना मोढामां तो पाणीनां बे चार सूक्ष्म टीपां ज पडवानां. दैवे दरेकनो भाग नक्की करेलो होय छे; तेथी वधारे मळवुं अशक्य.

भोगः कोऽपि॰ — कोऽपि — अवर्णनीय, महान.

नित्योदित — सदाय हस्ती धरावतो, शाश्वत टकनारो.

यत्स्वादात् — जे (भोग)ना स्वादथी — अनुभवने परिणामे.

को वा वीचिषु॰ — मोजां, परपोटा, वीजळी, स्त्रीओ, आग, साप तथा नदीनो प्रवाह ए बधां कोई क्षणभंगुरता माटे, तो कोई दगो देनार तरीके जाणीतां छे. आ संसार पण एवो ज छे. तेना विविध स्थावर जंगम भावो प्रत्येनी आसक्ति छोडी दईने शंकरनी उपासना करवामां ज श्रेय छे.

प्राणत्राणप्रवणमतिभिः — प्राणानां त्राणे प्रवणा मतिः येषां तैः । पोताना प्राण बचाववा तरफ ज जेमनो झोक छे एवाओ वडे.

नृभिः......नमद्भिः — नृषु नमत्सु सत्सु-सति सप्तमी जेवो ज अहीं तृतीयानो प्रयोग छे.

अतुलदर्पज्वरभरः — अपार घमंडनी गरमी (शा माटे !)

नक्षत्रमाळा

"शान्त-शीतळ तजने नमन हजो."

१. जेमनी पासे नथी विद्या के तप, नथी दान के शील, नथी कोई गुण अथवा धर्मनुं पालन, तेओ खरेखर, आ पृथ्वीने भाररूप थई, जाणे मनुष्यरूप धारण करेलां पशुओ ज होय तेम आ मर्त्यलोकमां विचरे छे.

२. जे माणस साहित्य-संगीत-के कळा-विहोणो छे, तेने शिंगडा-पूछडा-विनानो साक्षात् पशु ज जाणवो. घास खाधा विनाय ते जीवे छे ए खरेखर सामान्य पशुओनुं अहोभाग्य छे!

[कारण के एवाओ जो घास खावा मांडे तो पशुओने भूखे ज मरवानो वारो आवे. तेमनी आबादी नानी-सूनी नथी.]

३. आळस ए माणसना शरीरमां वसतो महान वेरी छे, ज्यारे उद्यम जेवो कोई हितैषी नथी. तेनो आश्रय कर्या पछी माणसने पडवापणुं रहेतुं नथी.

૪. મોઢામાં કોળિયો દીધા પછી, દુનિયામાં કયો નીચ માણસ વશ થતો નથી ? મોઢા પર લોટનો લેપ કર્યો હોય તો મૃદંગ પણ મધુર અવાજ કરે છે! આખરે માટીના અંગવાળો જ ને ?

૫. તમે તે અમે, અને અમે તે તમે, એવી ભાવના અત્યાર લગી આપણી વચ્ચે હતી; જરાય ભેદ કે અંતર ન હતું.

ત્યારે હમણાં એવું તે શું બન્યું કે જેથી તમે તે તમે થઈ ગયા, અને અમે અમે રહી ગયા ?

૬. દાન, ઉપભોગ અને નાશ, એમ ધનને ત્રણ ગતિઓ હોય છે. જે નથી કશું આપતો, કે નથી ભોગવતો, તેના ધનની ત્રીજી જ ગતિ થવાની.

૭. સન્તપુરુષો પ્રત્યક્ષ શિખામણ ન આપતા હોય, તોયે તેમની પાસે રહી તેમની સેવા કરવી ઘટે. કેમકે એમણે સહેજ કરેલી વાતો પણ શાસ્ત્રની કોટીએ પહોંચે છે. [એમાંથી જ આપણને જીવનદર્શન મળી રહે છે.]

૮. સમર્થોને પણ હાડમારી કોક વાર જોવાની મળે છે. જે નીલામ્બરના કકડાથી ચંદ્રમા રાત્રે વીંટળાયેલો હતો, તે જ કકડા વડે દિવસે સૂર્ય વીંટાય છે. બન્નેની શી કફોડી દશા કે બે વચ્ચે મળીને એક જ ધોતિયાનો કકડો છે.

९. हरण, मीन अने सज्जन, ए त्रणे केवळ घास, जळ अने संतोष सेवीने पोतानी वृत्ति (आजीविका) चलावे छे. छतांय आ दुनियामां (अनुक्रमे) पारधि, माछी अने दुर्जन तेमना नाहकना शत्रु बने छे.

१०. आपणे भोगोने भोगव्या नथी, पण भोगोए ज आपणने भोगव्या. आपणाथी तप नथी थयुं, पण आपणे ज तवाई गया. जिंदगी जीवीने आपणे काळ खुटाडयो नथी, पण आपणे ज खूटी गया; अने आखरे आपणी तृष्णा घसाई जवाने बदले आपणे ज घसाई गया.

अंते कमाया शुं?

११. घटमाळनी पेठे फरता, के चकडोळनी जेम भमता, आ संसारमां एम तो कयो प्राणी मरीने फरी जन्म लेतो नथी? पण जन्म्यो तो ते ज कहेवाय के जेना पेदा थवाथी आखो वंश उन्नतिए पहोंचे.

१२. पर्वतोनां दुर्गम स्थानोमां, जंगली पशुओ साथे रखडवुं पडे ते बहेतर; पण मूर्ख के नीच माणसनी सोबतमां रहेवानो प्रसंग तो देवाधिदेव इन्द्रना महेलमां पण न पोसाय.

१३. मालतीनां फूलोनी जेम, मानधन जनोने माटे बे ज भाग्य सरजायेलां होय छे : कां तो सर्व लोकोनां माथां उपर विराजमान थवानुं, नहि तो वनवगडामां ज करमाई जवानुं.

१४. खवडावनारनी आगळ पूछडी पटपटाववी, तेना पगमां पडी, जमीन उपर आळोटतां आळोटतां चत्ता थईने पोतानुं मोढुं अने पेट बताववां, ए तो कूतरुं ज करे. ज्यारे गजराज तो आगळ धरेला खोराक तरफ धीरजपूर्वक जोया ज करे अने सो वार खुशामत थाय त्यारे ज खाय.

१५. हलकी कोटीना माणसो विघ्नना भयथी कार्यनो आरंभ ज करता नथी. मध्यम कोटीना माणसो कार्यनो आरंभ तो करे छे, पण विघ्नो वागतांवेंत बेसी जाय छे; ज्यारे श्रेष्ठ पुरुषो विघ्नोथी वारंवार घवाता जाय तोपण एक वार हाथ धरेलुं काम केमे करीने पडतुं मूकता ज नथी.

१६. समुद्रमंथननो पुरुषार्थ चलावतां, लक्ष्मी, कौस्तुभ-मणि, जेवां असाधारण मूल्यवान रत्नो मळवाथी देवो हरखाया नहि, तेम ज हालाहल जेवुं भयंकर विष नीकळवा-थी तेओ गभराया नहि. अमृत हाथ न आव्युं त्यां सुधी तेओ विरम्या नहि. धारेली वस्तु प्राप्त न थाय त्यां सुधी धीर पुरुषो पोतानो प्रयत्न छोडता नथी.

१७. हकूमत, कीर्ति, ब्राह्मणोनुं परिपालन, दान, उपभोग तेम ज पोतीकांओनुं के मित्रोनुं संरक्षण, आ छ लाभ जेमने हांसल थया नथी, तेमणे राजाश्रय साधीने शो सार मेळव्यो ?

१८. दुष्ट दुर्जन माणस अनेक विद्याओथी मंडित होय तोपण तेनो त्याग ज करवो घटे. माथा परना मणिथी रूपाळो थयेलो सर्प भयंकर नथी होतो शुं ?

१९. वैभवकाळे, मोटा लोकोनुं मन पारकानां दुःखो जोई कमळ जेवुं कोमळ थाय छे. ज्यारे, पोताना उपर आपत्तिओ आवी पडतां, ते ज मन दुःखोना प्रहार झीलवा माटे मोटा पहाडना पथ्थर जेवुं कठण अने अडग बने छे.

२०. व्यवहारनीतिमां निपुण एवा लोको वखोडे के वखाणे, भाग्यलक्ष्मी चाहे आवे के जती रहे, मरण आज ज थाय के युग वीत्या पछी थाय, विचारवान धीर पुरुषो न्यायशुद्ध मार्गथी एक डगलुं पण चळता नथी.

२१. फळ बेसे त्यारे झाडो भारथी नीचे नमे छे; वादळां नवा पाणीना भारथी जमीन तरफ खूब नीचे झूके छे; वैभव वखते सत्पुरुषो पण उद्धत थवाने बदले ऊलटा नम्र थाय छे. परोपकारशीलोनो ए स्वभाव ज छे.

२२. कुंडलोथी नहि, पण वेदशास्त्रना (सद्बोधना) श्रवणथी ज कान शोभे छे. कंकणथी नहि, पण सत्पात्रोने दान करवाथी ज हाथ शोभे छे. एवी ज रीते करुणाशील माणसनी काया चंदन आदिना लेपथी नहि, पण परोपकारनां कृत्योथी ज शोभे छे.

२३. संत लोको कहेता आव्या छे के, पाप करतां वारे, हितकारक प्रवृत्ति तरफ वाळे, रहस्यवातने छानी राखे, खूबीओनी जाहेरात करे, विपत्ति वखते साथ नहि छोडे तथा कटोकटीने वखते वहारे धाय.— आ बधां सारा अने साचा मित्रनां लक्षणो छे.

२४. छेदाया छतां वृक्ष फरी ऊगे छे. तेम ज क्षीण थया छतां चंद्रमा फरी पुष्ट थाय छे; ए ध्यानमां लई, सत्पुरुषो विपत्तिओथी मूंझाता नथी; संकट आवी पडतां विमासणमां पडता नथी.

२५. हाथनी थपाटथी फरी फरी पछाडवा छतां गोळ दडो फरी फरी ऊछळे ज छे. साचुं ज छे के साधुवृत्ति-वाळाओ पर वीतेली पडतीओ घणुं करीने टकती नथी.

२६. आर्य पुरुष पडे तोपण ते दडाना पडवा प्रमाणे; एटले के पडयो के तरत ज पाछो ऊछळवानो. ज्यारे पामर, अनार्य पडे छे ते माटीना ढेफा जेवो ज; एटले के ते

पडयो के तरत छिन्नभिन्न थई जवानो. ऊठवानी तो पछी वात ज शी ?

२७. धैर्यवान माणसने गमे तेवा संकटथी रिबाव्यो होय तोय तेनो धैर्यगुण भूंसी नाखवो शक्य नथी. दिवेटने के मशालने ऊंधी वाळी होय तोपण एनी ज्वाळा कदी नीचे जती नथी; ते तो उपर ज जवानी.

* * *

[नक्षत्रो २७ गणाय छे पण कोक कोक वार श्रवण साथे अभिजित उमेरीने एमनी संख्या २८नी करवामां आवे छे, एटले आपणे पण नीचेनो श्लोक उमेरी २८ नक्षत्रो गणी शकीए.]

रक्तत्वं कमलानां सत्पुरुषाणां परोपकारित्वम् ।
असतां च निर्दयत्वं स्वभावसिद्धं त्रिषु त्रितयम् ॥

२८. कमळोनी लालाश, सज्जनोनुं परगजुपणुं, अने दुर्जनोनी कठोरता, आ त्रण गुणो ए त्रणेयमां स्वाभाविक छे.

सद्‌बोधशतक

"आ मार्ग कल्याण तरफ लई जनारो छे"

मंगलाचरण

ॐ. दिशा अने काळ वगेरेथी जे मर्यादित नथी, जे केवळ शुद्ध ज्ञानरूप अने अनंत छे, तथा आत्म-साक्षात्कार ए ज जेने जाणवानुं एकमात्र साधन छे. एवा शांत तेजोरूप परमात्माने हुं नमन करुं छुं.

१. विद्या ए माणसनुं अनेरुं रूप छे. ए एनुं सुरक्षित एवुं गुप्त धन छे. विद्या ज माणसने अनेक भोगो, कीर्ति अने सुख मेळवी आपे छे. विद्या गुरुओना पण गुरु छे. परदेशमां के प्रवासमां होईए त्यारे विद्या ज स्वजननी गरज सारे छे. आम बधी रीते विद्या ए ज परम दैवत छे.

राजाने त्यां पण मान विद्याने होय छे, धनने नहि. विद्याविहोणो माणस नर्यो पशु ज छे.

२. बाजूबंध, चंद्र जेवा चळकता हार, स्नान, सुगंधी द्रव्योनो लेप, फूलो के वाळनो शणगार, इत्यादि बाह्य

प्रसाधनो माणसने शोभावतां नथी. पण संस्कारसंपन्न वाणी माणसे केळवेली होय तो ते ज एकली तेने सारी रीते शोभावे छे.

वळी बाजूबंध इत्यादि आभूषणो घसाराथी सतत क्षीण थतां जाय छे, ज्यारे वाणीरूपी आभूषण सदाने माटे भूषणरूप ज रहे छे.

३. हे भाई चातक, क्षणवार ध्यान दईने मारी वात सांभळ. आकाशमां नीरद मेघ तो घणा होय छे, पण ते बधा ज कांई नीरनुं दान करे एवा नथी होता. केटलाक वरसाद वरसावीने धरतीने तरबोळ करे छे, ज्यारे केटलाक मात्र निरर्थक गाज्या ज करे छे. माटे, भाई, जेने जेने तुं जुए ते दरेकनी आगळ दीन वचन कादीश नहि.

४. शुं करीए ? जेओ जाणकार छे तेओ अदेखाईथी खवाई गया छे. जेओ सत्ताधारी के संपन्न छे, तेमनी विवेकशक्ति अहंकारथी वणसी गई छे. बाकीना बिचारा साव बेखबर छे. परिणामे मारुं कवित्व अने चातुर्य मारी अंदर ज सुकाई गयुं छे.

५. लक्ष्मी चंचळ छे, प्राण पण चंचळ छे. जीवन अने जोबन तो साव ज चंचळ छे. आम आ अति चंचळ अने नश्वर संसारमां निश्चळ एवो तो केवळ एक धर्म ज छे.

६. हे राजन् ! अमने अमारां आ जाडां वल्कलोथी संतोष छे, अने तने तलम रेशमथी संतोष थाय छे. बन्नेनो संतोष तो सरखो ज छे. तेथी ते बन्नेना फरकमां कांई अर्थ ज नथी. जेनी तृष्णा विशाळ छे ते भले दरिद्री कहेवाओ. ज्यां मनमां तृप्ति छे, त्यां धनवान कोण अने दरिद्री कोण ?

७. जे अजाण होय तेने सहेलाईथी राजी करी शकाय; जे सुजाण होय तेने तो तेथी पण वधारे सहेलाईथी राजी करी शकाय. पण जराक-सरखा ज्ञानथी जे अर्धदग्ध थयो छे तेने तो साक्षात ब्रह्मदेव पण राजी न करी शके; पछी बीजाओनी तो वात ज शी ?

८. ज्यारे मारुं ज्ञान नहि जेवुं हतुं त्यारे हाथीनी जेम हुं मदांध थयो हतो. हुं सर्वज्ञ छुं, एवा गर्वथी मारुं मन ते वखते फुलायलुं रहेतुं. पछी ज्यारे विद्वानो पासेथी थोडुंक थोडुंक हुं जाणवा पाम्यो त्यारे मारी मूर्खाईनुं मने भान थयुं, अने जेम ताव ऊतरी जाय तेम मारो गर्व सोंसरो गळी गयो.

९. राजाओनो कोप उग्र होय छे; एमने पोतीकुं एवुं कांई नथी होतुं. होम करनारो जो आहुति आपती वखते पण अग्निने स्पर्श करे तो तेने पण ते बाळे ज छे ने ?

१०. माणसमां जो एक लोभ होय तो एने बीजो कयो दुर्गुण जोईए ? [लोभमां बधा ज आव्या जाणवा.] चाडी खावानी हलकाई होय तो बीजां पापोनी जरूर शी ? सत्य होय तो कशा तपनी शी जरूर ? मन निर्मळ होय तो तीर्थयात्रानी गरज शी ? अने जो भलमनसाई होय तो सगांवहालांओनी शी जरूर ? तेम ज जेने स्वाभाविक प्रतिष्ठा छे तेने आभूषणोनी शी पडी होय ? सारी विद्या जो हस्तगत होय तो पैसानी शी परवा ? अने जो अपकीर्ति फेलाई होय तो मृत्युनुं शुं प्रयोजन ?

११. अरे भाई, तृष्णाने छेदजे; क्षमा धारण करजे; गर्वने त्यजी देजे; पापकर्ममां प्रीति राखीश मा; सत्य ज बोलजे; सज्जनोने मार्गे चालजे; विद्वानोनी शुश्रूषा करजे; सन्मान्य लोकोने मान आपजे; तारा द्वेषीओनां पण मन राखजे; पोताना गुणोनां बणगां फूंकीश मा — तेमनी जाहेरात न करतां ए ढांकी राखजे; मेळवेली कीर्ति साचवजे; दीन दुःखियाओ उपर दया करजे. बधा सज्जनो आम ज करता आव्या छे.

१२. ब्रह्मदेव जो बहु कोपाय तो ते कमलिनीना वनमां रहेवानो हंसनो लहावो नष्ट करी शके छे. पण दूध अने पाणी जुदां पाडवानी तेनी चतुराईनी जे कीर्ति लोकोमां गवाई छे, तेनुं हरण करवा ए ब्रह्मदेव पण समर्थ नथी.

१३. तमारी पासे गाळोनां भंडार छे एटले तमे भले गाळो आपता जाओ. अमारी पासे ए न होवाथी अमे गाळ आपी शकीए तेम नथी. पोतानी पासे जे होय ते ज आपी शकाय छे, ए न्याय दुनियामां जाणीतो छे. ससलानुं शींगडुं (जेनी मुद्दल हस्ती ज नथी ते) कोई कोईने आपतुं नथी.

१४. हे राजन्! आ पृथ्वीरूपी गायने दोहवानी जो तारी इच्छा होय तो आ प्रजाजनोनुं वाछरडानी जेम तुं पालनपोषण कर. वाछरडुं खुश तो गाय पण खुश. प्रजानुं जो हंमेश सारी रीते पोषण थाय तो आ पृथ्वी कल्पलतानी जेम विधविध प्रकारनां फळोथी फालशे.

१५. तुं ज चातकना जीवननो आधार छे एम कोण नथी जाणतुं? तो पछी, हे मेघश्रेष्ठ, तुं अमारां दीन वचननी शा माटे राह जुए छे?

१६. गरम गरम लोढा उपर पडेला पाणीनुं तो नाम सरखुं जणातुं नथी. ए ज पाणी कमळना पांदडा उपर मोतीना दाणा जेवुं शोभे छे. वळी ए ज पाणी जो स्वाति नक्षत्रने टाणे समुद्रनी छीपमां पडे तो तेनुं सरस मोती ज बने छे. खरेखर अधम, मध्यम के उत्तमतानो गुण मोटे भागे सोबतने परिणामे ज जन्मे छे.

१७. सांभळो एक पुराणी रूपककथा. पाणी दूध पासे आव्युं एटले दूधे ए अतिथिने पोताना बधा गुणो अर्पण कर्या. दूध पातळुं थयेलुं जोई, लोकोए तेने गरम करवा मूक्युं. दूधने आम ताप थतो जोई ते पाणीए पोतानी जातने अग्निमां बाळी दीधी. पोताने कारणे पोताना मित्र पाणीनी थयेली ए दुर्दशा जोई दूधे अग्नि उपर चडाई करवानो मनसूबो कर्यो. अंत ज्यारे ए दूधनो एना मित्र पाणी साथे फरी संयोग थयो, त्यारे ज ए शांत थयुं. खरेखर, सारा लोकोनी मैत्री आवी ज होय छे.

१८. जिंदगीथी कंटाळेला एक निर्धन माणसे अकस्मात स्मशानमां जईने त्यां पडेला एक शवने जोतां कह्युं, 'हे मित्र, ऊठ अने मारा दारिद्र्यनो भारे बोजो एक क्षण माटे तुं ऊंचक. हुं क्यारनो थाकी गयो छुं, माटे तारुं मरणनुं सुख हुं जरा भोगवी लउं.' त्यारे 'दारिद्र्य करतां मरण ज वधारे सारुं,' एम जाणतुं होवाथी ज शव मूंगुं रह्युं.

१९. सिंह साव बच्चुं होय तोपण मदोन्मत्त हाथीना विशाळ गंडस्थळ उपर कूदी पडे छे. पराक्रमी लोकोनो आ स्वभाव ज छे. तेजस्वीपणुं कांई उमर उपर आधार राखतुं नथी.

२०. अचेतन होवा छतां सूर्यकांतमणि, सूर्यनो पाद-स्पर्श, एटले के किरणस्पर्श, थतांवेंत जो सळगी ऊठे छे, तो पछी चेतनवंतो तेजस्वी पुरुष बीजाए करेलो अपकार केम करीने सहन करे ?

२१. दैववशात् जो कदी जगत कमळ विनानुं थई जाय, तो शुं हंस कूकडानी जेम उकरडानो ढगलो खोतरवा मांडशे ?

२२. सवारनी छाया प्रारंभे मोटी लांबी होय छे, पण दहाडो चडतां ते टूंकी थई पोताना ज पग तळे संताई जाय छे – दुर्जनोनी मैत्रीनुं पण एम ज छे. एथी ऊलटुं, बपोरनी छाया प्रथम नानकडी होय छे; पण पछी धीमे धीमे ए लंबाती जाय छे.– सज्जनोनी मैत्री आवी होय छे. आम दुर्जनोनी अने सज्जनोनी मैत्रीमां आवो सवारनी अने सांजनी छाया जेवो भेद होय छे.

२३. विपत्तिने वखते अडग धैर्य, उदयकाळे क्षमा-शीलता, मंत्रीओनी सभामां वाक्चातुर्य, युद्धमां पराक्रम, सत्कीर्ति विषे प्रीति, शास्त्रोना अभ्ययननी अबळखा. आ बधुं महात्माओने स्वभावसिद्ध ज होय छे.

२४. निर्दयपणुं, कारण विनानी लडवेड, परधन अने परस्त्री विषे इच्छा, सज्जनोनी तेम ज स्वजनोनी अदेखाई, आ बधा दुर्गुणो दुर्जनोना स्वभावमां ज होय छे.

२५. जेओ स्वभावे उदारचरित छे, तेमने नीचेनां आभूषणो शोभावे ज छे. हाथे सत्पात्रे दान आपवानी टेव, माथे गुरुजनोने चरणे भक्तिपूर्वक नमन करवानी अभिलाषा, मोढामां सत्यथी पावन थयेली वाणी, बन्ने बाहुमां अजोड पराक्रम. हृदयमां निष्पाप वृत्ति. अने कानमां शास्त्रोनुं श्रवण अने तेमनुं ज्ञान. पछी बीजुं ऐश्वर्य एमनी पासे न होय तो शुं थयुं.?

२६. सूर्य कोई पण जातनी याचनानी राह जोया वगर ज कमळना समूहने फूलवे छे, तेम ज चंद्रमा पोयणाना समूहने विकसावे छे. अने मेघ पण वगर विनंतीए दुनियाने जल आपे छे. खरेखर, सज्जनो पोतानी मेळे ज पारकाना हित माटे उत्साहपूर्वक प्रयास करे छे.

२७. धार्युं काम पार पाडवा मांगतो टेकीलो माणस जिंदगीमां आवतां सुखोने के दुःखोने गणकारतो नथी.

क्यारेक ए जमीन पर सूए तो क्यारेक पलंग पर पोढे; क्यारेक केवळ शाकभाजी खाईने जीवे तो क्यारेक कमोदनो भात आरोगे; क्यारेक थीगडानी कंथा ओढे तो क्यारेक चळकतां कीमती वस्त्रो परिधान करे सुख के दुःख कांई ज एने रोकी शकतुं नथी.

२८. सामी छातीए घा झीलेलाने रणमां विजय मळो के स्वर्ग; पण ए पहेलां, बन्ने पक्षनी सेना तरफथी नीकळेला 'साधु, साधु; शाबाश, शाबाश' नो पोकार तेना कानने खरेखर अत्यंत आनंद आपनारो होय छे.

२९. सारुं के नरसुं कोई पण काम करती वखत, डाह्या माणसे ते कामनुं परिणाम शुं आवशे तेनो प्रथमथी ज प्रयत्नपूर्वक विचार करवो घटे. केमके अति उतावळथी, वगर विचारे करेलां कर्मोनुं परिणाम शल्यनी जेम मरण पर्यंत हृदयने बाळनारुं नीवडे छे

३०. सज्जनोनो समागम बुद्धिनी जडता हरे छे, वाणीमां सत्यनुं सिंचन करे छे, प्रतिष्ठा अने उन्नतिनो रस्तो बतावे छे. पापने परहरे छे, चित्तने निर्मळतानी प्रसन्नता बक्षे छे अने दशे दिशाए कीर्ति फेलावे छे.– कहो त्यारे सत्संग माणसोने माटे शुं नथी करतो !

३१. वैभवनी शोभा छे सौजन्य; बहादुरीनी शोभा छे
ाणी परनो काबू;* ज्ञाननी शोभा छे वैराग्य अने चित्तशान्ति
ेम ज विद्यानी शोभा छे विनय; धन दानथी शोभे छे,
तपनी शोभा अक्रोध छे अधिकारनी शोभा क्षमा छे,
धर्माचरणनी शोभा निखालसपणामां छे; अने आ
बधाना मूळमां अने बधाने शोभावनारुं परम भूषण तो
शील - चारित्र्य छे.

३२. बधा लोकोने वहालुं लागनारुं अने स्वर्ग, मृत्यु,
पाताळ आदि बधा लोकमां इष्ट गणायेलुं शील अथवा
चारित्र्य जे मनुष्यना रोमरोममां विकसे छे, तेने माटे
अग्नि पाणी जेवो शीतळ बने छे, दरियो सहेलाईथी पार
करी शकाय एवी नानी नीक जेवो क्षणवारमां बने छे,
नगाधिराज मेरु नानकडी शिला जेवो बने छे, सिंह
एकाएक मृगला जेवो गरीब बनी जाय छे, विषधर
महा भुजंग फूलहारना दोरा जेवो बनी जाय छे,
तेम ज विषरस पण अमृतवृष्टि जेवो बने छे, एटले
के झेर पण पोतानी मारक शक्ति छोडी दई अमी
वरसावे छे.

* बहादुर माणस पोतानां बणगां न फूंके, बकवाद
न करे, ए ज एने शोभे.

३३. डरावनार वृद्धावस्था बिहामणी वाघण जेवी पडखे ऊभी ज छे; रोगो शत्रुओनी जेम देह उपर प्रहार करे ज छे; फूटेला घडामांथी वही जता पाणीनी जेम आवरदा स्रवी स्रवीने बधी रीते खूटती जाय छे; एम छतां माणस अंते पोताना ज हितने मारक थाय एवुं अपकारनुं काम कर्ये ज जाय छे. ए केटली नवाईनी वात छे!

३४. हे मन, तुं उतावळ करी घडीकमां पाताळमां प्रवेश करे छे, घडीकमां आकाशने पण वटावीने तेनी पार जाय छे. वळी एक क्षणमां दशे दिशाओमां फरी वळे छे. अने छतां तारा आत्मानुं कल्याण थाय अने तने परम शांति मळे एवा विमल ब्रह्मनुं स्मरण तुं भूलेचूके पण केम नथी करतु?

३५. जे माणस अपरिग्रही होई अकिंचन छे, इन्द्रियोने तथा मनने काबूमां राखे छे, जे सुखदु:ख विषे तथा स्व-पर विषे समबुद्धि जाळवे छे, तेम ज सदाय संतोष-वृत्ति सेवे छे, तेने माटे बधी ज दिशाओ आनंद—सुखमय होय छे.

३६. सेवक बोलतो न होय तो ए मूंगो के मुख-दुर्बळ गणाय छे; ए ज जो बोलवामां कुशळता बतावे तो एने खुशामतियो अथवा वाचाळ तरीके नवाजवामां आवे छे. जो शेठनी पासे ऊभो रहे तो धीट अथवा

धृष्ट मनाय छे; दूरथी सेवा करे तो ए गमार गणाय छे. सहनशील होय तो ते डरपोकमां खपे छे; पण जो ए सहन न करे तो मोटे भागे एने खानदानी विनानो ठराववामां आवे छे. आम सेवाधर्म भलभला योगीओ पण न साधी शके एवो गहन, विषम अने कफोडो छे.

३७. न्याय अने सदाचारथी लाधती आजीविका विषे प्रीति राखवी; प्राण जवानो समय आवे तोपण मेलुं काम हाथे न थवुं; दुर्जन लोको आगळ तो याचना न ज करवी, पण मित्रनी पासे पण, जो ते निर्धन थयो होय तो कशुं न मागवुं; विपत्तिमां पण दीन न बनतां माथुं ऊंचुं राखवुं अने आपद्धर्मनी वात न करतां उच्च आदर्श सेववो, एटले के संकट समयमां पण धीरोदात्त वर्तन राखवुं; अने महानुभावोने पगले चालवुं,— आवुं आ खांडानी धारे चालवा जेवुं विकट असिधाराव्रत सज्जनोने कोणे बताव्युं हशे वारु ?

३८. समस्त भुवनोनी उतरडने शेषनाग पोतानी विशाळ फणा उपर टेकवी वहन करे छे; ते शेषने काचबानो राजा (कूर्मावतारी विष्णु) पोतानी पीठ उपर हंमेश धारण करे छे; ते काचबाने वळी सागर रमकडानी जेम सहेजे पोताना खोळामां बेसाडी दे छे. केटलुं आश्चर्य ! मोटाओना चारित्र्यनी महत्ताने मर्यादा ज नथी. महात्माओनो विभूतिओ अंत के पार वगरनी होय छे.

३९. कशी जाहेरात कर्या वगर छानुंमानुं दान आपवुं, अतिथि घेर आव्यो होय त्यारे उत्कंठाथी एनी आगतास्वागता करवी, बीजानुं भलुं करीने ते बाबत मौन राखवुं, कोईए उपकार कर्यो होय तो जाहेरमां तेनो स्वीकार करवो, संपत्तिमां गर्व न करवो, पारकानी निंदा के अपमान थतुं होय एवी वातो न करवी, आवुं आ अति विषम असिधाराव्रत सज्जनोने कोणे बताव्युं हशे वारु ?

कोईए नहि, ए तो एमनो स्वभाव ज छे.

४०. भूखने लीधे गमे तेटलो दूबळो पडयो होय, घडपणथी कृश थयो होय, गात्रो बधां ढीलां पडवाथी भारे कठण दशामां आवी पडयो होय, तेजमात्र नीकळी गयुं होय, एटलुं तो शुं पण प्राणनो ज नाश थवानो वारो आव्यो होय तोपण, मदोन्मत्त हाथीओनां गंडस्थळो फाडीने तेमांना मोती जेवा मांसना कोळिया भरवानी ज इच्छा राखनारो, मानीओनो अग्रेसर एवो सिंह अन्य जानवरोनी पेठे कदी सूकुं घास खाशे खरो ?

मानधन पुरुष गमे तेटली विषम स्थितिए पहोंच्यो होय तोय एनी शानने न छाजे एवुं हलकुं काम करवा तैयार थाय ज नहि.

४१. पोतानुं पेट भरवाना ज उद्योगमां रच्यापच्या क्षुद्र जनो तो हजारो पडेला छे. ज्यारे परार्थने ज जे स्वार्थ माने छे एवो सज्जनोनो अग्रेसर कोईक ज होय छे.

नदीपति समुद्रनुं पाणी वडवानल पीए छे ते कदी न भराय एवुं पोतानुं पेट भरवा माटे. ज्यारे ए ज समुद्रनुं पाणी मेघ पीए छे, ते उनाळाथी थतो जगतनो ताप तोडी नाखवा माटे ज.

४२. मन, वचन अने शरीरमां जेओ पुण्यामृतथी भरेला छे; उपकारनी परंपराथी त्रण लोकने जेओ प्रसन्न करे छे; अने पारकाना राई जेवडा अल्प गुणाने पर्वत जेवडा मोटा करी बतावी जेओ पोताना हृदयकमळनो विकास साधे छे; एवा संत पुरुषो केटला हशे ?

४३. सज्जनोनी आ केवी रीत के तेओ नम्र थईने पोताने ऊंचे लई जाय छे. पारकाना गुणोनी कदर करीने पोतानु गुणज्ञपणुं (अने ते द्वारा गुणीपणु पण) स्थापित करे छे. पारकाने काजे वहोळा पाया उपर मोटां कामो अखंड चलावीने ते द्वारा ज जे कांई पोतानो स्वार्थ सधाय ते साधे छे; अने आक्षेपना एटले के निंदाना कठोर शब्दोथी जेमनां मुख वाचाळ बन्यां छे एवा दुष्ट लोकोनी हीनताने पोताना क्षमाशील आचरणथी ज उतारी पाडे छे.

आम जेमनुं आचरण खरेखर नवाई पमाडे तेवुं छे, तेवा बहुमान्य सज्जनो दुनियामां कोने पूजनीय नथी?

४४. सत्यव्रतने वरेला, तेजस्वी, टेकीला माणसो प्रसंग आव्ये पोताना प्राण पण सुखेथी जता करे छे; पण लज्जागुण जेवा सद्गुणोना प्रवाहने वहेतो करनारी, अत्यंत शुद्ध हृदयवाळी, अने सदाय पाछळ पाछळ रही रक्षण करती माता जेवी, प्रतिज्ञानो कदापि त्याग करता नथी.

४५. काचबाने शुं पोताना शरीर उपरना भारनुं कळतर नहीं थतुं होय के ते पोतानी पीठ उपरथी पृथ्वीने फेंकी देतो नथी? अथवा तो शुं सूर्यने थाक नथी लागतो के ते निश्चळ थई निरांते बेसी नथी रहेतो? (बन्ने अकळाता तो हशे ज.) पण एक वार हाथमां लीधेलुं कार्य पडतुं मूकतां सज्जन पोताना मनमां शरमाय छे.

उपाडेलुं काम छेवट लगी नभाववुं ए ज सज्जनोनुं कुलव्रत होय छे.

४६. स्वपरनो भेद के पक्षपात राख्या विना बधाने ज आश्रय आपनार उदार महासागरने विषे कवि कहे छे:

अहीं क्षीरसागरशायी केशव सूता छे, तो अहीं तेना शत्रुओनुं (असुरोनुं) आखुं कुळ अथवा मंडळ पण

संतायेलुं छे; अहीं शरणे आवेला पर्वतोनो समुदाय सूए छे, तो अहीं ज ए सागरने धीमे धीमे बाळी नाखनार वडवानल पण प्रलयकाळना बधा अग्निओने साथे लई घर करी बेठो छे. खरेखर, सागरनुं हृदय केटलुं बधु विशाळ, सामर्थ्यवाळुं अने भार खमनारुं छे.

['क' एटले पाणी. 'के' एटले पाणीमां (पडेलुं) शव–ते केशव, एवो केशवनो अर्थ कराय छे. प्रलयकाळ पछी श्रीविष्णु शबनी पेठे निश्चेष्ट थईने क्षीरसागरमां सूता रहे छे. ते परथी.]

४७. आ विशाळ पृथ्वी सागरथी वींटळायेली एटले के सीमित छे. ए जलनिधि सागर पण सोएक योजन जेटलो हशे. सतत प्रवास करनारो सूर्य अनंत गणाता आकाशनुं पण माप काढे छे. एम बधी वस्तुओ स्पष्ट देखाती मर्यादानी छापथी एटले के मुद्राथी अंकायेली छे. फक्त सज्जनोनी प्रतिभा ज अमर्याद होई, सर्वत्र विजय पामे छे.

४८. पोतानो स्वार्थ तद्दन जतो करीने बीजानुं हित साधनारा आ लोको सत्पुरुषो छे. स्वार्थने आंच न आवे एवी रीते जेओ परहित साधवानो उद्यम आदरे छे, तेओ सामान्य कोटिना गणाय. जेओ स्वार्थने खातर पारकाना हितने हणे छे. तेओने मानव-रूपधारी राक्षसो कही शकाय.

हवे जेओ कांई पण मतलब विना पारकाना हितनो नाश करवाने मंडी पडेला होय छे. तमने कया नामथी ओळखवा ते समजातुं नथी.

४९. जे अभागियो माणस आ कर्मभूमिमां आव्या छतां तपाचरण करतो नथी, सत्कर्म करीने पोतानी जिंदगीनो सदुपयोग करवाने बदले तुच्छ कर्मोमां अमूल्य जीवन वितावे छे. ते खरेखर जाणे नीलमणिनी बनावेली तपेलीमां चंदनना जेवा बळतणथी तलनो खोळ पकवे छे, आकडानां मूळियां मेळववा माटे सोनानी हळपूणीथी जमीनने खेडे छे. अथवा कपूरनां झाड कापी कोदरानी आसपास तेनी वाड बनावे छे. बीजुं शुं ?

५०. एवा सुवर्ण पर्वत मेरु, के रजत पर्वत कैलासने लईने शुं करीए के जेने आश्रये ऊगेलां वृक्षो, हतां तेवां ने तेवां ज वृक्षो रहे छे. अमे तो दक्षिणना मलय पर्वतने ज मान्य गणीए छीए केम के तेना आश्रयने कारणे कंकोल, लीमडो अने इन्द्रजवनां वृक्षो पण चंदन बनी जाय छे.

५१. [जूना काळमां पर्वतोने पांखो होवाथी तेओ ऊडी ऊडीने मनुष्यवस्तीने दबावी देता हता. अंते इन्द्रे वज्र फेंकी फेंकीने पहाडोना पंख कापी नाख्या. ए

घामांथी ज नदीओ वहेवा लागी. पहाडो परनुं ए संकट जोई, हिमालयना दीकरा मैनाके सगांवहालांओनो त्याग करी, समुद्रमां डूबकी मारी; अने पोतीकानां सुखदुःख साथे एकरूप थवाने बदले, पोता पूरतो ज विचार करी एणे पोतानो जान बचावी. ए पौराणिक कथा आगळ करी कवि कहे छे :]

मातेला इन्द्रे फेंकेला वज्रना सखत प्रहारोथी, के जे प्रहारो अग्निनी उपराउपरी ज्वाळाओ बहार पडती होवाने लीधे विशेष दुःसह थया हता. ते प्रहारोथी पांख कपाई जात तो ते मैनाक माटे बहेतर हतुं; पण पोताना पिता, हिमालय, संकटमां सपडाईने असहाय बन्या होय एवे वखते, तेनो कशो ख्याल राख्या वगर, केवळ पोतानी जातने बचाववा खातर महासागरना पाणीमां भूसको मारी संताई जवुं, ए तेने माटे साचे ज उचित न हतुं.

५२. जेमनुं मन संतोषना सुखने लीधे खीलेलुं छे, तेमना आनंदमां जेने कारणे कशो फेर पडयो नथी; अने जेमनी बुद्धि धनलोभथी व्याकुळ थई छे, तेमनी तृष्णा पण जेना द्वारा हणाई नथी;– एवो अपार संपत्तिनो भंडार (सुवर्णपर्वत मेरु) विधाताए कोने माटे सर्ज्यो हशे ? आखरे जेनुं सुवर्णमाहात्म्य पोतानी अंदर ज समाई गयेलुं छे एवा मेरुनी मारी आगळ कशी कदर नथी.

[पाठांतर स्वीकारीए तो आ ज श्लोक नीचे प्रमाणे अर्थ आपे छे :]

जेमनुं मन संतोषसुखथी जागृत थयुं छे, तेमने माटे ज माटीथी जुदो नथी; अने जेमनी बुद्धि धन-लोभने लीधे आकळी थई छे, तेवा पामर लोको जेना सुधी पहोंची शकता नथी; — एवो ए अपार संपत्तिनो भंडार विधाताए आम कोने माटे बनाव्यो हशे ?

जेनो सुवर्णमहिमा पोतानां अंदर ज समाई गयो छे, लोभी के संतोषी कोईना ज कामनो नथी, तेवो मेरु मने आकर्षी शकतो नथी.

५३. जीवडाओनां गूंचळांथी खदबदतुं, लाळथी भीनुं थयेलुं, दुर्गंध मारतुं, जोतां ज चीतरी चडे एवुं तथा मांस विनानुं एवुं माणसनुं हाडकुं अत्यन्त स्वादथी पोते करडतो होय, तेवे वखते कूतरो, देवोनो राजा इन्द्र पासे आवे तोय; तेने जोईने शरमातो नथी, केमके क्षुद्र प्राणी पोते संघरेली के अपनावेली वस्तु केटली तुच्छ छे एनो ख्याल करी ज शकतो नथी.

५४. अमृत टपकतुं होय, एवां मधुर बोधवचनोथी ज जे माणस दुष्टोने सन्मार्गे आणवानी हाम भीडे छे, ते जाणे कमळना कोमळ तंतुओ वडे मदोन्मत्त हाथीने बांधवानो प्रयत्न करे छे, अथवा जाणे शिरीष फूलनी

पांखडीनी किनारथी हीराने पासा पाडवानो प्रयत्न करे छे; अथवा जाणे मधना एक टीपा वडे खारा महा-सागरने मधुर बनाववानो प्रयत्न करे छे. अर्थात् ए वृथा प्रयास छे.

५५. मगरनी दाढमां भरायेलुं रत्न जोर करीने वखत बहार काढी शकाय, उपराउपरी आवतां ऊछळतां मोजांथी भीषण बनेला तोफानी दरियाने पण वखत तरीने पार करी शकाय, तेम ज छंछेडायला सापने पण कदाच फूलनी जेम माथे धारण करी शकाय, पण हठ पकडीने सामा थई बेठला मूर्ख माणसना चित्तनुं समाधान कदापि न करी शकाय.

५६. धाणीमां प्रयत्नपूर्वक पीलवाथी रेतीना कणमांथी पण वखत माणस तेल मेळवी शके; तरसथी पीडातो कोई माणस मृगजळ पीने पण पोतानी तरस छिपावी शके; पृथ्वीपर्यटन करतां करतां माणसने कदाचित् ससलानुं शिंगडुं पण हाथ आवे; पण जीद पकडीने सामा थई बेठला मूर्ख माणसने कदापि आराधी न शकाय.

५७. श्रीमंताई हती ते वखतना जेवी ज अविकळ इन्द्रियो आजे छे; ए ज कर्म छे; ए ज अकुंठित बुद्धि छे; वाचाशक्ति पण ए ज छे; अने पुरुष पण ए ज छे. छतां, पैसानी हूंफ जती रहेतांवेंत माणस जुदो ज बनी जाय छे ए केटलुं बधुं विचित्र !

५८. शास्त्रपूत शब्दोथी जेमनी वाणी सुन्दर बनी छे, अने जेमनी पासे वेदादि शास्त्रोनुं ज्ञान शिष्योने आपी शकाय एवुं छे (एटले के जेओ पोतानुं कीमती ज्ञान शिष्योने सफळ रीते आपवानी शक्ति धरावे छे) एवा विख्यात कविपंडितो जे राजाना देशमां निर्धन दशा भोगवे छे ते ते राजानी नगुणाई छे. कविओ तो संपत्ति विना पण बादशाह होय छे. मोंघामूलां रत्नोनी किंमत ओछी आंकनार नादान रत्नपारखुओ ज निंदापात्र होय छे, नहीं के रत्नो.

५९. माणसमां जो लज्जाशीलता के मर्यादा होय तो ए जडता मनाय छे; व्रत करवा तरफ रुचि होय तो ते दंभ गणाय छे; पवित्र आचरण जो एने पसंद होय तो ए कपट के धूर्तता ठराववामां आवे छे; शूर माणसमां निर्दयतानुं आरोपण थाय छे; ए ज माणस जो शांत के धीमो होय तो ए एनी दुर्बलता गणाय छे; ए जो मौन-सेवी होय तो ए बेवकूफी, अने वक्ता होय तो ए वाचाळता कहेवामां आवे छे; माणस प्रिय वातो करे तो ए दीनता, अने तेजस्विता बतावे तो ए घमंड गणाय छे. त्यारे एवो कयो गुण छे के जे दुर्जनोए वखोडयो नथी?

६०. ज्ञान आदि परम तत्त्वो जेमने प्राप्त छे, एवा पंडितोनी अवगणना करीश मा. तणखला जेवी तुच्छ संपत्ति तेमने बंधनकारक थई शकती नथी. ताजा ज वहेवा मांडेला मदना प्रवाहथी जेमनां गंडस्थळो काळां काळां थयां छे एवा हाथीओने कमळना तंतुओ रोकी नथी शकता.

६१. लूटनार के हरण करनारनी जे नजरे पण चडतुं नथी, जे हंमेश माणसनुं अकल्पित कल्याण ज करे छे, याचकोने सतत आप्या कर्युं होय तोय खूटवाने बदले जे पराकोटी सुधी वध्या ज करे छे, अने कल्पनो अन्त आवे तोय जे नाश पामतुं नथी, एवुं विद्या नामथी ओळखातुं, आंतरिक धन जेमनी पासे छे, तेमनी साथे हे राजाओ, अभिमाननुं वर्तन छोडी दो. एवाओ साथे कोण हरीफाई करी शके ?

६२. कोई पण प्राणीनो वध न करवो, पारकानुं धन हरण करतां चित्तने रोकवुं, साचुं बोलवुं, योग्य समये, पोतानी शक्ति प्रमाणे दान आपवुं. परस्त्री विषे वातचीत सरखी पण न करवी, तृष्णा एटले के वासनाना प्रवाहनो छेद करवो, वडीलो प्रत्ये विनयशील थवुं अने प्राणीमात्र प्रत्ये दया राखवी आवो आ आचार बधा धर्मोना, तमाम शास्त्रोने संमत छे. अने ए ज कल्याणनो सार्वभौम मार्ग छे.

६३. माणसमां जो क्षमा होय तो आत्मरक्षण माटे कवच — बख्तरनी शी जरूर ? जो एनामां क्रोध होय तो बीजा शत्रुओनी जरूर शी ? ज्ञातीला होय तो पछी अग्निनी जरूर शी ? जो अनुकूळ स्नेही मित्रो होय तो दिव्य औषधि राखवानी आवश्यकता शी ? जो दुर्जनो पासे होय तो शुं सर्पो पण जोईए छे ? अने जो संस्कारवती विद्या केळवेली होय तो धननी किंमत शी ? जो लाजलज्जा होय तो आभूषण वगर शुं नडवानुं हतुं ? अने जो सारुं काव्य रचवानी शक्ति होय तो पछी हकूमतनी शी तमन्ना ?

६४. [माणस सूतो होय, उन्मत्त थयो होय अथवा संकटमां फसायो होय त्यारे तेनी सलामती जोखममां होय छे. हवे ए ज गफलत जो मोटा जंगलमां के रणमां होईए त्यारे, शत्रु के अग्नि के जळथी घेराया होईए त्यारे, अथवा महासागरमां के पर्वतनी टोचे ऊभा होईए त्यारे आवी पडे तो तो पूछवुं ज शुं ? पण एवे ठेकाणे एवी अवस्थामां पण, पूर्वे करेलां पुण्योने लीधे ज माणस बची जाय छे — ए भाव व्यक्त करतां कवि कहे छे :]

वनमां के रणमां, शत्रु, जळ के अग्नि वच्चे, महासागरमां के पर्वतनी टोचे, माणस सूतो होय, उन्मत्त अवस्थामां होय के कफोडी दशामां पडयो होय त्यारे, पूर्वे करेलां पुण्यो ज एने रक्षे छे.

६५. हे साधा, तारे जो इच्छित फळ भोगववुं होय तो अनेक गुणो केळववानी कडाकूटमां पडीश मा. फक्त सर्व शुभ फळ आपनारी, ऐश्वर्यवती सत्क्रियानी उपासना कर के जे दुष्टोने साधु बनावे छे, मूर्खोने विद्वान बनावे छे, शत्रुओने मित्र बनावे छे, अज्ञातने सुज्ञात बनावे छे अने हालाहल जेवा भयानक झेरने पण जोतजोतामां अमृत बनावी दे छे.

६६. जे कोक घरमां अनेक माणसो रहेता हता त्यां मात्र एक ज बाकी रहे छे; वळी ज्यां एक हतो त्यां वखत जतां घणा थई जाय छे; अने अंते त्यां एक बाकी रहेतो नथी. आम रात अने दिवसने, जाणे ते बे पासा होय तेम, हाथमां नचावतां, भगवान काळ प्राणीओनां सोगटां बनावीने आ जगतना पट उपर भगवती काळी जोडे रमत रमे छे.

६७. [पोताना जीवनना विफळता वर्णवतां एक आश्रित कहे छे:]

विकट स्थळोने लांघे दुर्गम एवा अनेक प्रदेशोमां हुं रखड्यो पण कशुं फळ मने मळ्युं नहि; पोतानी जातिने अने कुळने उचित एवुं अभिमान छोडी दई पारकानी चाकरी करी पण ते बधी एळे गई; रखेने कोई हांकी काढशे एवी शंका हमेशां मनमां राखतां,

मान आबरू छोडीने कागडानी पेठे पारकाने घेर पेट भर्युं; तोय पाप कर्ममां राचनार. हे तृष्णे, तुं हजु तृप्त थती नथी एटलुं ज नहि. पण दिनरात तुं वधती ज जाय छे! हजी तने शाता वळती नथी?

६८. 'तने मळवा माटे अत्यारे शेठने वखत नथी.' 'शेठ हाल एकांतमां खानगी वातो करे छे.' 'मालिक सूता छे.' 'जो अहीं ऊभो रहीने जोया करीश तो महाराज चिडाशे,' एवां एवां वचनो जेमने बारणे सांभळवां पडे छे, तेमने पडता मूकीने, हे चित्त! तुं विश्वेश्वर महादेवना मंदिरनो आश्रय ले. त्यां तो तने रोकवा माटे कोई दरवान नहि होय, तने कोई कठोर वेण नहि संभळावे अने वधारामां त्यां तने अपार शांतिसुख मळी जशे.

६९. अग्निनी दाहकता न जाणवाने कारणे पतंगियुं भले दीवानी ज्योति उपर धसी पडे; तेम ज अज्ञानने कारणे माछली पण माछीमारना चाबुकना आंकडाने छेडे गोठवेलुं मांस भले गळी जाय; पण परिणामनी पूरेपूरी जाणकारी होवा छतां, आपणे विपत्तिओनी जाळथी गूंचवायेला विषयोने छोडी देता नथी! हाय! केटलो अगाध छे मोहनो आ महिमा!

७०. ज्यां सुधी आ शरीर रोगरहित अने स्वस्थ छे, ज्यां सुधी घडपण दूर छे, ज्यां सुधी इन्द्रियोनी शक्ति खवाईने क्षीण थई नथी अने ज्यां सुधी आवरदा खूटी नथी, त्यां सुधी ज डाह्या माणसे पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे महान प्रयत्न आदरवो जोईए.

घरने आग लागी जाय त्यारे कूवो खोदवानुं काम शरू करवुं ए वळी केवुं!

७१. खावा माटे फळ पूरतां छे, पीवा माटे मीठुं पाणी छे, सूवा माटे धरतीनी पीठ छे, पहेरवा माटे झाडनी छालोनां वल्कल छे. मारे वधारे शुं जोईए? अने तेथी ज, एकाएक प्राप्त थयेली नवी संपत्तिरूपी मदिराना सेवनथी जेओनां बधी इन्द्रियो भान भूली गई छे, एवा दुर्जनोनी तुमाखी सहन करवाने जराये मन थतुं नथी.

७२. उदार हृदयवाळी केटलीक धन्य विभूतिओए पूर्वे आ जगत निर्माण कर्युं; बीजा केटलाकोए एना पालननो भार उठाव्यो; एथीय बीजा केटलाकोए ए ज जगतने जीतीने, तणखलानी पेठे एने दानमां आपी दीधुं; अत्यारे पण केटलाक धीरोदात्त आर्य पुरुषो आ चौद भुवनोनो उपभोग लई रह्या छे. आवी स्थितिमां बे चार शहेरोनी मालिकी मळतांवेंत माणसो आटलो बधो गर्व शानो राखता हशे?

७३. तुं अधिकारसंपन्न राजा छे, ज्यारे अमे पोताना आचार्यनी सेवा करीने मेळवेला ज्ञाननुं अभिमान राखी उन्नत थवा मागीये छीए. तारी कीर्ति तारा वैभ ने कारणे छे, ज्यारे अमारी कीर्ति कविओ दशे दिशामां फेलावे छे. आवी रीते, हे अभिमानी राजा आपणी वच्चे मोटो तफावत छे. जो तुं अमने जोईने मों फेरवी लेतो होय तो अमे पण बिलकुल बेदरकार छीए.

[मानधनाति ने ठेकाणे मानद नाति पाठ लेवो वधारे सारो छे. ए पाठभेद लेतां श्लोकनो आ अर्थ थाय —]

तुं सिंहासनारूढ थयेलो अधिकारसंपन्न राजा छे, तो अमे पण अमारा गुरुजननी रीतसर सेवा करीने मेळवेला ज्ञानना सदभिमानथी अने आत्मविश्वासथी माथुं ऊंचुं राखीये छीए. तुं तारा वैभवने लीधे प्रख्यात छे, तो अमारी कीर्ति पण कविओ दशे दिशामां फेलावे छे. एवी रीते, हे मानद राजा, आपणा बेनी वच्चे झाझो तफावत नथी. तेम छतां जो तुं अमारे विषे बेपरवा होय तो अमे पण तद्दन बेदरकार छीए.

७४. सेंकडो राजाओ जेने भोगवतां एक क्षण पण खाली रहेवा देता नथी, तेवी पृथ्वी मळतां राजाओने आटलुं अभिमान शीदने थाय छे? पण एमनी वात जवा दईए. अहीं तो ए ज पृथ्वीना एक ककडाना ककडानुं

एक नानकडुं बटकुं मालिकीनुं थतां, विषाद मानवाने बदले आ जडसु जमीनदारो ऊलटा राजी राजी थाय छे!

७८. खरी रीते जोवा जईए तो आ पृथ्वी जळ-रेषाथी–पाणीनी नीकथी–विंटळायेलो एक माटीनो गोळो छे, अने ए आखानो विचार करीए तोये ए केटलो बधो नानो! एने माटे पण सेंकडो युद्धो लडीने राजाओ एना ककडा करी, एक एकने भोगवता जाय छे. एवा ए क्षुद्र अने अत्यंत दरिद्री राजाओ हंमेशा दान आपे ज छे एम नथी. कोक वखत आपे, अने कोक वखत न पण आपे. एवाओ पासेथी पण एक धनकणनी आशा राखनारा अधम पुरुषोने अनेक वार धिक्कार हजो.

अथवा

आ पृथ्वी छे शुं? पाणीनी नीकथी वींटळायेलो एक माटीनो गोळो. अने ते आखो पण केवळ एक अणुमात्र ज छे ने? हवे सेंकडो युद्धो लडीने राजाओनां टोळां एना पण भागला करीने ज एने भोगवे छे. एवा ए क्षुद्र अने अत्यन्त दरिद्री लोको कोईने अल्पस्वल्प दान आपे अथवा न पण आपे. तेमनो दोष शो काढवो? पण एवाओ पासेथी पण धनकणनी आशा राखनार अधम लोकोने तो अनेक वार धिक्कार ज हजो.

७९. गंगाना तरंगना बरफ जेवा ठंडा तुषारथी शीतळ बनेलां अने विद्याधरोए आराम माटे बेसीने सुंदर

बनावेलां एवां हिमालयनां पवित्र शिलास्थानो शुं बधां नाश पामी गयां छे के जेथी माणस अपमान वहोरी लईने पण पारकाने त्यां भीखनुं खाईने जीववामां राचे छे?

७७. [संस्कृतमां एक कहेवत छेः- 'गंडूषजलमात्रेण शफरी फुरफुरायते.' शफरी एक बहु ज नानकडी माछली होय छे, एने चांगळा जेटलुं पाणी मळे तो तेटलामां ए राजी थईने फुर फुर नाचे छे, पण ए बीचारीनी शक्ति केवडी? एना नाचवाथी शुं महासागर प्रक्षुब्ध थवानो हतो?]

जे मनस्वी छे तेने आ नजीवुं ब्रह्माण्डनामनुं कूंडाळुं थोडुं ज लोभावी शकवानुं हतुं? नानकडी शफरीना कूदंकूद करवाथी सागर कदी क्षोभ पामे खरो?

७८. मांस विनानो, अने मात्र थोडाक स्नायु अने चरबीना कण चोंटी रह्याथी मेलो जणातो, हाडकानो ककडो जडवाथी कूतरो राजी राजी थाय छे; जोके तेथी एनी भूख तो मटी शकती नथी ज. ज्यारे सिंह, कोई शियाळ खोळामां आवी पड्युं होय तोये, तेने त्यजी दईने हाथीने ज मारे छे.

कह्युं ज छे के कोई पण प्राणी, संकटमां सपडायुं होय तोये, पोताना व्यक्तित्वने शोभे एवुं ज फळ मेळववा मागवानुं.

७९. कमलदल उपरना पाणीनी जेने उपमा अपाय छे, एवा आ नश्वर प्राणोने माटे, सारां नरसांनो विवेक छोडी दई अमे शुं शुं नथी कर्युं ? केम के धनना मदथी जेमनी लागणीओ बहेर मारी गई छे, एवा मोटा माणसो आगळ, साव निर्लज्ज थईने आत्मस्तुति करवानुं पातक पण अमे करी चूक्या !

८०. हे हृदय, रोज उठीने पारकानां चित्तोनी अनेक रीते आराधना करी तेमने प्रसन्न करवा माटे तुं शा माटे आ महा क्लेशनो कादव खूंदे छे ? तुं जो पोते अंदरथी ज प्रसन्न थाय तो तारामां चिंतामणिना गुणोनो उदय एनी मेळे थशे, अने पछी तारो अनासक्त संकल्प तारी कई इच्छा परिपूर्ण नहि करे ?

८१. कोई ठेकाणे वीणावादन चाले छे, तो कोई ठेकाणे 'हाय रे हाय'ना रोदणां संभळाय छे; कोई ठेकाणे विद्वानोनो काव्यशास्त्रविनोद चालतो होय छे, तो कोई ठेकाणे पीधेला दारूडियाओनी लडवाड चालती होय छे; कोई ठेकाणे सुंदर ललनाओ देखाय छे, तो कोई ठेकाणे गलत्कोढथी पीडाती स्त्रीओ नजरे पडे छे. साचे ज आ संसार अमृतमय छे के विषमय तेनी कांई ज खबर पडती नथी.

८२. धनरूपी तुच्छ मृगजळना सागरनुं पाणी पीवा मथता हे जडबुद्धे पशो, तें करेलां केटलां केटलां कामो केटली बधी वार पडी भांग्यां नथी शुं ? तेम छतांय तारी उत्कट वासना हजी विराम पामती नथी; तेम ज तारुं हैयुं भांगी जई एना सेंकडो टुकडा थता नथी. ए उपरथी लागे छे के जरूर तारुं हृदय वज्र जेवा कठण पथ्थरनुं ज बनेलुं छे.

८३. आंखना थोडाक पलकारा जेटली ज जेनी आवरदा छे एवो देह ज्यां मळ्यो छे त्यां खबर नथी पडती के करवुं शुं. सुरनदी गंगाने किनारे तपाचरण करता रहीए, के सद्गुणमंडित पत्नीनी सोबतमां संस्कारी जीवन गाळीए? न्याय, सांख्य, वेदान्त आदि विविध शास्त्रोनुं अने दर्शनोनुं अध्ययन करीए, के जातजातना काव्यामृतना मधुर रसोनुं पान करीए? ('रात टूंकी अने वेष झाझा' जेवी स्थिति थई छे.)

८४. ऊंची आलेशान हवेली, सज्जनो वच्चे मान्यता पामेला दीकराओ, अगणित संपत्ति, कल्याणी प्रिय पत्नी, जुवानीनी अवस्था, ए बधुं जोईने, अज्ञानने लीधे मूढ बनेलो माणस आ विश्वने चिरकाळ टकनारुं माने छे अने खुशीथी संसाररूपी तुरंगमां प्रवेश करे छे; ज्यारे आ बधी वस्तुओ क्षणभंगुर छे एम जे जोई शके छे ते धन्य माणस आ बधी वस्तुओनो सदंतर त्याग करे छे.

८५. हे हरण, तुं, जे धनिकोना मोढा तरफ वारे वारे जोतुं नथी, तेमनी आगळ खोटा खोटा खुशामतना वचनो बोलतुं नथी, एमनां गर्वभर्यां वचनो सांभळतुं नथी अने आशानुं मार्युं एमनी पाछळ पाछळ दोडतुं नथी, भूख लागे त्यारे कुमळुं घास खाई ले छे अने सूवानो वखत थये सुखेथी सूई जाय छे; अने आम संतोषवाळुं जीवन गाळे छे; तो मने कहे के तें क्यां अने कयुं तप तप्युं के जेथी आटली सिद्धि तने प्राप्त थई?

अथवा

हे कुरंग हरण, तें कयुं तप सेव्युं छे, कये टेकाणे साधना साधी छे ए मने कहे. केम के तुं धनिकोना मोढा तरफ वारे वारे जोतुं नथी, तेमनी खोटी खोटी खुशामत करतुं नथी, तेमनां गर्वभर्यां वचनो सांभळतुं नथी अने भारे आशानुं मार्युं एमनी पाछळ पाछळ दोडतुं नथी, खावानो वखत थये तुं कुमळुं घास खाई ले छे अने ऊंघ आवतां ऊंघी जाय छे. भारे तप कर्या वगर आवुं संतोषवाळुं जीवन कोण गाळी शके?

८६. शुं गिरिकंदरोमांथी के पर्वतनी खीणोमांथी कंदमूळोनो सदंतर नाश थयो छे? अथवा शुं पर्वतो उपर वहेतां झरणांओ बधां सुकाई गयां? अथवा शुं रसभर्यां फळोथी लचेली तेम ज वल्कलो पूरां पाडी शके तेवी छालवाळी डाळीओ झाड परथी नाश पामी गई छे? के (अन्नवस्त्रनी आटली सहेली जोगवाई होवा छतां,) महा-

महेनते प्राप्त थयेला अल्पशा धनने लीधे ऊठेला अहंकाररूपी पवनथी नाचती भृकुटीवाळां अने साव विनयशून्य थयेलां एवां दुर्जनोनां मोढां तरफ लोको जोया करे छे!

८७. गंगाने किनारे, हिमालय पर्वतनी कोई शिला उपर पद्मासन वाळीने हुं बेठो होउं, अने ब्रह्मनुं ध्यान धरवानो अभ्यास करतां योगनिद्रानी समाधिमां लीन थयो होउं, अने ते स्थितिमां केवळ बाळ मृगलां ज नहि, पण घरडां हरणो पण शंका के बीक तद्दन त्यजी दईने मारी पासे आवे अने पोतानां शींगडां मारा शरीर साथे घसीने खंजवाळवानो आनंद पामे, एवा भाग्यना दिवसो मने लाधशे खरा?

८८. पर्वतनी गुफाओमां रहीने परम ज्योतिनुं जेओ ध्यान धरे छे, अने ते वखते निःशंकपणे खोळामां आवीने आराम करतां पक्षीओ जेमना आनंदाश्रुनुं पान करे छे, एवा पुण्यवान पुरुषोने धन्य छे! ज्यारे अमे तो मनमां ने मनमां मोटी मोटी हवेलीओ बांधीने तेमना प्राकारमां आवेली वावने किनारे क्रीडोद्यान कल्पीने एनी अंदर विलास करता पोतानी जिंदगी निरर्थक खुटाडीए छीए.

८९. [अद्वैतसिद्धिनी साधना करतां, कवि पोतानी कल्याण-कामना व्यक्त करे छे —]

भयानक सर्प हो के आह्लादकारी फूलोनो हार हो; कंपावनार शत्रु हो के हूंफ आपनार स्नेही हो; महामूलुं

रत्न हो के माटीनुं तुच्छ ढेफुं हो; कुसुमकोमळ शैय्या हो के अकुणा पथ्थरो पथरायेला हो; नजर सामे घासनां तणखलां हो के रमणीओनो समूह हो; मारी तो ए बधा प्रत्ये समदृष्टि ज रहो, अने एवी स्थितिमां कोई तपोवनमां कल्याणकारी 'शिव शिव शिव'नो जाप जपतां मारा दिवसो पसार थाओ.

[आ आखा विश्व साथे आत्मैक्यनो साक्षात्कार थवाथी जे समाधान मळे छे, ते प्राप्त थयेलो माणस पोतानी स्थिति वर्णवे छे. ए रीते पण आ श्लोकनो अर्थ करी शकाय.]

सर्प हो के पुष्पनो हार हो कंपावनारो प्रबळ शत्रु हो के हूंफ आपनारो मित्र हो, महामूलुं रत्न हो के माटीनुं तुच्छ ढेफुं हो, फूलनी शैय्या हो के पथराओ पाथरेला हो, सामे तृण हो के स्त्रीओनो समुदाय हो, ए बधा विषे मारी समदृष्टि ज रहे छे अने पछी कोई तपोवनमां निरिच्छ अने शान्त थईने 'शिव, शिव, शिव'नो कल्याणकारी शान्ति-जाप करतां मारा दिवसो पसार थाय छे.

९०. विषयो गमे तेटला लांबा वखत सुधी आपणी साथे रहे तोये अंते ते छोडीने जवाना ज. छतां माणस पोतानी मेळे एमने छांडी देतो नथी तो तेमां एने खास कंई लाभ थाय छे खरो? खरुं जोतां विषयो ज्यारे पोते ज पोतानी मरजी के नियम प्रमाणे माणसने छोडी जाय

छे त्यारे एने पार वगरनी हैया-बळतरा थाय छे. ज्यारे माणस पोते एमने त्यजी दे तो ए विषयो तेने अनंत शांतिसुख आपता जाय छे.

९१. माणसने मळतुं फळ तेना करेलां कर्मो पर आधार राखे छे अने तेनी बुद्धि पण पूर्वे करेलां कर्मने ज अनुसरे छे. बुद्धिनुं घडतर तो करेलां कर्मोनी टेवो उपर ज अवलंबे छे. आम मनुष्यजीवनमां कर्म ज सर्वोपरी होवाथी डाह्या माणसे सारी पेटे आगळ पाछळनो विचार करीने ज कामो करवां जोईए.

[अने बुद्धिनी केळवणीमां पण कर्मकौशल उपर ज वधारे भार मूकवो जोईए.]

अथवा

[कर्म एटले पूर्वजन्मे करेलुं कर्म एवो अर्थ करी 'कर्म' शब्द लगभग दैवना अर्थमां वापरीने केटलाक लोको आ श्लोकनो जुदो ज अर्थ करे छे अने बीजी लीटीमांनो 'तथापि' शब्द एमने अनुकूळ आवे छे. तेमनी दृष्टिए आ श्लोकनो अर्थ नीचे प्रमाणे थाय —]

माणसने मळतुं फळ तेनां पूर्वजन्मनां कर्मो पर आधार राखे छे. आजनी एनी बुद्धि पण पूर्वभवे करेला कर्मने ज अनुसरे छे. आम माणस बधी रीते परतंत्र छे. छतां डाह्या माणसे, ईश्वरे बुद्धि आपी छे एटला खातर

उत्तम रीते विचार करीने ज कर्मो करता रहेवुं जोईए; के जेथी आ नहि तो आगलो भव तो सुधरे.

[पहेलो ज अर्थ सारो जणाय छे. आ भवनो विचार करीने ज ज्यां चाली शकाय एम होय त्यां आगळना अने पाछळना भवोनी वात लई आववी अनावश्यक छे. स्वकर्म-सूत्र-ग्रथितो हि लोकः ।]

९२. आपणा भाग्यना विधाता तरीके आपणे देवोने नमस्कार करीए छीए, पण ते देवो पण मूआ विधिने वश रहीने ज नथी चालता शुं ? तेथी वंदन तो विधिने (दैवने) ज करवुं घटे. पण ए दैव पण स्वतंत्र क्यां छे ? ए कर्म प्रमाणे निश्चित, अमुक चोक्कस फळ ज आपनारुं होय छे. अने फळ तो कर्मने आधीन छे. तो पछी ए अमर देवोने लईने शुं करीशुं ? अने दैवने लईने पण शुं करीशुं ? जेनी आगळ विधि-विधातानुं पण कशुं चालतुं नथी, ते कर्मने ज अमारुं वंदन हजो.

९३. जे देवाधिदेव कर्मे प्रत्यक्ष ब्रह्मदेवने कुंभारनी जेम ब्रह्मांडरूपी घडानी अंदर अनेकविध सृष्टि उत्पन्न करवाना काम उपर नीम्यो, सर्वव्यापी विष्णुने पण दशावतार लेवाना महासंकटमां धकेल्यो, अने शंकर रुद्रने हाथमां खोपरी आपी दई भिक्षा माटे रखडतो कर्यो, अने जेना नियमनने परिणामे सूर्य आकाशमां अखंड भम्या करे छे, ते सर्व-समर्थ कर्मने ज अमारा नमस्कार हजो.

९४. नीच लोकोनी आराधना करतां करतां, एमना अपशब्दो जेमतेम करीने सहन कर्या; आंखमां आवतां आंसुने अंदर ने अंदर रोकीने शून्य मनथी तेमने रीझववा हसी बताव्युं; मननी बधी लागणीओ दबावी दीधी; अने जेमनी बुद्धि बहेर मारी ने अवळी थई छे एवा लोको आगळ पण हाथ जोडया; हवे. हे नफ्फट, विफळ आशे ! हजीये तुं मने बीजे क्यां क्यां नचाववा मागे छे ?

९५. [स्वाभिमानी माणस पण गृहस्थाश्रमनी विटंबणाओथी जेर थईने भिक्षानां वचनो मोढामांथी काढवा तैयार थाय छे ए बीनाने ध्यानमां राखीने कवि कहे छे —]

भूखथी अकळातां अने वीलुं मोढुं करीने रोतां ककळतां छोकरांओ जेनां फाटयां तूटयां वस्त्रोने खेंचतां होय छे अने तेमने शान्त करवानो कशो ज उपाय हाथमां न होवाथी जे लाचार थई बेठी छे, एवी बिचारी दयामणी गृहिणी नजर आगळ न होत तो कयो स्वाभिमानी माणस, पोतानी याचना विफळ जशे ए भयने कारणे गद्‌गद् थयेली वाणीए, तूटता अने खरी पडता अक्षरे, पोताना बळया पेटने माटे कोईनी आगळ ‘ मने कांईक आपो ’ एम कहेवा तैयार थात ?

९६. अमे घणुं खम्युं, पण ते क्षमाने लीधे नहि; गृहस्थाश्रमनां सुखोनो त्याग कर्यो, पण ते संतोष समाधानने

कारणे नहि; असह्य एवां टाढ, तडको, पवन आदि सहन कर्यां, पण ते केवळ क्लेश मानीने, तपाचरण तरीके नहि; प्राणोनुं नियमन करीने, एकाग्र चित्ते दिनरात ध्यान धर्युं; पण ते धननुं, भगवान शंकरना चरणनुं नहि; आम जे जे कर्मो मुनिओ करे छे ते बधां अमे कर्यां पण ते ते फळथी मात्र अमे वंचित ज रह्या.

९७. ब्रह्मज्ञानने लीधे जेमना मनमां विवेक जाग्यो छे, अने तेथी जेमनी बुद्धि निर्मळ थई छे तेओ केटलुं बधुं विकट काम करे छे, के प्रत्यक्ष भोगवाता वैभवने, तद्दन निःस्पृह थई, सदंतर छोडी दे छे. ज्यारे अमे जे संपत्ति भूतकाळमां अमने मळी नथी, वर्तमानकाळमां जे अमारी पासे नथी, अने भविष्यकाळमां मळशे ज एवी जेने विषे चोक्कस खातरी नथी अने जेने फक्त वासनामां ज अमे पकडी राखी छे, एवी काल्पनिक संपत्तिनो मानसिक त्याग करवा पण समर्थ नथी.

९८. आ विशाळ विश्वमां आश्चर्य उपजावे एवी जे अमर्याद वस्तुओ छे, तमांए वराह अने राहु ए बे ज चमत्कारना विषय तरीके सहुथी चढी जाय छे. कारण के एके (वराहे) डूबेली पृथ्वीने पोताना दांतनी अणी उपर उठावी लीधी, ज्यारे बीजो (राहु), केवळ पोतानुं माथुं ज बाकी रहेलुं होवा छतां, सूर्य जेवा तेजस्वी

शत्रुने गळी जाय छे, अने पछो उदारताथी एने छोडी पण दे छे.

९९. हे चित्त, तें न तो पाताळमांथी बळी राजाने छोडाव्यो, न दुनियामांथी मृत्युनो क्षय कर्या. चंद्र उपर देखाई आवतो मेलो डाघो तें भूस्यो नथी अने लोकोना व्याधिओनो पण समूळ उच्छेद तें कर्यो नथी. आ पृथ्वीने जरा ऊंचकीने, बिचारा शेषना माथा उपरनो भार पण क्षणवार हळवो कर्यो नथी. त्यारे सत्पुरुषोमां पोतानी गणना होवानुं वृथा अभिमान धारण करतां तने शरम नथी आवती ?

[आ श्लोकनी छेल्ली लीटी जरा अटपटी छे. छंदमां 'न' शब्द न बेठो एटले छोडी दीधो लागे छे. 'अभिमान' अने 'गणना'ना स्थाननो पण गोटाळो थयो लागे छे.]

१००. ते काचबो ज खरेखर जन्म्यो कहेवाय के जेणे आ विशाळ पृथ्वीनो भार उंचकवा पोतानी पीठ अर्पण करी. ते ज प्रमाणे ध्रुवनो जन्म पण धन्य खरो के जेने आधारे ताराओनुं आखुं ज्योतिर्मंडळ नियम प्रमाणे फर्या करे छे.

हवे ध्रुवनी जेम उपर आकाशमां के काचबानी जेम नीचे पाताळमां, जेओ पारकानुं हित करी शकता नथी तेवां बाकीनां बधां प्राणीओ नकामी पांख फूटेलां, उमराना फळनां अंदरनां मगतरां जेवां केवळ मरी जवा माटे ज

जन्म ले छे. तेमने हाथे कोईनुं ऐहिक के पारलौकिक कल्याण थतुं नथी.

१०१. [पोतानी मर्यादा न छोडनार सागर अने पोताने स्थाने स्थिर रहेनार कुलपर्वतो बन्ने प्रलयकाळ आवे त्यारे चळे ज छे. पण महात्माओ आवी क्षुद्रता बतावता नथी. तेओ तो जेम संकट वधारे तेम वधारे ज अडग थवाना एम समजावतां कवि कहे छे —]

हे जडमते, विपद्‌काळे महात्माओनो धैर्यनाश थयेलो जोवा तुं इच्छतो होय तो ए खोटो प्रयास तुं छोडी दे, आ महात्माओ कांई तमारा क्षुद्र कुलपर्वत पण नथी अने पामर सागर पण नथी के जेओ प्रलयकाळ आवे के तरत पोतानो स्वधर्मकर्मनो नियम पण उलटावी दे छे.

१०२. भिन्न भिन्न शास्त्रोना अर्थनी विचारणा करवानी जेनी चंचळता शमी गई छे, अनेकानेक रसयुक्त काव्योनो आस्वाद लेवानुं जेनुं कुतूहल ओसरी गयुं छे, न्याय अने तर्कना अध्ययनने लीधे उठती जेनी अनेक शंकाओ अने विकल्पोना विस्तारनो निःशेषपणे निरास थयो छे, एवुं मारुं मन हवे भगवान शंकरने शरण जवाने ज झंखे छे.

१०३. कोमळ करुणाथी भराई गयेला हृदयवाळा अमे, सर्वस्वनुं दान आपीने, कोई पवित्र तपोवनमां, शरदृतुना

पूर्ण चंद्रनी चांदनीथी मनोहर थयेली रात्रीओ, आ संसारमां विधिनी घटनाओ केवां विषम परिणामो उपजावे छे तेनुं स्मरण करतां, अने भगवान शंकरना चरणमां ज चित्तनुं शरण शोधतां, पसार करीशुं.

१०४. वेद, स्मृतिओ, पुराणपठन, अति विस्तारवाळां शास्त्रो, तेम ज – जेने जोरे स्वर्ग नामथी ओळखाता एक गामडानी एकाद झूंपडीमां निवास करवानुं मळे एटलुं ज जेनुं फळ छे तेवा - यज्ञयागादि कर्मकांडना विस्तारथी शुं वळवानुं हतुं ? भवबंधनोनी दुःखदायी जाळने बाळी नांखनार अग्नि जेवुं, अने स्वात्मानंदनी पदवीमां प्रवेश करावनार एक साधनने छोडी दईए तो बाकी बधा वाणियावेडा छे.

१०५. [वर्णाश्रमनां चिन्हो धारण नहीं करेलां होवाथी, अने अलिप्त भावे पोतानी मस्तीमां चालतो देखावाथी, जेने विषे लोकोना मनमां कुतूहल जाग्युं छे एवा योगीओनी अनासक्त शान्ति विषे कवि लखे छे —]

आ चाण्डाल छे, के ब्राह्मण छे ? शूद्र छे के तपस्वी छे ? सारासार तत्त्वोनुं पृथक्करण करवामां कुशल एवो कोई योगीश्वर तो आ नहीं होय ? इत्यादि शंकाओ मनमां उठवाथी लोको जेने विषे छूटथी जातजातनी वातो करे छे, एवा योगीओ कशा हर्ष शोक वगर पोताने रस्ते चाल्या जाय छे.

१०६. कामविकारना नेत्ररोगनी असरने लीधे ज्यारे अमारामां अज्ञान अने लंपटता हतां त्यारे आखुं जगत नारीमय छे एम अमारी आंखोने लागतुं. पण हवे ज्यारे सार अने असार वच्चेनो भेद बतावतुं विवेकरूपी अंजन अमे आंज्युं, त्यारे समत्वने पामेली अमारी दृष्टि आ समस्त त्रैलोक्यने ब्रह्ममय लेखे छे.

१०७. आ अनेक प्रकारना भोगो स्वभावे ज क्षण-जीवी छे अने जिंदगी तो आवा क्षणभंगुर भोगोनी ज बनेली होय छे. त्यारे, हे लोको, तमे शा प्रयोजनथी एमनी पाछळ अटवाया करो छो? बस करो आ बधी धांधल.

अने जो अमारी वात मानवा जेवी लागे तो आशानी सेंकडो जाळनां बन्धनो हठावतां हठावतां प्रसन्ननिर्मळ बनेला मनने स्थिर करो पोताने स्थाने. ए स्थान तो कामनाओनो नाश थवाथी ज हाथमां आवी शके छे.

१०८. हे माता पृथ्वी, हे तात वायु, हे मित्र तेज, हे बान्धव जळ अने हे भाई आकाश, तमने बधांने हाथ जोडीने आ छेल्लो नमस्कार करुं छुं. तमारा सत्संगने कारणे जे कांई सत्कर्मनो उदय थयो, तेमांथी प्राप्त थता निर्मळ ज्ञानने लीधे तमाम मोहनुं जोर दूर थयुं छे, अने हवे हुं परब्रह्ममां कायमने माटे लीन थाउं छुं.

(हवे पाछा आववापणुं अने तमारी वच्चे रहेवापणुं रहेतुं नथी.)

प्रकीर्ण श्लोको

१०९. पहाडनी कोई शिलाने ज जेमणे पोतानी शय्या बनावी छे, गिरिगुहारूपी घरथी जेमने संतोष छे, झाडोनी छाल ए ज जेमने माटे संपूर्ण वस्त्र छे, मृगलां अने पक्षीओ जेमने माटे पूरता मित्रो छे, झाडनां ताजां रसदार फळोथी ज जेमनुं गुजरान चाले छे, झरणानुं मधुर पाणी ज जेओ उचित पीणुं गणे छे अने जेमनो मनोविनोद विद्यारूपी युवती साथे ज चाले छे, एवा लोको मारे मन तो परमेश्वर (बादशाह) छे; केमके एवा लोको लोभमां फसाईने, सेवक बनीने कोईनी आगळ माथुं नमावता नथी.

११०. आ दुनियादारीनी जिंदगीथी हुं तो कशुं कुशळ जोतो नथी. आमां करेलां शुभ कर्मोना फळनो विचार करुं छुं त्यारे पण मने तो भय ज ऊपजे छे. केमके लांबा वखतथी सेवेला विषयोने पुण्यना मोटा प्रवाहनुं सिंचन मळे के तेओ एवा तो मोटा थई जाय छे के विषयोने सेवनारने अंते संकटमां ज नाखे छे.

१११. रोज ने रोज सूरजना आथमवाथी अने ऊगवाथी आवरदा घटती ज जाय छे, अने छतां अनेक जातनां कार्योना भारने लीधे बोजारूप थयेला व्यवसायोमां

वखत तो जाण्यामां पण नथी आवतो. तेम ज जगतमां जन्म, जरा, विपत्ति अने मरण रोज ने रोज जोया छतां मनमां त्रास ऊपजतो नथी.

खरेखर, प्रमादरूपी मोहमयी मदिरानुं पान करीने जगत उन्मत्त बन्युं छे.

११२. [दुनियाना अनेक कविओए मनुष्यजीवनने नाटक साथे सरखाव्युं छे. ते ज प्रमाणे भर्तृहरि पण संसारने रंगभूमि कल्पी माणस एमां नटनी पेठे केवी केवी भूमिका धारण करे छे ए वर्णवे छे —]

घडी माटे बाळक बन्या पछी बीजी घडी माटे ए विलासक्रीडामां चतुर एवो युवान बने छे. घडी माटे धनशून्य गरीब बने छे तो बीजी घडी माटे ए वैभवने शिखरे पहोंचे छे. आम नटनी पेठे नाटक भजवतो भजवतो घरडो थई, अन्ते बधां गात्रो जीर्ण थयां छे अने मोढा उपर करचलीओ छवाई छे एवा वेशमां माणस यमपुरी नामना नाटकना पडदा पाछळ अलोप थई जाय छे.

११३. हे प्रिय मित्र, कोई कसायेलो कुंभार मजबूत हाथे माटीनो लोचो बनावे तेम, दुष्ट विधि आपणा मननो लोचो बनावी तेने चिताना चाक पर चडावे छे अने विपत्तिरूपी दण्डाना उपराउपरी आघातोनो परिचय करावी चक्कर चक्कर फेरवे छे. खबर नथी पडती के आमांथी केवो घाट घडवानी एनी दानत छे.

११४. माणसनी प्रतिष्ठा करमाई जाय, संपत्ति घटी जाय, याचको आशाए आवीने खाली हाथे पाछा जवा मांडे, सगांवहालांओनी संख्या ओसरी जाय, आश्रितो त्याग करी जता रहे अने जुवानी पण धीमे धीमे नाश पामी जाय, एटले डाह्या माणस माटे ए ज उचित गणाय के एणे जाह्नवीना पाणीथी पुनित थयेला खडकोवाळा पर्वतश्रेष्ठ हिमालयमां जईने कोई खीणनी बाजुमां, एकांत सुंदर गुफामां के लताकुंजमां वासो करी लेवो.

११५. पूरवी मुश्केल एवी आ पेटनी खाई, इष्ट एवां मानआबरूनी गांठने ढीली करवामां कुशळ छे; श्रेष्ठ सद्‌गुणोना समूहरूपी पद्मोने संकोचावनारी जाणे पूनमनी चांदनी छे; अथवा लज्जारूपी वेलाने जाहोजलाली कापी नांखनारी कुहाडी छे. ए खाई माणसने नचावी नचावी केवो फजेत करे छे!

११६. [जेवुं पात्र तेवुं परिणाम, ए सिद्धांत चरितार्थ करतां कवि कहे छे —]

जे ज्ञान सज्जनोने माटे अभिमान अने मद आदि दुर्गुणोनुं नाशक होय छे, ए ज केटलाक लोकोने (दुर्जनोने) माटे मद अने अभिमानने पोषक बने छे.

एकांतनुं स्थान संयमी लोकोने माटे मुक्तिनुं साधन गणाय छे ज्यारे ए ज जग्या कामविह्वल लोकोने माटे विकारोने अत्यंत उत्तेजित करनारी नीवडे छे.

११७. हाथी के भूंड जेवा जबरदस्त प्राणीओनुं मांस आरोगनार बलवान सिंह वरसमां एकाद वार ज संग करे छे. ज्यारे कठण मरडिया खाईने जीवनारुं कबूतर रोज ने रोज कामासक्त थाय छे; कहो, आनुं कारण शुं हशे ?

दूबळाने हवस वधारे !

११८. मुकाईने जे हाडपिंजर थयो छे, एक आंख जवाथी जे काणो बन्यो छे, पगे जे लंगडो छे, जेना कान गळी गया छे, जेने पूंछडी रही नथी, व्रणोने कारणे जे परुथी खरडायेलो छे, जीवडाओनां सेंकडो गूंचळांथी जेनुं शरीर खदबदे छे, भूखथी जे लेवाई गयो छे, अने जेना गळामां हांडलीनो कांठलो भरायो छे, एवो घरडो कूतरो पण कूतरीनी पाछळ पाछळ फर्या ज करे छे.

अरेरे ! कामदेव मरेलाने पण मार्या वगर रहेतो नथी.

११९. रमणीनां कटाक्षरूपी बाण जेने घायल करतां नथी, क्रोधाग्निनो ताप जेना हैयाने बाळतो नथी, अने जुदा जुदा विषयो जेने पोताना लोभपाशथी खेंची शकता नथी, एवो बुद्धिमान धीर पुरुष आ आखा त्रैलोक्यने जीती जाय छे.

(काम, क्रोध, लोभ, ए त्रितयने जे जीते ते त्रिलोकीने जीते)

सूक्तिसुधा

पृ. ५६. लोकहृदयने जीते एवी कविता रचवानी शक्ति होय तो पछी राजसत्ता भोगववानी जरूर शी ?

¶ जो विनय के लाजलज्जा होय तो आभूषण वगर शुं नडवानुं हतुं ?

¶ चाडी खावानी एक हलकाई होय तो बीजां पापोनी शी जरूर ?

¶ जो पासे दुर्जनो होय तो शुं सर्पो पण जोईए खरा ?

¶ माणसमां जो क्षमा होय तो आत्मरक्षण माटे कवच के बख्तरनी शी जरूर ?

¶ मन साफ होय तो तीर्थसेवननी गरज शी ?

¶ अपकीर्ति फेलाया पछी मृत्युनुं शुं प्रयोजन ? अपकीर्ति ज माणस माटे मोत समान छे.

¶ दायादो (न्यातीला) होय तो पछी दावानळनी शी जरूर ?

¶ सत्य साध्युं होय तो तप साधवानी शी जरूर ? सत्य ज परम तप छे.

¶ शरीर धारण करीने चार युग जेटली लांबी आवरदा भोगवी तोये तेथी शुं वळ्युं ?

पृ. ८७. एवी कई वस्तु छे के जेने बीजी कोई वस्तुनो उपद्रव नथी ?

¶ घर बळी ऊठये कूवो खोदवा मांडवुं ए वळी प्रवृत्ति केवी ?

¶ निपुणता कोने कहेवी ? सदाचारना आदर्शो प्रत्येनो अनुराग ए ज निपुणता छे.

¶ हानि कई कहेवाय ? वखत वेडफी नाखवो के तक खोई बेसवुं ए ज हानि छे.

¶ राजत्व शामां रहेलुं छे ? पोताना हुकमनुं पालन कराववाना सामर्थ्यमां.

¶ शूर कोण ? पोतानी इन्द्रियो काबूमां राखी शकतो होय तेवो माणस.

¶ सेवाशुश्रूषा करो विद्वानोनी.

¶ गर्वने त्यजी दो.

¶ सन्मान्य लोकोनी आमन्या राखो.

¶ दीन दुःखियाओ उपर दया करो.

¶ पोताना गुणोने उघाडा पाडो मा; तेनां बणगां फूंको मा.

पृ. ५८. पोताना द्वेषीओनां पण मन राखो.

¶ पापकर्ममां प्रीति राखीश मा.

¶ मोहने खंखेरी काढो.

¶ चित्तशान्ति प्राप्त करो – चित्तने स्थिर राखो.

¶ हे चित्त, हवे तो तुं प्रसन्न था !

¶ विद्या ए ज परम दैवत छे.

¶ परदेशमां के प्रवासमां होईए त्यारे विद्या ज मित्र – स्वजननी गरज सारे छे.

¶ मूर्खाओनी शोभा एमना मौनमां ज छे.

मौन ए ज मूर्खाओनो खास अलंकार छे.

¶ कविओ तो वित्त विना पण वैभवशाळी होय छे.

¶ मूर्खने माटे कोई ओसड नथी.

¶ विद्याविहोणो माणस तो नर्यो पशु ज छे.

पृ. ५९. 'कोईनुं भलुं करवुं अने छतां एनी कशी वात न करवी' ए माणसनी खानदानी बतावे छे.

¶ उद्यम जेवो कोई हितैषी नथी.

¶ शील — चारित्र्य — ए ज माणसनुं मोटामां मोटुं आभूषण छे.

¶ वैभवनी शोभा सौजन्यमां छे.

¶ वाणीनो संयम ए शूरतानुं आभूषण छे.

¶ धैर्यशील पुरुषो पोते निश्चित करेली वस्तु प्राप्त कर्या विना थंभी जता नथी.

¶ धैर्यशील डाह्या माणसो न्यायना मार्गथी एक डगलुं पण आडे जता नथी.

¶ जेने जेने जुए तेनी तेनी आगळ दीन वचन काढीश नहि.

¶ माणस विवेकथी चळयो के तेनुं अनेक रीते पतन थवानुं ज.

¶ दुर्बळ लोको नथी विषयोनो उपभोग लई शकता के नथी तेमनो सदंतर त्याग करी शकता.

¶ गाफेल के दुष्ट मंत्री राखीने राजा नाश पामे छे.

पृ. ६०. वाणीनी सच्चाई ए ज मोटामां मोटुं आभूषण छे.

¶ तेजस्वीपणुं माणसनी उमर उपर आधार नथी राखतुं.

¶ बळवान काळ बधानो संहार करे छे, कोईने पण छोडतो नथी.

¶ ते सर्वसंहारक काळने नमस्कार हजो.

¶ ससलानुं शींगडुं कोई कोईने आपी शकतुं नथी. केमके तेनी मुद्दल हस्ती ज होती नथी.

¶ સજ્જનો સમૃદ્ધિ આવતાં પણ ઉદ્ધત બનતા નથી.

¶ સંકટમાં કે સુખમાં જે સરખી રીતે આપણી સાથે વર્તે છે તે જ મિત્ર કહેવાય.

¶ હૃદયનો ભાવ નિર્મળ રાખવો.

¶ સંકટ સમયે માથું ઊંચું રાખવું.

¶ દુર્જનોની ઉદ્ધતાઈ સહન કરવાનું મને મન જ થતું નથી.

¶ સજ્જનોના આચરણની ભવ્યતા ચકિત કરે એવી હોય છે.

પૃ. ૬૧. હે માનવીઓ, કહો તો ખરા, આ સંસારમાં તમને જરા સરખું પણ સુખ જડ્યું છે?

¶ ભોગ સાથે રોગનો ભય રહેલો જ છે.

¶ ગુણીજનોને અદેખા દુષ્ટોથી ડરવાપણું રહે છે.

¶ સંપત્તિને રાજાનો ભય હોય છે.

¶ શાસ્ત્રની બાબતમાં વાદનો (પક્ષાપક્ષીનો) ભય હોય છે.

¶ જન્મ તો મરણ સુધી જ રાહ્યા છે.

¶ સમૃદ્ધિ કે સંપત્તિને માથે નશ્વરતાની આપત્તિ હોય જ છે.

¶ કેવું વિચિત્ર, કે મોહને લીધે અમને શરમ પણ નથી આવતી.

¶ आ भयभरी दुनियामां केवळ वैराग्यने ज कशानो भय नथी.

¶ आपणी तृष्णा नथी घसाई गई, पण आपणे ज घसाई गया छीए.

¶ जेनी तृष्णा विशाळ छे ते ज दरिद्री गणावो जोईए.

पृ. ६२. अमे पण पूरेपूरा निःस्पृह छीए.

¶ धरतीनी पथारी सांकडी न होय.

¶ संसार नश्वर जाणीने सन्तोए वननो आश्रय लीधो.

¶ खरेखर पृथिवी ज सुंदर पथारी छे.

¶ आपणा बाहु पूरतुं उशीकुं छे.

¶ एकलो योगी ज स्वस्थ चित्ते रहे छे.

¶ जिंदगी तो मोजाना जेवी चंचळ छे.

¶ बधा पदार्थो चंचळ के नश्वर छे; केवळ एक धर्म ज निश्चल छे.

¶ मनने फरी फरी समजाववुं के आ विश्व तो केवळ घासनो ढगलो ज छे.

¶ जल-तरंगना जेवी पोतानी अस्थिर अवस्थानो त्याग कर.

¶ परब्रह्ममां लीन थाउं छुं.

¶ मारी वचनचातुरी मारी अंदर ज सुकाई गई छे.

पृ. ६८. टेकीलो माणस पोतानुं धारेलुं काम पार पाडतां सुख आवे के दुःख आवे तेनी परवा करतो नथी.

¶ सज्जनो पोतानी मेळे ज पारकाना हित माटे उत्साहपूर्वक प्रयास करे छे.

¶ सेवाधर्म तो भलभला योगीओ पण न साधी शके एवो गहन – विषम होय छे.

¶ जेमणे दीन थईने कोईनी आगळ हाथ जोडी माथुं नमाव्युं नथी तेओ बादशाहो छे एम हुं मानुं छुं.

¶ आ संसार अमृतमय छे के विषमय ते कळी शकातुं नथी.

¶ जे चीज केवळ रोगनुं निवारण छे ते जाणे सुख ज छे एवो अवळो ख्याल माणस बांधे छे!

¶ प्रमादरूपी मदिरा पीने आखुं जगत जाणे उन्मत्त बन्युं छे!

¶ नीच माणसनी दृष्टि जेना पर पडी तेवो कयो माणस सुखी रही शकवानो हतो?

¶ क्षुद्र प्राणी पोते संघरेली के अपनावेली वस्तु केटली तुच्छ छे एनो ख्याल करी ज शकतो नथी.

¶ माणस विवेकभ्रष्ट थयो के तेनुं सेंकडो रीते पतन थयुं ज जाणवुं.

¶ घुवडने दिवसे देखातुं नथी तो तेमां सूर्यनो शो दोष ?

पृ. ६६. मोंघामूलां रत्नोनी किंमत ओछी आंकनार नादान रत्नपारखुओ ज निंदाने पात्र बने छे, नहि के रत्नो.

¶ वसंतऋतु बेसतां छतां केरडाना झाडने एके पांदडुं न आवे तो तेमां वसंतनो कंई दोष खरो ?

¶ ज्यां लक्ष्मी होय त्यां आपत्तिओनो जाणे राफडो फाटयो होय तेम ते आव्या ज करवानी.

¶ प्राणीओनां सोगटां बनावीने आ जगतना पट उपर भगवान काळ भगवती काळी जोडे सारीपाटनी रमत रमे छे.

¶ निरंकुश विधिए एवी कई वस्तु सरजी छे के जे चिरकाळ टकी रही छे ?

¶ कयो टेकीलो माणस पोताना बळया पेटने काजे 'मने कंईक आपो' एवा शब्दो मोढामांथी काढे ?

¶ गमे तेवा संकटमां पडया होय तोपण माणसो पोतानी योग्यताने अनुरूप एवां ज फळ इच्छे छे.

¶ मानीओनो अग्रेसर एवो सिंह, क्षीण थयो होय तोये, अन्य जनावरोनी पेठे कदी सूकुं घास खाशे खरो ?

¶ पोताने आहुति खवडावनार होताने पण अग्नि अडतावेंत बाळवानो ज.

¶ गुणवानोनो एवो कयो गुण छे के जे दुर्जनोए अवळी रीते वर्णवी वखोडयो नथी ?

¶ कोई पण वस्तु महत्त्वनी गणाय छे के नजीवी, ते माणसनी अवस्था, गरज के प्रसंग उपर आधार राखे छे.

पृ. ६७. संस्कारसंपन्न वाणी माणसे केळवेली होय तो ते ज एकली तेने सारी रीते शोभावे छे.

¶ जेम कमळना तंतुओ हाथीओने रोकी शकता नथी, तेम तणखला जेवी तुच्छ धनलक्ष्मी पंडितोने बंधनकारक थई शकती नथी.

¶ महात्माओना चारित्र्यनी महत्ताने मर्यादा ज नथी होती.

¶ कल्पनो अंत आवतां पण विद्या नामनुं अन्तर्धन नाश पामतुं नथी.

¶ अग्निने ऊंधो वाळ्यो होय तोपण एनी ज्वाळा कदी नीचे जती नथी; ते तो उपर ज जवानी.

•

पृ. ६८. परार्थने ज जे स्वार्थ माने छे एवो पुरुष ज सज्जनोनो अग्रेसर होई शके छे.

¶ आ कर्मभूमिमां आव्या छतां जे माणस तपाचरण करतो नथी ते खरेखर अभागियो छे.

¶ जो अमने जोईने तु मोढुं फरवतो होय तो जाणजे के अमे पण पूरेपूरा निःस्पृह छीए—अमने तारी कशी पडी नथी.

¶ हे मित्र, आ दुनियामां डाह्या माणस माटे तप सिवाय बीजी श्रेयस्कर (कल्याणकारक) वस्तु नथी.

¶ माणसनी आ दुनियामां बधी ज वस्तुओने माथे भय झझूमे छे. केवळ वैराग्य ज एक एवी वस्तु छे के जेने कशानो डर नथी.

¶ वैराग्य के उपशान्तिमां जेमनुं चित्त चोंटेलुं छे तेवाओने माटे घर के वन सरखुं ज छे.

¶ ज्ञाननो दीप एवो शंकर योगीओना अंतःकरणरूप घरमां प्रकाशमान विराजे छे.

¶ जे माणस साहित्य-संगीत-के कळा-विहोणो छे, तेने शींगडा–पूंछडा विनानो साक्षात पशु ज जाणवो.

❡ फक्त सज्जनोनी प्रतिभा ज अमर्याद होई सर्वत्र विजय पामे छे.

❡ सज्जनोनी बाबतमां ज्ञान तेमना अहंकार अने मिथ्याभिमान आदि दोषोनुं विनाशक बने छे; ज्यारे केटलाकनी बाबतमां ते ज ज्ञान ते दुर्गुणो अने मिथ्या-भिमान उत्पन्न करनारुं कारण बने छे.

❡ देवो अने पितरो एनुं अमृत पी जवाथी जेनी एकाद ज कला बाकी छे एवो चन्द्र, शरद ऋतुमां जेना पट सुकाई गया छे एवी नदीओ, तेम ज मागवा आवनार याचकोने दान करवाथी जेमनुं धन खलास थयुं छे एवा माणसो पोतानी कृशताने (क्षीणताने) लीधे ज शोभे छे.

❡ जुओने, के कूवामांथी होय के सागरमांथी, घडो तो सरखुं ज पाणी लई शके छे.

❡ माटे बापु, धीरज राख, पैसादार लोको आगळ वृथा पामरता बतावीश नहि.

पृ. ६९. बधानी आशाओ पूर्ण करनार – बधी दिशाओ भरी देनार – मेघ रोज ने रोज वरसे तोये टेकीला चातकना मोढामां तो पाणीनां बे त्रण सूक्ष्म टीपां ज पडवानां.

¶ जेना आस्वादथी त्रैलोक्यनुं राज्य वगेरे विषयो पण रसहीन बने छे तेवो एक ज एवो महान अवर्णनीय भोग छे के जे शाश्वत टकनारो छे.

¶ पाणीनां मोजां, परपोटा, वीजळीना झबकारा, प्रमदाओ, अग्निनी ज्वाळाओ, सर्पो तेम ज नदीना प्रवाहो— ए बधा विषे विश्वास केवो ?

¶ जेओ पोतानी इंद्रियो काबूमां राखे छे एवाओनी पीडानुं निवारण करवा माटे विद्वत्ता अगाउ वपराती; ते हवे वखत जतां विषयी जनोने भोगविलासनां जुदां जुदां साधनो मेळवी आपवामां वपराय छे !

¶ पोताना प्राण बचाववानो ज जेमने पडी छे एवा केटलाक (पामर) माणसो आवीने पोतानी आगळ शिर झुकावे एटलेथी माणसोने आटली घमंडनी गरमी शाथी आवती हशे ?

¶ जेनी तृष्णा विशाळ छे ते भले दरिद्री कहेवाओ, मनमां तृप्ति ऊपज्या पछी धनवान कोण अने दरिद्री कोण ?

सद्‌बोधशतकमां आवेलां वृत्तो

संस्कृत छंदःशास्त्रमां पद्यना के छन्दना बे प्रकार कह्या छे: १. वृत्त, २. जाति. वृत्तनुं बंधारण श्लोकना चरणमां आवता अक्षरोनी निश्चित संख्या तथा दरेक अक्षरना गुरुलघुत्वने धोरणे रचायेलुं होय छे; ज्यारे जातिनुं बंधारण दरेक चरणमां कुल केटली मात्रा होय ते उपर आधार राखे छे.

वृत्तमां आवता अक्षरोना गुरुलघुत्वनो क्रम दर्शाववानी सगवड माटे वृत्तना चरणना गण कल्पेला छे. दरेक गणमां त्रण त्रण अक्षर होय छे. एवा गण आठ छे. गणनुं बंधारण गुरुलघु अक्षर उपर आधार राखे छे. अक्षर 'एक स्वरनो' के 'स्वर साथे एक के वधारे व्यंजननो' बनेलो होय छे. लघु के गुरु अक्षर तेमां ह्रस्व के दीर्घ स्वर उपर आधार राखे छे.

अ, इ, उ, ऋ, ऌ एटला स्वरो ह्रस्व छे. बाकीना बधा स्वरो दीर्घ गणाय छे. कोई पण अक्षरनुं गुरुलघुत्व तेमां आवता स्वर उपर आधार राखे छे. ह्रस्व स्वरवाळो अक्षर लघु गणाय छे तेम ज दीर्घ स्वरवाळो अक्षर गुरु कहेवाय छे. पण जो कोई लघु अक्षर पछी अनुस्वार, विसर्ग, के जोडाक्षर आवे तो ते अक्षर सामान्यपणे गुरु बने

छे. श्लोकना चरणने अन्ते आवतो लघु अक्षर वृत्तनी आवश्यकता होय तो गुरु पण बनी शके छे.

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत् ।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा ॥

लघुगुरुनां चिह्नो द्वारा गणो नीचे मुजब बतावी शकाय. लघु माटे ⏑ चिह्न तथा गुरु माटे – चिह्न वपराय छे. एवी ज रीते लघु अक्षर बताववा माटे ल (⏑) अने गुरु अक्षर बताववा माटे ग (–) चिह्न वपराय छे.

य	⏑	–	–	भ	–	⏑	⏑
र	–	⏑	–	ज	⏑	–	⏑
त	–	–	⏑	स	⏑	⏑	–
म	–	–	–	ग	–		
न	⏑	⏑	⏑	ल	⏑		

दरेक गणमां लघु गुरु अक्षर कया क्रमे आवे छे ते सहेलाईथी याद राखी शकाय तेटला माटे नीचेनी कारिका उपयोगी थशे.

आदिमध्यावसानेषु **य-र-ता** यान्ति लाघवम् ।
भ-ज-सा गौरवं यान्ति **म-नौ** तु गुरुलाघवम् ॥

मात्राने हिसाबे ह्रस्व स्वरनी १ मात्रा, दीर्घनी २ मात्रा तथा प्लुतनी ३ के तेथी वधारे मात्रा गणाय छे.

चरणमां ज्यां सास लेवा थोभवा जेवुं होय छे ते स्थानने **यति** कहे छे. चरणमां केटला अक्षर पछी यति

આવે છે તે સંખ્યા પૌરાણિક નામોથી બતાવવાનો રિવાજ છે. જેમ કે :

ગુણ	=	૩	ગ્રહ	=	૯
અમ્બુધિ, વેદ	=	૪	રુદ્ર	=	૧૧
રસ	=	૬	સૂર્ય	=	૧૨
નગ, લોક, મુનિ, હય	=	૭	સૂર્યાશ્વ	=	૧૨.૭
વસુ, ભોગી	=	૮			

સદ્‌બોધશતકમાં આવેલાં વૃત્તોની રચનાની માહિતી નીચે આપવામાં આવી છે.

દરેક વૃત્તમાં અક્ષરોના ગણ કયા ક્રમમાં આવે છે તે બતાવી. પછી યતિ ક્યાં આવે છે તે કૌંસમાં આંકડા દ્વારા બતાવ્યું છે.

અનુષ્ટુપ–આ વૃત્તના દરેક ચરણમાં આઠ અક્ષર હોય છે. એની વ્યાખ્યા નીચે મુજબ છે:

> શ્લોકે ષષ્ઠં ગુરુ જ્ઞેયં; સર્વત્ર લઘુ પઞ્ચમમ્ ।
> દ્વિચતુઃપાદયોર્હ્રસ્વં સપ્તમં; દીર્ઘમન્યયોઃ ॥

શ્લોકના દરેક ચરણમાં છઠ્ઠો અક્ષર ગુરુ તથા પાંચમો અક્ષર લઘુ હોય છે; બીજા અને ચોથા ચરણનો સાતમો અક્ષર લઘુ તથા બાકીના એટલે કે પહેલા અને ત્રીજા ચરણનો સાતમો અક્ષર ગુરુ હોય છે. બાકીના અક્ષરો માટે કોઈ ખાસ નિયમ નથી.

अभ्यासीओ माटे अनुष्टुपनी नीचेनी विशेष व्याख्या उपयोगी थशे :

आद्यन्तवक्षरौ त्यक्त्वा गणयेद्वै षडक्षरान् ।
चरणे विषमे वर्ज्यौ नसौ भो प्रथमे गणे ॥
समे तु नसरा वर्ज्या गणे प्रथम एव ते
अनिवार्यः समे पादे द्वितीये जगणो गणे ।
विषमे तु जतौ वर्ज्यौ पादमध्ये न विश्रमः ॥

उपजाति—ना चरणमां ११–११ अक्षरो होय छे. इन्द्रवज्रा तथा उपेन्द्रवज्रा वृत्तोनुं मिश्रण थईने आ वृत्त बने छे.

स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौगः ५.६
उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।
अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ
पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ॥
त त ज ग ग । ज त ज ग ग
(५.६) (५.६)

शालिनी — ११ अक्षरी चरण छे.

मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।
म त त ग ग (४.७)

द्रुतविलंबित — १२ अक्षरी चरण छे.

द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
न भ भ र (४.८ अथवा ४.४.४)

वंशस्थ — १२ अक्षरी चरण छे.

जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ ।

ज त ज र (५.७)

वसन्ततिलका — १४ अक्षरी चरण छे.

उक्ता वसंततिलका तभजाजगौगः ।

त भ ज ज ग ग (८.६)

मालिनी — १५ अक्षरी चरण छे.

ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।

न न म य य (८.७)

पृथ्वी — १७ अक्षरी चरण छे.

जसौ जसयला वसु-ग्रह-यतिश्च पृथ्वी गुरुः ।

ज स ज स य ल ग (८.९)

मन्दाक्रान्ता — १७ अक्षरी चरण छे.

मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।

म भ न त त ग ग (४.६.७)

शिखरिणी — १७ अक्षरी चरण छे.

रसैरुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी ।

य म न स भ ल ग (६.११)

हरिणी — १७ अक्षरी चरण छे.

नसमरसलागः षड्वेदैर्हयैर्हरिणी मता ।

न स म र स ल ग (६.४.७)

शार्दूलविक्रीडित — १९ अक्षरी चरण छे.

सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।

म स ज स त त ग (१२.७)

स्रग्धरा — २१ अक्षरी चरण छे.

म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रि-मुनि-यति-युता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।

म र भ न य य य (७.७.७)

आर्या — आ मात्रावृत्त छे. एनुं बंधारण चरणनी कुल मात्राओ उपर आधार राखे छे. तेनी व्याख्या नीचे मुजब छे.

यस्याः पादे प्रथमे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश साऽऽर्या ॥

(१२.१८; १२.१५)

बीजी लीटी पहेली लीटी जेवी ज त्रीस मात्रानी लांबी होय तो ते मात्रावृत्तने आर्या न कहेतां **गीति** कहे छे.

श्लोकोनी सूचि